

ओ३म

सुखी गृहस्थ

(गृहस्थ को सुखी करने के उपाय)

प्रवचनकर्ता

स्वामी विवेकानन्द जी परिव्राजक

सम्पादक

डॉ. राधावल्लभ चौधरी

प्रकाशक



दर्शन योग महाविद्यालय

आर्यवन, रोजड़, पत्रा. सागपुर, ता. तलोद,

जि. साबरकांठा (गुजरात) 383307

दूरभाष : (02770) 287418, 287518,

चलभाष : 94094 15011, 94094 15017

Email : darshanyog@gmail.com

Website : www.darshanyog.org

Facebook/ Skype : darshanyog

Youtube : darshanyog2009

पुस्तक	—	सुखी गृहस्थ
प्रवचनकर्ता	—	स्वामी विवेकानन्द जी परिव्राजक
संपादक	—	डॉ. राधावल्लभ चौधरी
संपादन सहयोग	—	डॉ. रेखा चौधरी, सुरेन्द्र दुबे
टाइप व डिजाइन	—	अभिषेक खरे (गोल्डी), राजेश डागौर, अभिषेक अग्रवाल, मोहित ठाकुर (राजा)
प्रकाशन	—	जुलाई 2015
संस्करण	—	प्रथम
लागत मूल्य	—	75 रुपये मात्र

नोट — कोई भी व्यक्ति अथवा संस्था इस पुस्तक का स्वयं प्रकाशन कर सकती है। अतएव इच्छुक सज्जन कृपया पुस्तक की निःशुल्क साफ्ट कॉपी को प्राप्त करने के लिए विद्यालय से संपर्क करें।

प्राप्ति स्थान

अहमदाबाद : वैदिक संस्थान, **ओढ़व**—079—22972340, आर्यसमाज, **रायपुर दरवाजा बाहर**—079—25454373, आर्यसमाज, **सैजपुर बोधा**—079—22815216, आर्यसमाज, **थलतेज**—09825307630, **दिल्ली** : विजयकुमार गोविन्दराम हासानन्द, नई सड़क—011—23977216, आर्य प्रकाशन : **अजमेरी गेट**—9868244958, आर्य प्रतिनिधि सभा, **हनुमान रोड़**—011—23360150, **अजमेर** — ऋषि उद्यान : 0145—2632572, **राउरकेला** : श्रुति न्यास :— 9309214912 **आमसेना** — गुरुकुल आश्रम : 7873111213, **होशंगाबाद** —: गुरुकुल महाविद्यालय : 07574—275788, **गाँधीग्राम** — श्री चंद्रेश जी आर्य : 94274 58494, **निलंगा** — विजय वस्त्र भंडार : 94233 49409, **लोहारू** —: पतंजलि आरोग्य केन्द्र, आर्यसमाज: 97284 55044, **खेड़ा अफगान** — वैदिक संस्कृति उत्थान न्यास—08445044922, **भुजोड़ी (भुज)**—योगधाम—94272 35527, **मेरठ** — सत्यकाम इंटरनेशनल स्कूल — 09897064239, **परली वैजनाथ**—आर्य प्रतिनिधि सभा, महाराष्ट्र, **आर्य समाज मंदिर** — **पोरबंदर** : 9428703173, **राजकोट** — 0281—2231146, **भरूच** — 02642—2626435, **गांधीनगर** — 9924751191, **आणंद** — 9427858935, **जामनगर** — 0288—2550220, **भावनगर** — 0278—2571116, **सूरत** — 9328270373, **पिम्परी**—020—27410047, **नडियाद**—09825717494



दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं०)

The Delhi Arya Pratinidhi Sabha

१५-हनुमान् रोड, नई दिल्ली - ११०००१

क्रमांक : 2015-16/0290/दिल्ली सभा

दिनांक : 19 जुलाई, 2015

प्राक्कथन

इस पुस्तक में उन प्रश्नों का सही समाधान एक मित्र, विद्वान, गुरु और मार्गदर्शक की दृष्टि से किया गया है, जो एक आम गृहस्थ व्यक्ति के अन्तर्मन में अपने जीवन-साथी और बच्चों के सम्बन्ध में लगातार उठते रहते हैं, और जिनका उपयुक्त मार्गदर्शन वर्तमान परिस्थिति में प्रायः उपलब्ध नहीं होता। पहले संयुक्त परिवारों की परम्परा के चलते परिवार के बुजुर्ग अपने पोते-पोतियों को आदर्श रूप में पालन-पोषण करने के सम्बन्ध में तरह-तरह की सलाह अपने बच्चों को देते थे। आज संयुक्त परिवार की, गुरु-संन्यासियों को घर पर आमन्त्रित करने की हमारी गौरवशाली परम्परा खत्म सी हो गई है, और कई बार उपयुक्त मार्गदर्शक भी नहीं मिलते। वर्तमान में एकल परिवार के चलते बुजुर्गों के इन मूल्यवान अनुभवों को बांटा जाना काफी कम हो गया है। इन स्थितियों में, अपनी समस्याओं का निदान और गृहस्थ जीवन को सुख-शांतिपूर्वक व्यतीत करने के लिए मार्गदर्शन मिलना सम्भव नहीं हो पाता, लेकिन यह पुस्तक काफी हद तक इस अभाव की पूर्ति करती है। इस पुस्तक के सामने होने पर गृहस्थ व्यक्ति को बुजुर्गों के विचारों का पता चल जाता है जिससे उन्हें सही निर्णय लेने में आसानी होती है। फलस्वरूप, पति-पत्नी बच्चे आपस में सामंजस्य-संतुलन बना कर, अपने जीवन को अच्छी तरह सुख-शांतिपूर्वक बिताने में सफल हो सकते हैं। इस अति उत्तम कार्य के लिए मैं पूज्य स्वामी विवेकानन्द जी महाराज को बहुत-बहुत धन्यवाद देता हूँ, कि जो उन्होंने गृहस्थ लोगों की समस्याओं-आवश्यकताओं को समझकर अत्यन्त सरल-रोचक भाषा में पुस्तक का सृजन करने की महति कृपा की। अतः सभी गृहस्थजनों से मेरा अनुरोध है कि वे इस पुस्तक का परायण कर इससे लाभ उठाकर अपने गृहस्थ-जीवन को सफल-सुखद-सार्थक बनावें। साथ ही, विवाह आदि अवसरों पर इस मूल्यवान पुस्तक को नव-दम्पति को भेंट भी विशेष रूप से करें।

स्थान : नई दिल्ली

दि. : 19 जुलाई, 2015

विदुषामनुचर-

(विनय आर्य)

महामन्त्री, मो. 9958174441

अनुक्रमणिका

गृहस्थ जीवन को सुखी कैसे बनाएं?	1
“आप क्या बनोगे?”	1
“क्या इसका नाम यात्रा है?”	1
“भगवान ने चार विशेष सुविधाएं दीं”	1
पहली सुविधा है—बुद्धि।	2
दूसरी सुविधा है—बोलने के लिए—भाषा।	2
तीसरी सुविधा—कर्म करने के लिए दो हाथ	2
चौथी सुविधा है—कर्म करने की स्वतंत्रता	2
सबसे उत्तम प्राणी मनुष्य...	3
फलस्वरूप परिणाम शून्य सा है	4
आवश्यकता है, वेदों का अध्ययन करने की	4
वेद ऊँचे स्तर की सर्वश्रेष्ठ पुस्तकें	5
वेद में लिखा है, कैसे जिएं आदर्श जीवन	5
व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन को जानें	5
क्या है—वर्ण व्यवस्था?	6
जन्म से वर्ण का निर्धारण अनुचित	6
जीवन के चार हिस्से—चार आश्रम	7
जीवन का पहला भाग— ब्रह्मचर्य आश्रम	8
गुरुकुल का पुरातन आदर्श अत्युत्तम	8
गुरुकुल प्रणाली का अभाव चिंताजनक	9
ईश्वर से सलाह लेने में ही समझदारी	10
ईश्वर में स्वार्थ और अविद्या नहीं है	10
परोपकारी ईश्वर... जो कहेगा, ठीक कहेगा	11
बच्चों को सुधारने के लिए मानें, ईश्वर का सुझाव	11
समाज का क्या महत्व है। इसके बिना जीवन में क्या समस्या आती है?	11

सारे विश्व को वेदों के अनुसार आचरण करने के लिए जबरन यानि कि कानूनन बाध्य करना चाहिए?	12
वेद का अध्ययन आवश्यक :	12
क्यों जा रहे हैं गृहस्थ में :	13
केवल भौतिक सुख संपूर्ण नहीं :	15
गृहस्थ में जाना हो तो जाओ	21
पहले सुख, बाद में दुःख	22
आश्रम का आधार मेहनत	23
आनंद सिर्फ मोक्ष में मिलेगा	23
धीरे-धीरे सब समझ में आएगा	23
दुख नहीं, सुख चाहिए...	23
मोक्ष में मिलता है लगातार सुख	24
हमारे जीवन का अंतिम लक्ष्य क्या है, उसे कैसे हासिल करें?	24
मोक्ष में क्या होता है?	25
तीसरा चौथा आश्रम भूलना गलत	29
पति-पत्नी पूरा जीवन साथ रहें, क्या वेद में ऐसा भी कोई विधान है?	29
मानव की औसत आयु कम हो गई है, इसलिए इन आश्रमों की आयु उस हिसाब से कब से शुरू होती है। कुछ लोगों की तो संन्यास आश्रम की आयु तक मृत्यु भी हो जाती है, तो ऐसी स्थिति में क्या करें?	30
किन नियमों का पालन कर गृहस्थ को कुछ अच्छा बनाया जा सकता है?	31
अपना 24 घंटे का टाइम-टेबल बनाएं...	31
समय का प्रबंधन दूर करेगा, समय न होने की समस्या.....	32
मैं एक किसान हूँ, मैं अपना टाइम-टेबल कैसे बनाऊँ? कभी मुझे समय बहुत अधिक मिलता है, और कभी काम बहुत रहता है। मेरी समस्या यह है कि मुझे संध्या-उपासना के लिए समय ही नहीं मिल पाता है?	33
ध्यान से छू-मंतर हो जाएगा टेंशन.....	33
जीवन में पैसे का महत्व कितना है?	34

धन के बारे में थोड़ा और विस्तार से जानकारी दें?	35
पैसा आवश्यकता से अधिक होने में कौन सी परेशानी है?	36
पैसे को लेकर "वेद" का क्या कथन है?	36
आवश्यकताओं की पूर्ति संभव, इच्छाएं अनंत.....	37
पंचमहायज्ञ, प्रतिदिन गृहस्थ व्यक्ति को करने चाहिए।	38
पहला यज्ञ है—ब्रह्मयज्ञ :	38
दूसरा—देवयज्ञ :	39
तीसरा पितृयज्ञ :	40
अपने बड़े—बुजुर्गों की सेवा अवश्य करें.....	40
चौथा बलिवैश्वदेव यज्ञ :	41
पशुओं, रोगियों, असहायों पर करुणा करें.....	41
पांचवा अतिथि यज्ञ :	43
अपने घर पर विद्वानों को आमंत्रित करते रहें...	43
पांच यज्ञ सुखी गृहस्थ की कुंजी :	45
आपने समझाया कि हर रोज हवन करें, पंद्रह—पंद्रह मिनट ध्यान और स्वाध्याय करें तो बहुत लाभ होगा। मैं ये सब कार्य न करूं तो क्या नुकसान होगा?	46
क्या गृहस्थ आश्रम में प्रतिदिन यज्ञ—संध्या करना अनिवार्य है। नियमित रूप से न करें तो क्या इससे कुछ हानि हो सकती है?	48
पति—पत्नी को गृहस्थी की गाड़ी चलाने के लिए और क्या—क्या सावधानियाँ रखनी चाहिए?	48
गृहस्थ जीवन को ठीक से चलाने के लिए क्या उपाय अपनाएं?	50
पति—पत्नी का संबंध कैसा होना चाहिए?जिससे कि उनका आपसी रिश्ता बहुत अच्छा हो, मजबूत हो, आपस में प्रेम हो।	53
आदर्श गृहस्थ जीवन जीना क्या हमारी प्राथमिक जिम्मेदारी है?और अच्छाई से यानि की ईमानदारी से जो धन हम कमाते हैं, उसका फायदा इसी जन्म में मिलता है?	56
पति दान करता है, तो उसका फल उसको ही मिलता है या	

आधा उसके परिवार वालों को मिलेगा?	57
अपना जीवन साथी न पसंद हो लेकिन माँ-बाप के आनंद के लिए उसे अपना लिया तो अपना गृहस्थ जीवन कैसे सुखी बनाएँ?	58
वैदिक तरीके को मानता हूँ, उस पर चलता भी हूँ, पर शराब की बुरी लत दोष है, कैसे बचूँ?	58
गृहस्थ जीवन का वास्तविक मतलब क्या है?	60
सुकरात, नृसिंह मेहता, श्रीजी प्रभुपाद और डोंगरेजी महाराज आदि बड़े विद्वान थे। फिर भी वो अपना गृहस्थ जीवन सुखी क्यों नहीं बना पाए?	61
गृहस्थ में छोटी-छोटी टकराहटें क्यों होती रहती हैं? इनसे कैसे बचें।	61
पत्नी को ससुराल की बातें मायके में बतानी चाहिए या नहीं?	
यदि पति पीटता हो, तो चुपचाप सहें या बताएं?	62
पति-पत्नी के व्यक्तिगत झगड़े में किसी और को सुलह के लिए शामिल करना उचित है या अनुचित?	63
पति-पत्नी के बीच गृहक्लेश का कारण क्या है? इससे बचने के क्या उपाय हैं?	64
पति-पत्नी अपने मायके-ससुराल के प्रति कैसा व्यवहार रखें?	65
पति-पत्नी को स्वयं और संतान को अच्छे संस्कार देना क्यों आवश्यक है? इसके अभाव में क्या खतरे हैं?	68
पत्नी बार-बार मायके में फोन करे या न करे?	69
माता और पत्नी की फरियाद में से पति किसको न्याय दें?	71
कभी-कभी पति के साथ झगड़ा होने पर माताएं अपने पुत्रों को पति के विरुद्ध भड़काती हैं। वो उनको अपने रक्षा-कवच के रूप में इस्तेमाल करती हैं। क्या यही रवैया अपनाना सही माना जाएगा?	71
स्वार्थ पूरा होने पर पत्नी, पुत्र की हो जाती है और पति का अपमान करने लगती है। ऐसा क्यों?	73
हमारे जीवन के हर क्षेत्र के स्त्रीतत्व में दौड़ क्यों है? आत्म तत्व तो दोनों ही स्त्री और पुरुष में एक है, फिर हर तरफ ये पुरुष तत्व प्रधान क्यों?	74
दो नहीं, एक ही हो थानेदार	74
लिव-इन-रिलेशन को मान्यता देनी चाहिए कि नहीं?	76

जो लड़की ये सोचती है कि गृहस्थ आश्रम दुःखी करने वाला आश्रम है, इसमें जाना नहीं चाहिए तो भी संसार, गृहस्थ में जाने के लिए मजबूर करता है, तो उसे क्या करना चाहिए? 76

क्या वर्ण व्यवस्था के अनुसार ही विवाह करना चाहिए? क्या यह वेदों के अनुकूल हैं। 77

शादी करने के लिए जन्म—कुण्डली मिलानी चाहिए या नहीं? 79

गृहस्थ में प्रवेश करने से पहले एक—दूसरे को समय देना चाहिए या बिना समय दिए ही दोनों का विवाह करा देना चाहिए? 80

क्या दूसरी जाति में विवाह कर सकते हैं? 81

लड़की में मंगल हो, तो क्या उसका विवाह मंगल वाले लड़के से ही करना चाहिए? 81

शादी के लिए लड़के—लड़की की उम्र में कितना अन्तर होना चाहिए। लड़की लड़के से आयु में बड़ी हो तो क्या इससे कोई दिक्कत होती है? 82

कितनी उम्र तक ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिए? किस उम्र में विवाह करके गृहस्थ में जाना चाहिए? 83

सहशिक्षा पद्धति पूरी तरह गलत 84

पहले बच्चों को बनाएं धार्मिक, फिर विद्वान 85

दंड के बिना कोई नहीं सुधरता 86

अनुशासित रखने के लिए करनी होगी तपस्या 87

क्या दंड के बिना बच्चों के सुधार का दूसरा कोई उपाय नहीं है? 87

बच्चे गलती करें तो क्या माता—पिता का बच्चों को दण्ड देना उचित है? 88

हर गलती के लिए अनिवार्य रूप से दण्ड वाला माहौल बच्चे पर कुछ प्रतिकूल डिप्रेशन आदि मनोवैज्ञानिक प्रभाव डाल सकता है। तो क्या घर में ऐसा कठोर—अनुशासनिक माहौल होना चाहिए, जिससे बच्चा हर—समय भयभीत रहे या फिर घर में कुछ ऐसा व्यवहार हो जिससे कि उसे अधिक दबाव महसूस न हो? 89

छोटे बच्चे भगवान का रूप होते हैं, तो क्या उनको सजा देना अच्छी बात है? 90

बच्चों के बारे में रखें पक्की जानकारी 93

अच्छी संतान गृहस्थ का मुख्य फल.....

94

भारत देश वैदिक और सांस्कृतिक होते हुए भी आज की पीढ़ी पश्चिमी देशों की ओर ज्यादा भाग रही है। उसकी क्या वजह है और उसे कैसे रोका जाए?

95

क्या बच्चों को सिर्फ शिक्षा के लिए विदेश भेज सकते हैं?

97

बेटा-बेटी के विकास में पक्षपात करना चाहिए या एक जैसा करना चाहिए?

97

हमारे बेटे-बहू, अब हमारे निर्देश के अनुसार व्यवहार नहीं किया करते, हमारे नियम-अनुशासन में नहीं चलते। इस स्थिति में हमें क्या करना चाहिए?

98

प्राचीन काल में लड़के और लड़कियां अलग-अलग गुरुकुल में पढ़ते थे? आज तो प्रायः आधुनिक स्कूलों में बच्चों को इकट्ठा ही पढ़ाते हैं। बच्चे कुछ गलतियां करते हैं, तो टीचर लोग उनको स्कूल में दंड भी नहीं देते हैं। ऐसी स्थिति में हमें क्या करना चाहिए, जिससे कि बच्चों का चरित्र ठीक-सुरक्षित बना रहे?

98

चार आश्रमों की बात, बच्चों को गुरुकुल में भेजने की बात, ये सब बातें आदर्श हैं, प्राचीन काल के हिसाब से हैं, परंतु आजकल के समय में ये व्यवहारिक नहीं हैं। तो आजकल कोई ऐसी पद्धति बताएं जिससे कि हम बच्चों को अच्छे संस्कार देकर विकसित कर पाएं।

99

क्या युवा बेटे को अपने व्यापार आदि की जानकारी देनी चाहिए? क्या उसको सारे रहस्य बताने चाहिए?

102

यदि जवान बेटा रात को देर से घर में आए तो माता-पिता को क्या करना चाहिए?

104

क्या बच्चों पर छोटी उम्र में कोई जिम्मेदारी सौंपनी चाहिए या फिर जब बच्चे बड़े हो जाएं, तभी उनको अवसर देना चाहिए?

106

जो बच्चे युवा हो रहे हैं, मतलब उनकी उम्र 12, 13, 14, 15, 16 साल हो रही है, तो ऐसे युवा होने वाले बच्चों के साथ, माता-पिता को किस तरह का व्यवहार करना चाहिए?

109

क्या कॉलेज के स्तर पर आ गए बच्चों को पढ़ाई के लिए हजारों किलोमीटर दूर हॉस्टल में भेजना उचित है? यदि उचित है, तो उसमें क्या-क्या सावधानी रखनी चाहिए?

113

गृहस्थ में कभी-कभी पिता-पुत्र में ठन जाती है, आपस में टकराव होता है। वह कई वर्षों तक चलता है। आगे भविष्य में इसके परिणाम अच्छे नहीं होते। परिवार टूट जाता है। पिता पुत्र में स्थायी विरोध हो जाता है। इससे बुढ़ापे में

पिता दुःखी होते हैं। इसका क्या समाधान है?	117
कभी—कभी 15 से 18 साल तक के युवा, किशोर प्रेम—प्रसंग में फंस जाते हैं। ऐसी स्थिति में उनको कैसे बचाया जाए, जिससे वो कोई गलत कदम न उठाएं, अपना भविष्य न बिगाड़ लें?	120
कभी—कभी परिवार में 10, 12 साल के बच्चों को चोरी करने की आदत हो जाती है। उन्हें इस आदत से कैसे बचाया जाए?	124
अनेक बार घर में पिता और पुत्र में किसी बात पर आपस में तू—तू मैं—मैं या बहस हो जाती है, तो उस समय माता का क्या रोल होना चाहिए?	128
सम्पन्न परिवारों के बच्चे कई बार अपराध की प्रवृत्तियों में शामिल हो जाते हैं। ये क्यों होता है और इसे रोकने का क्या उपाय है?	131
वर्तमान में भौतिक संसाधनों का सदुपयोग कम, दुरुपयोग अधिक	134
प्राचीन गुरुकुल में पढ़ने से डॉक्टर, इंजीनियर जैसी डिग्री मिल सकती है क्या? वेद की पढ़ाई के साथ—साथ व्यक्तिगत विकास ऐसे क्षेत्र में करना हो तो गुरुकुल की पढ़ाई करने से क्या ये संभव है? और आजकल इंग्लिश—मीडियम में पढ़ना जरूरी हो गया है, तो क्या करेंगे? और गुजराती और हिंदी तो घर में सीख ही जाते हैं, पर इंग्लिश नहीं बोल पाते तो क्या करें?	135
स्वामी विवेकानन्द जी परिव्राजक की अन्य पुस्तकें	136
दर्शन योग धर्मार्थ ट्रस्ट की गतिविधियां	137
दर्शन योग महाविद्यालय की एक अभिनव परियोजना “सफलता विज्ञान”	139



गृहस्थ जीवन को सुखी कैसे बनाएं?

यह आज की ज्वलंत समस्या है कि लोग संसार में जी तो रहे हैं परन्तु अधिकांश लोगों को ये मालूम नहीं है, कि वे क्यों जी रहे हैं? क्यों खा रहे हैं? क्यों पी रहे हैं? पढ़ रहे हैं, तो क्यों पढ़ रहे हैं? व्यापार कर रहे हैं तो क्यों कर रहे हैं? इस 'क्यों' के प्रश्न का उत्तर लगभग लोगों के पास नहीं है।

“आप क्या बनोगे?”

एक बच्चे से मैंने पूछा—बेटा आप बड़े होकर क्या बनोगे? उसने कहा—मैं डॉक्टर बनूंगा। एक दूसरे बच्चे से पूछा—आप क्या बनोगे? बोला—मैं इंजीनियर बनूंगा। तीसरे बच्चे से पूछा—आप क्या बनोगे? बोला मैं पायलट बनूंगा। और चौथे बच्चे से पूछा—आप क्या बनोगे? उसने कहा—कुछ तो बन ही जाऊंगा।

“क्या इसका नाम यात्रा है?”

एक यात्री घर से चला। रास्ते में उसका मित्र मिला, उसने पूछा, भाई! कहां जा रहे हो? यात्री ने कहा—“भाई, कहीं तो पहुंच ही जाएंगे।” क्या इसका नाम यात्रा है? न। ये तो कोई यात्रा नहीं है न, कहीं तो पहुंच ही जाएंगे। जिसको ये पता ही नहीं है कि कहां जाना है, वो यात्री नहीं है। वो यात्रा नहीं कर रहा है, वो तो बेचारा भटक रहा है।

ऐसे ही हम बहुत से लोगों से पूछते हैं, आपके जीवन का उद्देश्य क्या है? जीवन में आप क्या करना चाहते हैं, आप क्या बनना चाहते हैं, तो वो कहते हैं, ‘कुछ तो बन ही जाएंगे।’ इसका अर्थ है, उन्हें मालूम नहीं है, हमें क्या बनना चाहिए। ईश्वर की कृपा से इतना अच्छा मनुष्य जीवन हमें मिला, इतनी अच्छी बुद्धि मिली, अच्छे—अच्छे माता—पिता मिले, अच्छे—अच्छे गुरुजन मिले। चार वेदों की विद्या मिली, इतनी अच्छी सुविधाएं होते हुए भी हमें पता नहीं है कि हम इन सुविधाओं का क्या करें! इन सुविधाओं से क्या चीज प्राप्त करें, नहीं मालूम।

“भगवान ने चार विशेष सुविधाएं दीं”

भगवान ने हम मनुष्यों को चार विशेष सुविधाएं दीं, ये चार विशेष सुविधाएं और प्राणियों को लगभग नहीं दीं।

पहली सुविधा है—बुद्धि ।

जितनी अच्छी बुद्धि मनुष्यों के पास है और मनुष्य पढ़-लिख के अच्छे काम करके, उत्तम कर्मों का आचरण करके जितना अपनी बुद्धि का विकास कर सकता है, इतना विकास और कोई प्राणी नहीं कर सकता । किसी के पास ऐसी बुद्धि नहीं है ।

दूसरी सुविधा है—बोलने के लिए—भाषा ।

मनुष्यों के पास भाषा है । हम इस भाषा के माध्यम से अपनी समस्या दूसरों को बता सकते हैं । दूसरे लोग हमारी समस्या को समझ सकते हैं, उसे सुलझा सकते हैं और हम एक-दूसरे के दुखों को दूर कर सकते हैं ।

कुत्ते के पेट में दर्द होता हो, तो क्या वो बता सकता है कि मुझे क्या समस्या है? नहीं बता सकता । लेकिन मनुष्य को ये सुविधा प्राप्त है । वो बता सकता है, मेरा सिर दुःखता है, पेट दुःखता है, पांव दुःखता है, क्या दिक्कत है? और डॉक्टर साहब उसकी समस्या को समझ लेते हैं । उसको दो गोली खिलाते हैं और वो ठीक हो जाता है ।

इस भाषा की सुविधा के कारण हम कितनी ही विधाओं को सीख लेते हैं । और बहुत अच्छी उपलब्धि कर सकते हैं जीवन में । ऐसी भाषा की सुविधा और प्राणियों के पास नहीं है ।

तीसरी सुविधा—कर्म करने के लिए दो हाथ

भगवान ने हमको दो हाथ दिए हैं । ऐसे हमारे जैसे हाथ दो—चार प्राणियों के पास हैं—बंदर के पास हैं, वनमानुष के पास हैं, गोरिल्ला के पास हैं । ऐसे दो चार प्राणी हैं जिनके हमारे जैसे हाथ होंगे बाकियों के तो हाथ भी नहीं हैं । वो कुछ काम नहीं कर पाते ।

चौथी सुविधा है—कर्म करने की स्वतंत्रता

मनुष्यों को 24 घंटे कर्म करने की छूट है । वो अपनी इच्छानुसार जब चाहें, जो चाहें कर सकते हैं । गाय, कुत्ते को ऐसी स्वतंत्रता, इतनी छूट नहीं है, कि वो अपनी इच्छानुसार रहें । वे जब चाहे, जो मर्जी कर लें । जब इच्छा हो तब

आप लोग देश—विदेश की यात्रा—सैर कर सकते हैं, घूम सकते हैं, खा सकते हैं, पी सकते हैं, कुछ भी कर सकते हैं। पर अहमदाबाद के एक कुत्ते की इच्छा हो जाए, कि एक बड़ौदा का चक्कर लगा ले तो क्या बड़ौदा पहुंच पाएगा? नहीं पहुंच पाएगा। उसका सारा जीवन बस इसी क्षेत्र में पूरा हो जाता है। वो अपनी इच्छानुसार कुछ खा नहीं सकता, कहीं घूम नहीं सकता, कुछ खरीद नहीं सकता, कोई अच्छा काम नहीं कर सकता, किसी की सेवा नहीं कर सकता। पर मनुष्यों को कितनी अच्छी सुविधा है, जो अपनी इच्छानुसार 24 घंटे स्वतंत्र हैं। जो चाहें सो अच्छे काम कर सकते हैं। स्वयं सुखी रह सकते हैं, दूसरों को सुख दे सकते हैं। अपनी इच्छा से सेवा कर सकते हैं।

गाय हमें दूध देती जरूर है, पर वो अपनी इच्छा से नहीं देती। हम उससे ले लेते हैं। हम इन प्राणियों से जबरदस्ती सेवा ले लेते हैं। पर मनुष्य इतना स्वतंत्र है, कि वो अपनी इच्छा से सेवा कर सकता है। समझदारी इसी में है, कि हम इन सुविधाओं का ठीक से लाभ उठाएं। अच्छे—अच्छे माता—पिता, गुरुजन, चारों वेदों की विद्या और इन सारी सुविधाओं का लाभ उठाएं, तो हम जीवन में बहुत कुछ उन्नति कर सकते हैं। हम अपने जीवन को सुखी बना सकते हैं। हम अपने जीवन के उद्देश्य को समझ सकते हैं। अपने उद्देश्य को प्राप्त कर सकते हैं।

सबसे उत्तम प्राणी मनुष्य...

ईश्वर ने करोड़ों वर्ष पहले जब ये संसार बनाया, तब सारे प्रकार के प्राणी बनाए, और उनमें एक सबसे उत्तम प्राणी मनुष्य बनाया। और सौभाग्य से हमारा नंबर इस मनुष्य योनि में लग गया। पहले भी बहुत बार लगा है। आज भी हम सौभाग्य से इस मनुष्य योनि में जी रहे हैं। हम सबके कल्याण के लिए ईश्वर ने आज से करोड़ों वर्ष पहले चार वेदों का ज्ञान दिया। और उन चार वेदों में ये बताया, कि मनुष्य के जीवन का उद्देश्य क्या है? ईश्वर ने स्वयं बताया—ये सृष्टि मैंने बनाई, आप लोगों के लिए बनाई, आपके सुख के लिए बनाई, आपके पिछले कर्मों का फल देने के लिए बनाई। और आगे अच्छे—अच्छे काम करके मोक्ष प्राप्त करने के लिए बनाई। इस संसार से ईश्वर को स्वयं को कोई लाभ नहीं है। ईश्वर ने अपने स्वार्थ के लिए दुनिया नहीं बनाई। हमारे और आपके लिए बनाई।

“सुखी गृहस्थ” नामक यह पुस्तक, जो इस समय आपके हाथों में है, इसका मूल विषय है—“आखिर वे कौन से उपाय व सावधानियां हैं, जिनको अपनाकर “गृहस्थ जीवन” को सुखी बनाया जा सकता है।”

इस संदर्भ में अपनी बात को आगे बढ़ाने से पहले गहराई से विचार करने पर हम पाएंगे कि आज की स्थिति में भारत हो या विदेश, सभी देशों में मनुष्य जीवन अच्छी प्रकार से नहीं चल रहा है। मनुष्य जीवन में जीवन—मूल्यों का गंभीरतापूर्वक ध्यान रखते हुए, जीवन के किस भाग को कैसे जीना चाहिए, किस उम्र में हमारे क्या कर्तव्य हैं, क्या करें, क्या न करें, क्या ठीक है, क्या गलत है, इन बातों को लोग ठीक से नहीं समझ पा रहे हैं। इसीलिए सब देशों में अव्यवस्था, दुःख, परेशानी, अन्याय, अत्याचार, शोषण आदि दिखाई दे रहा है। प्रश्न उठता है कि आखिर इस दुर्दशा के पीछे मूल कारण क्या है? कारण ये है कि जिन शास्त्रों में इन प्रश्नों को सुलझाया गया है, इन बातों को समझाया गया है, उन शास्त्रों का पठन—पाठन छूट गया है। इसलिए वर्तमान दौर के अधिकांश लोग भटके हुए हैं।

फलस्वरूप परिणाम शून्य सा है

बहुत कम लोग इन बातों को भली—भांति समझते हैं, कि मनुष्य जीवन को कैसे जीना चाहिए। जो लोग समझते हैं, उनके पास सत्ता—अधिकार—सम्पत्ति नहीं है, या बहुत कम है, इसलिए उनकी बातों का प्रसार नहीं हो पाता, दुनिया वालों को उनके ज्ञान का लाभ नहीं हो पाता। इसके विपरीत, जिनके पास सत्ता है, अधिकार है, सम्पत्ति है, वे जानते नहीं, कि मनुष्य जीवन को कैसे जीना चाहिए। फलस्वरूप परिणाम शून्य सा है।

आवश्यकता है, वेदों का अध्ययन करने की

हम ऐसे शास्त्रों का अध्ययन करते हैं, जिन शास्त्रों में इन प्रश्नों को सुलझाया गया है। उन शास्त्रों का नाम है, वेद—ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद। ये चार वेद हैं, जो ईश्वर की वाणी हैं, ईश्वर की ओर से दिए गए सन्देश हैं। इन वेदों में ईश्वर ने हमें बताया कि—

मनुष्य जीवन का कितना मूल्य है?

इसका पूरा लाभ जीवन में कैसे उठाया जा सकता है?

क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए?

क्या ठीक है और क्या गलत है?

कैसे हम सुखी होंगे, कैसे दुःखों से छूटेंगे?

इसलिए आवश्यकता है, वेदों का अध्ययन करने की।

वेद ऊँचे स्तर की सर्वश्रेष्ठ पुस्तकें

दुनियाभर के कई विद्वान यह तथ्य स्वीकार कर चुके हैं, कि वेद अत्यंत ऊँचे स्तर की पुस्तकें हैं। उनमें बहुत सी बातें सरल—सुबोध और बहुत सी बातें कठिन—दुर्बोध भी हैं। अतएव सीधा वेद पढ़ेंगे, तो समझ में नहीं आएगा। जैसे कोई भी विद्यार्थी स्कूल की पढ़ाई पूरी किए बिना सीधे एम.ए., पी. एच. डी. की पुस्तक पढ़े, तो उसको समझ में नहीं आएगी। उसे प्रारंभिक स्तर से अर्थात् छोटे स्तर से, प्राइमरी क्लास से अध्ययन आरम्भ करना होगा। इसी प्रकार से वेदों को समझने के लिए पुराने ऋषियों ने संस्कृत भाषा में ग्रंथ बनाए। तब संस्कृत भाषा ही चलती थी। आजकल हिन्दी भाषा चलती है। महर्षि दयानंद सरस्वती जी पहले ऋषि हुए जिन्होंने संस्कृत भाषा के प्रकांड पंडित और मातृभाषा गुजराती पर संपूर्ण अधिकार के बावजूद, अपनी “सत्यार्थ प्रकाश” सहित अन्य पुस्तकें हिन्दी भाषा में लिखीं। ऐसा इसलिए, ताकि आम जनता उन्हें आसानी से समझ सके, उनसे लाभ उठा सके।

वेद में लिखा है, कैसे जिएं आदर्श जीवन

यदि हम वेदों को पढ़ें, उनके संस्कृत—भाष्य पढ़ें, हिन्दी—भाष्य पढ़ें, अन्य विषयों के ग्रन्थ भी पढ़ें, तो हमें ये बातें समझ में आ सकती हैं, कि मनुष्य जीवन क्या है, इसे आदर्श रूप में कैसे जीना चाहिए? जो कुछ भी ऋषियों ने समझाया, वेदों की बातें बताईं, उन बातों को मैं आपके सामने सरल हिन्दी भाषा में प्रस्तुत करने का प्रयास कर रहा हूं, जिससे कि आप उस महान ज्ञान से अधिकाधिक लाभ उठा सकें। अतः बातें सब ऋषियों की होंगी, वेदों की होंगी, सिर्फ भाषा आजकल की और मेरी होगी।

व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन को जानें

मनुष्य अपने जीवन को दो प्रकार से जीता है। एक व्यक्तिगत स्तर पर

और दूसरा सामाजिक स्तर पर। इस प्रकार, व्यक्ति कुछ तो अपने जीवन के लिए काम करता है, कुछ समाज के लिए काम करता है। व्यक्तिगत जीवन के चार भाग हैं और सामाजिक जीवन के भी चार भाग हैं। इस पूरी व्यवस्था को बोलते हैं, वर्ण आश्रम व्यवस्था। व्यक्तिगत जीवन के जो चार भाग हैं, उसका नाम है आश्रम व्यवस्था। जब हम समाज के लिए काम करते हैं, उसके भी चार भाग हैं। उसका नाम है, वर्ण व्यवस्था।

क्या है—वर्ण व्यवस्था?

वर्ण का मतलब है, हमारा व्यवसाय (ऑक्यूपेशन)। हम समाज के लिए जो कार्य करते हैं, जैसे कोई डॉक्टर बनकर समाज में रह रहे मरीजों की सेवा, उपचार के जरिए करता है। कोई विद्वान, प्रोफेसर, अध्यापक बनकर ज्ञान का उजियारा फैलाने का काम करता है। कोई प्रशासनिक विभाग में काम करता है। ये सब सामाजिक कार्य हैं। इसको वर्ण व्यवस्था कहते हैं। उन चार वर्णों के नाम हैं, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र।

जन्म से वर्ण का निर्धारण अनुचित

आजकल लोग ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र जन्म से मानते हैं, ये निर्धारण उचित नहीं। वेदों ने ऐसा स्वीकार नहीं किया। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, ये हमारे चार व्यवसाय हैं, जो सामाजिक सेवा के कार्य हैं। ये गुण, कर्म, योग्यता से निर्धारित होते हैं, जन्म से कतई नहीं। प्रश्न है कि, जन्म से क्यों निर्धारित नहीं होते? ऐसा इसलिए, क्योंकि जन्म से मानने पर, हम न्याय नहीं कर सकते, उससे समाज का सुख नहीं बढ़ेगा, समाज की उन्नति नहीं होगी। मान लीजिए कि, एक डॉक्टर साहब ऑपरेशन करते हैं, चीर-फाड़ का काम करते हैं। उनके घर में एक संतान उत्पन्न हो जाए। क्या उस संतान को आप जन्म से डॉक्टर मान लेंगे? वकील साहब के बेटे को जन्म से आप वकील मान लेंगे? किसी वैज्ञानिक के बच्चे को जन्म से वैज्ञानिक मान लेंगे? नहीं मानेंगे न। यही वेद कहता है, डॉक्टर का बेटा जन्म से डॉक्टर नहीं हो सकता। जब तक वो स्वयं पढ़-लिखकर के डॉक्टरी न सीख ले, डॉक्टर नहीं हो सकता। अगर डॉक्टर का बेटा जन्म से डॉक्टर मान लिया जाए और वो स्वयं पढ़-लिखकर डॉक्टरी की योग्यता न बनाए, इस स्थिति में उसे चिकित्सा करनी तो आती नहीं, तो वो रोगियों को मार देगा। इसलिए जन्म से वर्ण तो समझदार होने के

नाते आप भी स्वीकार नहीं करते और “वेद” भी स्वीकार नहीं करते। वेद इस विषय में यही कहते हैं, कि पढ़-लिखकर के जिसकी जैसी योग्यता बने, उसको वैसा पद, स्थान, डिग्री दी जानी चाहिए। उसी योग्यता से वो समाज का काम करे। इसी का नाम “वर्ण” हैं। इस प्रकार, ये वर्ण गुण कर्म से, योग्यता से माना जाता है। यही मानना उचित और न्यायपूर्ण है।

यहां दूसरी बात है, चार वर्ण में से जो व्यक्ति पढ़ना-पढ़ाना, विद्या का प्रचार करना, इस प्रकार के कार्य करता है, वो ब्राह्मण कहलाता है। इसके बाद, दूसरा वर्ण है क्षत्रिय। क्षत्रिय प्रशासन और रक्षा विभाग को संभालता है। जैसे कि, सेनाधिकारी, पुलिस अधिकारी (सी.बी.आई., सी.आई.डी.), न्यायाधीश, आई.पी.एस., आई.ए.एस. लोग काम करते हैं और इसी तरह से जो लोकसभा में, विधानसभा में प्रशासनिक कानून बनाना, व्यवस्था चलाना आदि कार्य किया करते हैं। ये सब क्षत्रिय विभाग के लोग हैं। तीसरे हैं, वैश्य। जो व्यापारी वर्ग के लोग हैं, ये उद्योग-धंधे चलाते हैं, फैक्ट्रियां-कारखाने चलाते हैं, बिजनेस करते हैं, खेती करते हैं, उत्पादन और वितरण को संभालते हैं। चौथा है, शूद्र। जो कि सेवक है, अतः यह इन तीनों वर्गों की सहायता करता है। कोई फैक्ट्री में मजदूर बनकर काम करता है, कोई सड़क बनाता है, सड़क पर पत्थर कूटता है, कोई मकान बनाता है, मिट्टी ढोता है, लेबर क्लास, श्रम करने वाला श्रमिक। उसका नाम शूद्र है। शूद्र का मतलब अछूत नहीं है। वो शरीर से मेहनत करता है, श्रम करता है, इसलिए उसको सेवक या शूद्र के नाम से संबोधित करते हैं। इस प्रकार, जिसकी जैसी योग्यता हो, उसको वैसा काम दिया जाना चाहिए, ये न्याय है, और इसका नाम है, सामाजिक कार्य अर्थात् वर्ण व्यवस्था।

जीवन के चार हिस्से-चार आश्रम

दूसरा भाग है, व्यक्तिगत जीवन। उसमें भी चार भाग हैं, जिसको आश्रम व्यवस्था कहते हैं। ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास, ये चार आश्रम कहलाते हैं अर्थात् व्यक्ति अपने जीवन को इन चार हिस्सों में जीता है। ध्यान दें कि, इन चारों शब्दों को आश्रम नाम से कहा गया है। ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास, ये सब के सब आश्रम हैं। आश्रम का अर्थ यह नहीं होता, कि जैसे जंगल में कोई बिल्डिंग होती है या कोई मकान होता है। उसमें

कुछ साधक लोग रहते हैं, कुछ तपस्या करते हैं, कुछ स्वाध्याय करते हैं, कुछ हवन करते हैं, उस बिल्डिंग का नाम आश्रम होता है। ऐसा प्रायः लोग समझते हैं। ब्रह्मचर्य आश्रम, गृहस्थ आश्रम, वानप्रस्थ आश्रम, सन्यास आश्रम, ये एक व्यवस्था का, एक सिस्टम का नाम है।

जीवन का पहला भाग— ब्रह्मचर्य आश्रम

जीवन का सबसे पहला भाग है, बचपन का, विद्यार्थी का। उस भाग का नाम है—ब्रह्मचर्य आश्रम। ब्रह्मचर्य आश्रम में व्यक्ति अपना विकास करता है। इस भाग में व्यक्ति अपनी व्यक्तिगत उन्नति करता है। वह विद्या पढ़ेगा, शरीर को बलवान बनाएगा, बुद्धि का विकास करेगा, सभ्यता सीखेगा, अनुशासन में रहेगा, अच्छी-अच्छी बातें सीखेगा, सही और गलत की पहचान करेगा, ईश्वर की उपासना करेगा और यज्ञ करेगा। इस प्रकार से उसके कुछ कर्तव्य बताए जाते हैं, ताकि उसकी व्यक्तिगत उन्नति हो। ब्रह्मचर्य आश्रम में व्यक्तिगत उन्नति करना प्रमुख होता है, और सामाजिक उन्नति के कार्य गौण। गौण का मतलब, उसको थोड़ा सा, थोड़ा-थोड़ा सामाजिक कार्य करना होता है, पर मुख्य रूप से अपनी उन्नति करनी होती है।

गुरुकुल का पुरातन आदर्श अत्युत्तम

वेदों के अनुसार यदि हम इन आश्रमों को समझें, इनके कर्तव्य समझें और उन कर्तव्यों का पालन करें, तो हम हमारे चारों ओर फैली हुई बहुत सारी समस्याओं को दूर कर सकते हैं। वेदों के अनुसार प्राचीन शिक्षा-पद्धति में ब्रह्मचर्य आश्रम में विद्यार्थी अपने घर पर, गृहनगर में नहीं रहता था। वह नगर से पाँच-सात किलोमीटर दूर जंगल में गुरुकुल में गुरुजी के पास, जहाँ कोई शोर-शराबा नहीं, प्रदूषण नहीं, कोई फैशन नहीं, कोई चमक-दमक नहीं, वहाँ रहता था। एकांत, शांत स्थान में उसका अध्ययन-पढ़ाई चलती थी। इस प्रकार, प्राचीन काल में बच्चे गुरुजी के परिवार में रहते थे, अपने माता-पिता के साथ नहीं। ऐसा इसलिए क्योंकि घर पर माता-पिता के साथ रहने में विद्यार्थी का उतना अच्छा विकास नहीं हो पाता, उतनी अच्छी पढ़ाई-लिखाई नहीं हो पाती, उतनी अच्छी उन्नति नहीं हो पाती, जितनी कि गुरुकुल में होती है। घर से दूर, नगर से दूर, बीस साल-पच्चीस साल विद्यार्थी, वहाँ गुरुकुलों में रहते थे और पढ़ते थे, वो उनका ब्रह्मचर्य आश्रम कहलाता था। वे वहाँ खूब

तपस्या करते थे, व्यायाम करते थे, शुद्ध खान-पान, शाकाहारी भोजन खाते थे, रोज हवन करते थे, दोनों समय ईश्वर की उपासना करते थे और पढ़ाई करते थे। इसके अलावा, गुरुजी जो काम बताएं, वे उसको नियमपूर्वक, अनुशासन में रहकर पूरा करते थे। ये था ब्रह्मचर्य आश्रम। अब तो गिने-चुने ऐसे गुरुकुल बचे हैं, जो प्राचीन पद्धति से चलते हैं। गुजरात में भी अहमदाबाद से लगभग 70 किलोमीटर दूर हमारी संस्था “दर्शन योग महाविद्यालय” स्थित है। ये उसी आदर्श पर, नमूने पर, प्राचीन पद्धति से ही, गुरुकुल के रूप में ही चलता है, जहाँ मैं स्वामी विवेकानंद परिव्राजक लगभग 29 साल से रह रहा हूँ।

गुरुकुल प्रणाली का अभाव चिंताजनक

प्राचीन प्रणाली में जैसी सुविधाएं, जैसे साधन, जैसा सहयोग जनता की ओर से, राजा की ओर से गुरुकुलों को मिलता था, वैसा आज नहीं मिलता है। वैसी परम्पराएं आज नहीं रहीं इसलिए गुरुकुलों का प्रचार कम हो गया, फलस्वरूप ब्रह्मचारी कम मिलते हैं।

यही वजह है जिसके चलते वर्तमान में, विद्यार्थी का विकास ठीक प्रकार से नहीं हो पाता। माता-पिता अपने बच्चे को अपने घर पर ही रखते हैं, गुरुकुल नहीं भेजते, अच्छे गुरुकुल नहीं बनाते। उनको पता ही नहीं है कि विद्यार्थी का विकास कैसे किया जाए? यदि हम इन बातों को शास्त्रों के आधार पर समझें, जानने का प्रयास करें और “दर्शन योग महाविद्यालय” जैसे अच्छे-अच्छे गुरुकुल देश के हर प्रांत में बनाएं, तो हमारी बहुत सारी समस्याएं हल हो सकती हैं।

आज की स्थिति में, गृहस्थ में जैसा आप देख रहे हैं कि 12, 13, 14 साल के बच्चे माता-पिता की बात नहीं सुनते। उनको जो पसंद आएगा, अपनी मनमर्जी से वैसा काम करते नजर आते हैं, जो पसंद नहीं आएगा, वो नहीं करते। चाहे माता-पिता जो भी कहते रहें, बार-बार कहते -कहते थक जाएं, लेकिन बच्चे सुनते ही नहीं, अनुशासन में नहीं रहते, माता-पिता की बताई अच्छी-अच्छी बातें, वो सीखते नहीं। माता-पिता गलत बातों से रोकने की कोशिश करते हैं, लेकिन बच्चे रुकते नहीं। चारों तरफ ऐसा वातावरण बना हुआ है। यदि हम पुरानी व्यवस्था को फिर से लागू करें, तो ये बहुत सारी समस्याएं हल हो सकती हैं।

ईश्वर से सलाह लेने में ही समझदारी

एक छोटा सा प्रश्न यह है, कि हम मनुष्यों की बुद्धि ज्यादा है या ईश्वर की? उत्तर है, कि हमारी बुद्धि ईश्वर से कम है, ईश्वर की ज्यादा है। अगर हम अपनी बुद्धि से निर्णय करें कि कैसा काम करने से हमारा सुख बढ़ेगा, तो वो ठीक होगा? या ईश्वर की बुद्धि से जो निर्णय होगा, वो ठीक होगा? ईश्वर का निर्णय ठीक होगा।

हमारे सामने जो समस्याएं हैं, यदि हम उन्हें सुलझाना चाहते हैं, तो ईश्वर से सलाह लेनी पड़ेगी, ईश्वर की बुद्धि का निर्णय स्वीकार करना होगा। ईश्वर कभी भूल नहीं करता है, ईश्वर कभी झूठ नहीं बोलता, ईश्वर कभी किसी को बहकाता नहीं, किसी को गलत रास्ता नहीं दिखाता। मनुष्य अल्पज्ञ है, ईश्वर सर्वज्ञ है, (गॉड इज ओमनीसियन्ट)। ईश्वर सब कुछ जानता है, ठीक-ठीक जानता है।

ईश्वर में स्वार्थ और अविद्या नहीं है

ईश्वर में कोई स्वार्थ नहीं है, मनुष्यों में तो स्वार्थ हो सकता है, कम भी हो सकता है, अधिक भी हो सकता है। मनुष्यों में अविद्या होती है, ईश्वर में अविद्या नहीं है। संसार में जितने बुरे काम होते हैं, झूठ, छल-कपट, धोखा, अन्याय, पाखण्ड, अंधविश्वास आदि जो भी चलता है, उसके दो मुख्य कारण हैं। एक तो है—स्वार्थ और दूसरा है—अविद्या, जिससे संसार में गड़बड़ शुरू होती है। मनुष्य झूठ बोलता है। क्यों बोलता है? स्वार्थ के कारण। वो जानता है सच क्या है, पर वो सच बोलता नहीं। जहां उसका स्वार्थ है, वहां झूठ बोलता है। वो जानता है कि सही और गलत क्या है, फिर भी स्वार्थ के कारण वो गलत पक्ष में अपना समर्थन देगा, सही पक्ष में नहीं देगा।

ऐसा इसलिए क्योंकि वहां उसका कोई स्वार्थ पूरा हो रहा है। और अगर किसी का स्वार्थ न हो, स्वार्थ को थोड़ा-बहुत जीत ले, कन्ट्रोल कर ले, तो अविद्या तो फिर भी रहती ही है। तब अल्पज्ञ होने से थोड़ा जानने के कारण, कुछ अनजाने में अविद्या के कारण गलतियां हो जाती हैं। ईश्वर में स्वार्थ और अविद्या नहीं होती। इस तरह गड़बड़-घोटाले के जो दो मुख्य कारण हैं—स्वार्थ और अविद्या, ईश्वर में वो दोनों ही नहीं हैं।

परोपकारी ईश्वर... जो कहेगा, ठीक कहेगा

ईश्वर सबका भला चाहता है। परोपकारी ईश्वर जो कहेगा, ठीक कहेगा। यदि हम गृहस्थ में कुछ समस्याओं से परेशान हो रहे हैं, इन समस्याओं को सुलझाना चाहते हैं, तो हमें ईश्वर की बुद्धि से उन समस्याओं का समाधान ढूँढना चाहिए। इससे समस्याएं हल हो जाएंगी, परिणाम बहुत अच्छा आएगा और हमारे दुःख दूर हो जाएंगे।

यदि हम ईश्वर की बात नहीं सुनेंगे, अपनी मनमानी करेंगे और अपनी अक्ल से समाधान ढूँढने की कोशिश करेंगे, तो हम बहुत बार फेल हो जाएंगे। कभी-कभी हो सकता है, हमारा चिन्तन ईश्वर के विचार के साथ मेल खा जाए। जहाँ-जहाँ हमारा चिन्तन ईश्वर के विचार के साथ मेल खाएगा, वहाँ-वहाँ तो हमारी बात ठीक हो जाएगी और जहाँ हमारा विचार ईश्वर के विचार से भिन्न होगा, विरुद्ध होगा, तो वहाँ निश्चित रूप से हम गलती करेंगे, हानि उठाएंगे और वो हमारी समस्या हल नहीं होगी।

बच्चों को सुधारने के लिए मानें, ईश्वर का सुझाव

जो आज गृहस्थ में बच्चों की समस्या है, उन समस्याओं को सुलझाने के लिए हमको ईश्वर का वो सुझाव मानना चाहिए, जो उसने वेदों में बता रखा है। ईश्वर ने ये सुझाव बता रखा है कि बच्चों को घर से, माता-पिता से, परिवार से, नगर से, आजकल के जो उल्टे-सीधे खाने-पीने हैं, उनसे और फैशन की चमक-दमक से दूर रखो। जंगलों में गुरुकुल बनाओ। विद्यालयों को, शिक्षा संस्था को, गुरुकुलों को नगर से दूर रखो ताकि विद्यार्थी उनमें रहकर अपना पूरा मन अध्ययन में एकाग्र कर सकें।

प्रश्न : समाज का क्या महत्व है। इसके बिना जीवन में क्या समस्या आती है?

उत्तर : मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, वो मिल-जुल करके जीता है। अकेला कोई नहीं जी सकता। जो कमजोर है, जो विकलांग है, जो रोगी है, जो कमा नहीं सकता, वो बेचारा कहां से खाएगा? उसका जीवन कैसे चलेगा? भगवान ने हमको अधिक पैसा दिया है, हम उनकी सहायता करेंगे। इससे उनका भी काम चलेगा, और हमें भी पुण्य मिलेगा।

प्रश्न: सारे विश्व को वेदों के अनुसार आचरण करने के लिए जबरन यानि कि कानूनन बाध्य करना चाहिए?

उत्तर: कुछ नियम तो समाज में जीने के लिए आवश्यक हैं, जिनका पालन करने के लिए सबको बाध्य होना पड़ेगा। उदाहरण के लिए, सच बोलना। सच बोलने के लिए सब लोग बाध्य हैं या किसी को झूठ बोलने की छूट दे सकते हैं? भारत के संविधान में एक कानून बनवा दीजिए कि झूठ बोलने की छूट। भारतीय संसद क्या इस कानून को पास कर देगी, हाँ या न? संसद ऐसा कानून पास नहीं करेगी। वो सारे एम.पी., एम.एल.ए. जितने भी हैं, जनता भी है, वो भी सारे गिन लो। उन्हें दिन भर, सारा दिन झूठ बोलना है, प्रैक्टिकली। आप दिन भर भले ही झूठ बोलते हैं। लेकिन भारतीय संसद कानून पास नहीं करेगी, कि आप झूठ बोल सकते हैं।

ऐसे कुछ मोटे-मोटे नियम हैं, जिनका पालन करने के लिए सभी लोग बाध्य हैं। उसमें एक सत्य बोलना है। दूसरा है, न्याय से व्यवहार करना। तीसरा है, चोरी नहीं करना। चौथा है, ब्रह्मचर्य का पालन करना, संयम से रहना। शादी करनी हो, तो एक पुरुष, एक स्त्री। बस इतना ही, विवाह करना है, इससे आगे नहीं।

ऐसे-ऐसे कुछ नियम हैं जिनका पालन करना तो अनिवार्य है, इनका पालन करने में बाध्य होना पड़ेगा। बाकी तो हजारों नियम हैं, सबके लिए। सब बाध्य नहीं हैं। कुछ नियम हमारे व्यक्तिगत जीवन के लिए है, उसमें हम स्वतंत्र हैं। आप चने की दाल खाएं, मूंग की दाल खाएं, राजमा खाएं, जो आपकी मर्जी वो खाएं। वो आपकी व्यक्तिगत स्वतन्त्रता है। उसमें कोई बंधन नहीं है। ऐसे ही आप सब्जियों में कौन सी सब्जी खाएं, चार रोटी खाएं या तीन खाएं या दो खाएं। चावल खाएं या रोटी खाएं, पुलाव खाएं, वो आपकी इच्छा है। तो कुछ व्यक्तिगत नियम हैं, उनमें छूट है और कुछ सामाजिक नियम हैं, उनमें छूट नहीं है। ऐसा होना चाहिए।

वेद का अध्ययन आवश्यक :

महर्षि मनु जी कहते हैं कि गृहस्थ में प्रवेश करने से पहले कम से कम एक वेद पढ़ो, ये उसका सिलेबस है। ये उसका पाठ्यक्रम है। आप बताइए

कितने लोग हैं जो कम से कम एक वेद पढ़के शादी-विवाह करते हैं? फिर बताइए-कैसे गृहस्थ सुखी होगा? तो ये पहला उपाय बताया, कि वेदों को पढ़ें, उससे पता चलेगा गृहस्थ में क्या नियम होते हैं, क्या काम करना होता है, गृहस्थ में।

क्यों जा रहे हैं गृहस्थ में :

मैं कई लोगों से पूछता हूँ-आपने विवाह किया, गृहस्थ में प्रवेश किया, क्या कारण थे, क्या प्रयोजन था? क्यों आप गृहस्थ में गए? उनका उत्तर होता है-“सब लोग विवाह करते हैं, मैंने भी कर लिया। सब लोग पढ़ने जाते हैं, मैं भी चला गया। सब लोग पैसे कमाते हैं, मैं भी कमा रहा हूँ।” बस लोगों की नकल कर रहे हैं।

व्यक्ति को पता नहीं है, कि मैं क्यों पढ़ रहा हूँ? मैं क्यों पैसे कमा रहा हूँ, क्यों विवाह कर रहा हूँ? मैं गृहस्थ में जा रहा हूँ, क्या करूंगा? उसे कुछ मालूम नहीं है।

ऋषियों ने बताया, कि हमारे जीवन का उद्देश्य मोक्ष प्राप्ति अथवा सुख प्राप्ति एवं दुःखों से छूटना है। ये उद्देश्य हमारा कभी भी नहीं छूटेगा, न ब्रह्मचर्य आश्रम में, न गृहस्थ में, न वानप्रस्थ में, न संन्यास में। क्या उद्देश्य है-‘दुःख कम होना चाहिए, सुख बढ़ना चाहिए।’ ठीक है। तो हम ब्रह्मचारी बनते हैं, तो क्यों बनते हैं? सुख बढ़ना चाहिए, दुःख कम होना चाहिए। तो ब्रह्मचारी बनना ठीक है। फिर हम गृहस्थ में जाते हैं, तो क्यों जाते हैं? सुख बढ़ना चाहिए, दुःख कम होना चाहिए। तो गृहस्थ में जाना ठीक है, तो जाओ। वानप्रस्थी बन रहे हैं, गृहस्थ पूरा हो गया। वानप्रस्थी क्यों बन रहे हैं? सुख बढ़ना चाहिए, दुःख कम होना चाहिए। तो ठीक है, वानप्रस्थी बनो। फिर वानप्रस्थ के बाद संन्यासी बन रहे हैं। क्यों बन रहे हैं? दुःख कम होना चाहिए, सुख बढ़ना चाहिए। ये उद्देश्य चारों आश्रमों में नहीं छूटेगा। तो यही बात गृहस्थ पर भी लागू होती है। आपने गृहस्थ में प्रवेश किया। क्यों किया? यही सोचकर किया था, कि विवाह करेंगे, तो सुख बढ़ेगा और दुःख कम होगा।

पिछले 20 साल में, 25 साल में विवाह करने के बाद, गृहस्थ में रहने के बाद, आपका अनुभव क्या कहता है? इतने वर्षों में सुख बढ़ा या कम हुआ?

ईमानदारी से उत्तर दीजिएगा। कुछ लोग तो ठीक-ठीक बोल रहे हैं। दुःख बढ़ा। पर दुःख बढ़ाने के लिए गृहस्थ में नहीं जाना चाहिए। अगर पहले ही समझ में आ जाए, कि गृहस्थ में जाने से दुःख बढ़ेगा, तो गृहस्थ में नहीं जाना चाहिए। और अगर समझ में नहीं आया और ऐसा लगता हो, कि गृहस्थ में सुख बढ़ेगा, तो गृहस्थ में जाना चाहिए।

वेदों में ऐसा भी बताया है, कि जिस ब्रह्मचारी को विवाह करने से पहले ही, ये बात समझ में आ जाए, कि मैं गृहस्थ में जाऊंगा, तो मेरा दुःख बढ़ेगा, तो क्या उसको विवाह करना चाहिए? नहीं करना चाहिए। और जिसको समझ में नहीं आया और जिसको लगता है कि नहीं-नहीं गृहस्थ में जाऊंगा, तो मेरा सुख बढ़ेगा, तो ठीक है जाओ। गृहस्थ में जाना चाहिए, विवाह करना चाहिए।

ऋषियों ने बताया कि गृहस्थ आश्रम संसार के सुख-दुःख का परीक्षण करने की प्रयोगशाला है, ये एक लेबोरेटरी है। यहां पर आकर बहुत सारे एक्सपेरीमेंट, बहुत सारे प्रयोग किए जाते हैं। जिससे पता चल जाता है, कि संसार में सुख कितना और दुःख कितना?

जो लोग गृहस्थ में, 20 साल पूरे कर चुके हैं और 25 भी कर चुके, वेदों के अनुसार 25 वर्ष का समय है, गृहस्थ के लिए। 25 वर्ष का समय है ब्रह्मचर्य के लिए। ऐसे 25-25 वर्ष के चार आश्रम हैं। उस हिसाब से 25 वर्ष गृहस्थ में रह लेते हैं, तो उसका निर्णय ठीक-ठीक हो जाता है, कि गृहस्थ में सुख अधिक मिला या दुःख अधिक मिला।

अच्छा ये बताइए— आप कभी ऑफिस में गए, किसी नौकरी के लिए और आपने 5 साल नौकरी की। यदि वहां 5 साल की नौकरी में आपका सुख बढ़ेगा, तो नौकरी चालू रखेंगे या छोड़ देंगे? यदि 5 साल नौकरी करने के बाद आपको ऐसा लगेगा, कि मेरा दुःख तो बढ़ गया और सुख तो बढ़ा नहीं तो आप नौकरी चालू रखेंगे या छोड़े देंगे? छोड़ देंगे। तो वेदों ने बताया कि 25 साल तक गृहस्थ में नौकरी करो अर्थात् सुख-दुःख का परीक्षण करो। और यदि सुख बढ़ता है, तो गृहस्थी चालू रखो और अगर दुःख बढ़ जाए और समझ में आ जाए, कि सुख कम मिला, दुःख अधिक मिला, तो गृहस्थ को छोड़ दो। फिर और दूसरी नौकरी ढूंढो। तो दूसरी नौकरी कौन सी? वानप्रस्थ। यदि कोई व्यक्ति एक नौकरी छोड़कर दूसरी नौकरी पकड़ता है, तो इसका अर्थ है,

कि पहली नौकरी में उसको समझ में आ गया, यहां पर सुख कम बढ़ा—दुःख अधिक बढ़ा। अच्छा वह तो बाद की बात है वानप्रस्थ। अभी तो हम गृहस्थ की बात करेंगे।

केवल भौतिक सुख संपूर्ण नहीं :

एक और बड़ी महत्वपूर्ण बात, कि गृहस्थ में कैसे सुख होता है। यह बड़ी ही महत्वपूर्ण बात है। जिसकी कमी के कारण आज घर—घर में झगड़े होते हैं। जब व्यक्ति गृहस्थ में प्रवेश करता है, शादी—विवाह करता है, तो वर और कन्या को अर्थात् लड़के और लड़की को आपस में गुण, कर्म व स्वभाव मिलाकर विवाह करना चाहिए। वेदों के आधार पर ऋषियों ने ये समझाया, महर्षि दयानंद सरस्वती जी ने “सत्यार्थ प्रकाश” में लिखा, यदि वर और कन्या का गुण, कर्म, स्वभाव न मिले, तो चाहे लड़का—लड़की जीवनपर्यन्त कुँवारे बैठे रहें, जीवनपर्यन्त, सारा जीवन कुँवारे बैठे रहो। परन्तु बेमेल—विवाह कभी नहीं होना चाहिए, जिनके गुण, कर्म व स्वभाव नहीं मिलते, उनकी शादी नहीं होनी चाहिए। आगे लिखा है, कि विपरीत गुण, कर्म व स्वभाव वाले यदि विवाह करेंगे, तो घर में नित्य देवासुर—संग्राम मचा रहेगा। देवासुर—संग्राम तो शायद आपने सुना होगा, पहले भी आप सुनते रहते हैं। देवासुर संग्राम मतलब रोज देवों और राक्षसों जैसी लड़ाई। तो गुण, कर्म, स्वभाव मिला करके शादी करनी चाहिए। इस बात की आजकल बहुत कमी देखी जाती है।

मैंने आपसे निवेदन किया था, कि प्रायः लोगों को पता ही नहीं, कि हम विवाह क्यों कर रहे हैं? गृहस्थ में जाके क्या करेंगे? कैसे रहेंगे? उनको केवल भोग—विलास दिखता है। माफ कीजिएगा बुरा न मानना, जो सच्ची बात है, शादी करने वालों को प्रायः इतना ही दिखता है कि, शादी करेंगे और भोग—विलास करेंगे और खूब मजे से जिएंगे। ऐसा उनका दिमाग होता है। मैंने अभी भी निवेदन किया था, कि विवाह कोई मौज—मस्ती का स्थान नहीं है। “विवाह तो संसार के सुख—दुःख का परीक्षण करने की प्रयोगशाला है।” ये तो एक लेबोरेटरी है। जहाँ पर बहुत सारे एक्सपेरीमेन्ट होंगे। उन प्रयोगों से पता चलेगा, संसार में कितना सुख है और कितना दुःख है। वास्तव में गृहस्थ तो एक तपस्या—स्थली है। यहाँ तो तपस्या करनी पड़ती है, बहुत बड़ी—बड़ी जिम्मेदारियाँ—जवाबदारियाँ हैं यहां। कोई मौज—मस्ती का स्थान नहीं है। आप

देखेंगे, जब तक शादी नहीं हुई, विवाह नहीं हुआ, अकेले थे, ब्रह्मचारी थे। खूब मौज—मस्ती से घूमते थे, आते थे, जाते थे, पढ़ते थे, लिखते थे, स्कूल—कॉलेज, घूमना—फिरना, खाना—पीना पूरी छूट थी। कोई ज्यादा रोक—टोक नहीं थी। और अब शादी के बाद एक घंटा, दो घंटा ऑफिस से अगर घर लेट पहुँचा पति, तो घर जाते ही कोट—मार्शल हो जाएगा, कहां घूम रहे थे, किस के साथ घूम रहे थे, बताइए बेचारे की सारी स्वतंत्रता बंद। वो कहीं घूम भी नहीं सकता, मार्केट नहीं जा सकता। गार्डन में सैर नहीं कर सकता, एक घंटा। घर आते ही उसका कोर्ट—मार्शल शुरू हो जाएगा। तो गृहस्थ में परिवार के लोगों के प्रति बहुत जिम्मेदारियाँ हैं। पति के प्रति बहुत जिम्मेदारियाँ हैं, बच्चों के प्रति बहुत जिम्मेदारियाँ हैं। आपने शादी कर ली, मतलब आपकी व्यक्तिगत स्वतंत्रता समाप्त। अब आप बंध गए, एक दूसरे के साथ, अपने साथी के साथ बंध गए। पार्टनरशिप में, अब साथ मिलकर जीवन जीना पड़ेगा। आप अकेले अपनी इच्छा से कुछ नहीं कर सकते। न पति केवल अपनी इच्छा से जी सकता है अब, और न पत्नी केवल अपनी इच्छा से जी सकती है। दोनों को एक—दूसरे की इच्छा का ध्यान रखना पड़ता है। और जो ध्यान नहीं रखेगा, बस फिर देखो लड़ाई झगड़ा शुरू। इसलिए, गुण, कर्म, स्वभाव को मिलाकर विवाह करें।

कई लोग मुझसे पूछते रहते हैं गुरुजी, शादी करूं, या नहीं करूं। तो मैं उनसे कहता हूँ, जब आप को भूख लगती है, तब मुझसे पूछने आते हो कि, रोटी खाऊं या न खाऊं। भला ये भी कोई पूछने का सवाल है। शादी करूं, या नहीं करूं। आपको भूख लगती है, तो खा लो, पूछना क्या है? शादी करने की इच्छा है, तो कर लो। नहीं है, तो मत करो। इसमें पूछने की जरूरत क्या है? यह तो आपका व्यक्तिगत प्रश्न है। इसका निर्णय आपको स्वयं करना है। फिर वो कहते हैं कि हमने फैसला कर लिया है कि हमको शादी करनी है। तो कैसे करें? हम कहते हैं, जैसा ऋषियों ने बताया है, गुण, कर्म, स्वभाव मिला कर शादी करो। बोले, क्या मिलाएँ, गुण, कर्म में, थोड़ा हमको समझाइये।

सबसे पहली बात, सबसे बड़ी बात, सबसे बड़ी महत्वपूर्ण बात, “जो लोग शादी कर रहे हैं, लड़का—लड़की, उन दोनों का धर्म एक होना चाहिए।” हमारे मनुष्य जीवन में सबसे महत्वपूर्ण बात है धर्म। धर्म के नाम पर इतने लड़ाई—झगड़े हैं, इस दुनिया में, चाहे और किसी चीज पर न हो, धर्म के पीछे आदमी इतना

कट्टर है, मरने को तैयार है। धर्म नहीं छूटना चाहिए। अगर आपका धर्म एक नहीं है, भगवान आप का एक नहीं है, विचार आपका एक नहीं है, तो गृहस्थी में सुख नहीं होगा। दिल्ली के प्रताप बाग में एक परिवार में मैं प्रवचन कर रहा था, तो एक युवक आया। उसने मेरा प्रवचन सुना, उसको अच्छा लगा। तो वो युवक कहने लगा, गुरुजी मेरे घर पर चलोगे, मैंने कहा, हां चलूंगा। मैं उसके घर गया। भोजन किया। फिर मैंने पूछा, आपके घर में कितने लोग हैं? बोले चार। कौन-कौन हैं? एक मैं हूँ, एक मेरा भाई है और माता-पिता हैं। तो मैंने कहा, आप तो आर्य समाज में आये थे, आपका भाई नहीं आया, आपके माता-पिता भी नहीं दिखाई दिये। तब उसने असली बात खोली। उसने कहा, “देखिए गुरुजी ऐसा है, मैं तो अभी दो साल से आर्य-समाज में जाने लगा हूँ। और जो मेरा भाई है, वो ब्रह्मकुमारी सम्प्रदाय में जाता है। मेरी माता जी हनुमान मंदिर में जाती हैं और मेरे पिताजी गुरुद्वारे में जाते हैं।”

अब बताइए, एक घर में चार व्यक्ति, चार धर्म। बताइए कैसे संगठन होगा, कैसे घर में शांति होगी। मान लो, इस घर में कोई कार्यक्रम हो जाए, कोई सगाई, कोई शादी, कोई मुंडन, कोई नामकरण, तो पहले तो घर के चार सदस्यों में आपस में झगड़ा हो जायेगा, कि कौन सी विधि से मुंडन कराया जाय। गुरुद्वारे की विधि से मुंडन कराएंगे, या हनुमान मंदिर की विधि से कराएंगे या ब्रह्मकुमारी सम्प्रदायिक विधि से कराएंगे या आर्य-समाज की विधि से कराएंगे। सबके सब अपनी बात को ऊँचा रखते हैं। सबके सब कहते हैं कि मेरी बात ठीक है, मैं जिस धर्म को मानता हूँ, वो ठीक है। मैं जिस सम्प्रदाय को मानता हूँ वही ठीक है।

आपस में गुण, कर्म, स्वभाव, विचार मिलाएं। ईश्वर के मामले में एक विचार होना चाहिए। मैं देश भर में घूमता हूँ, आप लोगों से सीखता रहता हूँ। जितना लड़ाई-झगड़ा जितना मतभेद-टकराव धर्म के नाम पर, ईश्वर के नाम पर है, उतना टकराव किसी-चीज के नाम पर नहीं है। और यही सबसे महत्वपूर्ण बात है। मैंने ऐसे-ऐसे घर भी देखे हैं, एक बेटी शादी कर के गई, दूसरे परिवार में। एक साल मुश्किल से बीता, ससुराल छोड़ के मायके वापस आ गई। पूछा, क्या हुआ, क्यों लौट आई? कहने लगी, कि हमारा उनसे धर्म नहीं मिलता। बताओ, सिर्फ इस बात पर ससुराल छोड़ के वापस मायके आ गई, कि हमारा उनका धर्म नहीं मिलता। हम निराकार ईश्वर को मानते हैं, वो

साकार ईश्वर को मानते हैं। हम कहते हैं, ईश्वर निराकार है। आँख बंद करके ध्यान पूजा करनी चाहिए। वो कहते हैं, मूर्ति की पूजा करनी चाहिए। बस इसी बात पर टकराव है। और शादी टूट गई, तलाक हो गया। अब बताइए, गए तो थे, सुख बढ़ाने के लिए। परिणाम क्या निकला? तलाक हो गया। और सिर्फ इसी बात के लिए, कि धर्म नहीं मिलता। मेरा आपसे हाथ जोड़ कर निवेदन है, कृपया अपनी बेटियों को अच्छे परिवारों में भेजे, उनके गुण, कर्म, स्वभाव को मिलाकर भेजे। जहाँ धर्म एक हो, विचार एक हो, ईश्वर एक हो। इस प्रकार की सबसे पहली प्राथमिकता है, उस चीज को ध्यान में रखें।

गुणकर्म, स्वभाव में क्या मिलाना? आर्थिक स्थिति मिलाएं। दोनों परिवारों की आर्थिक स्थिति लगभग एक समान हो। लड़की वाले, लड़के वाले, दोनों परिवारों में सम्पत्ति एक जैसी हो। एक बहुत गरीब हो, एक बहुत अमीर हो, तो वहाँ भी गृहस्थ अच्छा नहीं चल पायेगा।

परम्पराएं होती हैं, लेन-देन की। वो वहाँ ठीक से नहीं निभा पाएंगे। और फिर पता नहीं कितने ताने सुनने पड़ेंगे। वो आप जानते ही हैं, रोज अखबारों में आप भी पढ़ते हैं, हम भी पढ़ते हैं। तू मायके से क्या लाई थी? तेरे मायके वाले भिखारी हैं, भूखे-नंगे हैं, कुछ भी नहीं दिया। जब सगाई करते हैं, शादी करते हैं, तब वो पूछते हैं, हाँ जी! दहेज में क्या देना पड़ेगा। तो वह कहते हैं, नहीं-नहीं, हमें कुछ नहीं चाहिए, हमारी कोई मांग नहीं। और जब व्यवहारिक रूप से शादी होती है, और जब कुछ मिलता नहीं है, तो वे फिर ताने मारते हैं, तू भिखारी है, तू कुछ भी नहीं लाई। वे बेचारी का जीना मुश्किल कर देते हैं। जो बहू आती है घर में, उसको ताने मार-मार के उसका बुरा हाल कर देते हैं। तो इस समस्या से बचने के लिए आर्थिक स्थिति पर भी ध्यान दें।

शादी-विवाह करने से पहले दोनों का शरीर का परीक्षण होना चाहिए, मेडीकल चेकअप होना चाहिए। शरीर में कई प्रकार के ऐसे रोग होते हैं जैसे थैल्सीमिया एक उदाहरण आजकल का। थैल्सीमिया का रोग है किसी को, और उसके लिए डॉक्टर लोग मना कर देते हैं कि तुम आगे सन्तान उत्पत्ति मत करो, वरना संतान ठीक नहीं होगी। वो रोगी होगी और भविष्य में और दुःख भोगना पड़ेगा। शादी से पहले एक-दूसरे का मेडिकल चेकअप भी कराएं।

दोनों लड़के—लड़की का शरीर स्वस्थ हो, आयु भी ठीक हो, विवाह के योग्य हों। और फिर आगे जो इन्कम होने वाली है, शादी होने के बाद जो पति कमाएगा, वो देखें कितने पैसे कमाता है। उससे घर का खर्चा ठीक चलेगा या नहीं चलेगा, कम तो नहीं पड़ेगा? पुरुष इतना धन कमा सके, कि जिससे वो अपने घर का पालन पोषण कर सके। पत्नी का और आगे बच्चों का भी पालन कर सके, इतनी इन्कम होनी चाहिए। और वो इन्कम अच्छे तरीके से होनी चाहिए।

अच्छे वैदिक उपायों से धन कमाएं। चोरी से नहीं, रिश्वत से नहीं, बेईमानी से नहीं, स्मगलिंग से नहीं, ब्लेक मार्केटिंग से नहीं, अंडे—मांस बेचकर के नहीं, शराब बेचकर के नहीं। वेदोक्त उपायों से अच्छे—अच्छे काम करके पैसे कमाएं, ईमानदारी से कमाएं, बुद्धि से कमाएं, मेहनत से कमाएं।

धन कमाना पुरुषों का काम है, स्त्रियों का नहीं। शायद आप मेरी बात से सहमत होंगे, या नहीं होंगे, पता नहीं। पर मैं तो वही सुना रहा हूँ, जो वेदों की बात है, ऋषियों की बात है। धन कमाना पुरुषों का काम है, स्त्रियों का काम नहीं है। स्त्रियों का काम है, संतान का निर्माण करना। जो गृहस्थ की सबसे बड़ी जिम्मेदारी है, बहुत बड़ी जिम्मेदारी है। इसलिए हमारे शास्त्रों में माता को सबसे पहला गुरु बताया है और उसको सबसे ऊँचा बताया है। मातृमान—पितृमान आचार्यमान पुरुषो वेद। वो बालक, वो संतान भाग्यशाली है, जिसको अच्छी विदुषी धार्मिक माता मिले, पढ़ी लिखी, समझदार, धार्मिक। वो संतान बहुत भाग्यवान, जिसका पिता विद्वान और धार्मिक हो। और फिर तीसरा अच्छा गुरु भी, उसको अच्छा धार्मिक मिल जाए। जिसको ये तीन गुरु, अच्छे मिल जाएँ, माता—पिता और आचार्य, वो संतान बहुत भाग्यशाली है। ऐसा हमारे शास्त्रों में बताया है।

माता का काम है, बालक का निर्माण करना, उसको अच्छे संस्कार देना, उसको धार्मिक बनाना, उसके स्वास्थ्य का ध्यान रखना। कुछ माताएँ नौकरी करने जाती हैं, सुबह आठ—नौ बजे निकल गई, शाम को छः बजे घर लौटती हैं। उन्हें दुगना काम करना पड़ता, घर का भी और बाहर का भी। उनको पता ही नहीं, कि हमारे बच्चे क्या खा रहें, क्या नहीं खा रहे? समय पर खाना, नहीं खाया, ठीक से खाया, या नहीं खाया। बच्चा टेलीविजन—इन्टरनेट में ही तो नहीं लगा रहता? उनके बच्चों का स्वास्थ्य अच्छा नहीं होता। ये ठीक है कि स्त्रियां कुछ पैसे कमा लेती हैं, कुछ भौतिक सुविधाएं उनको मिल जाती है।

पर परिवार का विकास अच्छा नहीं होता, उन बच्चों को माता का प्रेम नहीं मिलता।

घर में नौकर होते हैं, वो जैसे-तैसे खाना खिला देते हैं। जो प्रेम से, जो श्रद्धा से, जो सदभावना से माता अपने बच्चे को भोजन खिलाती है, क्या ऐसा बढ़िया प्रेम से, ऐसी सदभावनाओं से, ऐसे अच्छे संस्कार-विचार से दुनिया में कोई दूसरा खिला सकता है? नहीं खिला सकता। इसलिए वैदिक संविधान ये है, कि पुरुष लोग धन कमाएं, स्त्रियाँ घर का संचालन करें, परिवार की सुरक्षा करें। आए-गए अतिथि का ध्यान रखें, अतिथि की सेवा करें। जैसे बताया था, अतिथि का मुख्य अर्थ था, संन्यासी। और गौण रूप से जो हमारे गेस्ट, मित्र आते हैं या रिश्तेदार आते हैं, वो भी हमारे अतिथि हैं, उनकी भी सेवा करनी होती है। वो सारा घर का संचालन देखभाल करना, व्यवस्था करना, ये स्त्रियों का काम है।

अगली बात आपस में रुचि मिलाएं, हॉबीज। पत्नी की रुचि धार्मिक है, वो भजन सुनती है, भजन गाती है, सत्संग में जाती है। और पुरुष-पति की रुचि फिल्मी है, वो फिल्म में जाता है, पिक्चर देखने जाता है, डांस करने जाता है, पार्टी में जाता है, होटल में घूमता है। दोनों की रुचि अलग-अलग है, तो दोनों में टकराव होगा। पत्नी कहेगी, चलो सत्संग में, आज बड़े विद्वान आ रहे हैं। आज बढ़िया सत्संग सुनने को मिलेगा। बहुत अच्छी बात सीखने को मिलेगी। और पति कहेगा, नहीं मैं तो पार्टी में जा रहा हूँ, मुझे तो क्लब में डांस करना है। आप बताइये, घर में संगठन कैसे होगा, घर में सुख शांति कैसे होगी? इसलिए जो गुण, कर्म, स्वभाव मिलाना है, उसमें रुचि को भी मिलाएं। अगर पत्नी धार्मिक है, धर्म-करम में रुचि रखती है, तो पुरुष भी वैसा होना चाहिए, उसी तरह की रुचि वाला होना चाहिए। और अगर पति जो है, वो पार्टी में घूमने-फिरने डांस करने वाला मिलता है, तो उसको पत्नी भी उस तरह की मिले, ताकि कम से कम दोनों में तालमेल तो बना रहे, एकरूपता तो बनी रहे। इसलिए विवाह के बाद ये विधान किया गया कि, अकेले कहीं मत जाओ, पति-पत्नी दोनों साथ में जाओ। पार्टी में जायें, तो दोनों साथ में जायें। शॉपिंग में जा रहें हैं, तो चलो अकेले भी जा सकते हैं। कहीं विवाह संस्कार है, कोई रिश्तेदारी है, बिरादरी है, कोई समाजिक कार्यक्रम हैं, वहाँ जाएँ, तो इकट्ठे जाएं। सत्संग में जाएं, तो इकट्ठे जाएं। मैं देखता हूँ सत्संग में, कई परिवारों

में से स्त्री तो आती है, उनके पति नहीं आते। और कहीं पुरुष लोग आते हैं, तो उनकी पत्नियां नहीं आती। तो इस बात को भी नोट करें। जिन परिवारों में से स्त्रियाँ आती हैं सत्संग में और पुरुष नहीं आते अथवा जिन परिवारों में से पुरुष तो आते हैं सत्संग में, और स्त्रियां नहीं आती हैं। उनके घरों में झगड़े होते हैं। आप सोचेंगे, कि झगड़े क्यों होते हैं, इसलिए झगड़े होते हैं कि यदि पत्नी गई सत्संग में, तो उसको अच्छी बात समझ में आ गई। पति को नहीं आई, वो आया नहीं सुनने। और यदि पति सत्संग में आया और उसको समझ में आ गई। और पत्नी नहीं आई, तो उसको समझ में नहीं आई। तो परिणाम ये कि, दोनों के विचारों में टकराव हो जाएगा, विचार में भेद हो जाएगा, और फिर घर में झगड़ा हो जाएगा। इसलिए ऋषियों ने कहा है कि जहाँ भी जाएँ, दोनों साथ में जाए। सत्संग में जाएँ तो भी दोनों साथ में जाएँ, पार्टी में जाएँ तो भी साथ जाएँ। तो एक दूसरे का संतुलन बना रहे, नियंत्रण बना रहे, एक दूसरे की इच्छा के विरुद्ध कोई काम न करें, तो इस प्रकार से भी रुचि को मिलाएं।

गृहस्थ में जाना हो तो जाओ

अब जब ब्रह्मचर्य आश्रम पूरा हो गया, विद्यार्थी पढ़-लिखकर विद्वान हो गया, जैसी भी उसकी योग्यता बनी, उसको योग्यता अनुसार वैसी ही डिग्री दी जाएगी, वैसा पद दिया जाएगा, वैसा सम्मान दिया जाएगा, वैसा अधिकार दिया जाएगा। उसके बाद फिर जीवन का दूसरा भाग आरंभ होगा। जिसका नाम है—गृहस्थ आश्रम।

अब प्रश्न यह है कि गृहस्थ जीवन को सुखी कैसे बनाएं? ये जो जीवन का दूसरा भाग है, उसके लिए वेदों में पहले तो ये बताया कि गुरुकुल में जा कर अच्छी तरह विद्या पढ़कर विद्वान बनना चाहिए, अपनी व्यक्तिगत योग्यता बनानी चाहिए। जिससे कि हम कुछ धन कमा सकें।

लड़के अपने गुरुकुलों में पढ़कर तैयार हो गए, लड़कियाँ अलग अपने गुरुकुल में पढ़कर तैयार हो गईं। अब उनसे पूछा जाएगा कि आपको विवाह करना है या नहीं? तो दस हजार में कोई दो-चार होंगे, जो कह देंगे, हमको ब्रह्मचारी रहना है, हमको शादी नहीं करनी। वे तो गुरुकुल में ही रह जाएंगे। ठीक भी है कि जब उनको शादी करनी ही नहीं, तो घर जाकर क्या

करेंगे? इसलिए वे ब्रह्मचारी गुरुकुल में ही रहेंगे और अपनी साधना—तपस्या करेंगे, वैराग्य को और ऊँचा उठाएंगे। जबकि शेष लोग कहेंगे कि हमको शादी करनी है, हम गृहस्थ में जाएंगे, बड़ा सुख मिलेगा। लोग पैसे कमाते हैं, खाते—पीते हैं, फैक्ट्री चलाते हैं, मौज—मस्ती करते हैं, तो हमको भी ऐसा लगता है कि गृहस्थ में सुख होगा। इसलिए हम भी सुख भोगने के लिए जाना चाहते हैं। गुरुजन उनको विद्यार्थी जीवन में बताएंगे, कि हम ये नहीं कहते कि गृहस्थ में सुख नहीं है, बिल्कुल है, परन्तु सुख के साथ बहुत सारा दुःख भी है, बहुत सारी समस्याएं, चिंताएं, झंझट, टेंशन भी हैं, तुम गृहस्थ में न जाओ तो अच्छा है।

पहले सुख, बाद में दुःख

इस संसार में प्रायः 20—25 साल की उम्र में तो संसार में सुख दिखता है, दुःख कहाँ दिखता है। दुःख तो पैंतालीस—पचास के बाद में समझ में आता है कि कितना झंझट है, कितना दुःख है, कितनी समस्या है। इसलिए अधिकांश लोगों ने कहा कि, हमें तो सुख दिखता है, हम तो शादी करेंगे। इस पर गुरुजनों ने कहा ठीक है, शादी करो, गृहस्थ में जाओ, पर रहना नियम से। अगर गृहस्थ में जाकर कुछ नियमों का पालन करेंगे, तो ये गृहस्थ आश्रम आपको थोड़ा बहुत सुख देगा और पाँच साल में, दस—पंद्रह साल में, आपको गृहस्थ में रहकर अनुभव हो जाएगा कि गृहस्थ में दुःख भी है, गृहस्थ में झंझट भी है, गृहस्थ में समस्याएं भी हैं। वो भी तब समझ में आएगा, जब इस परीक्षण की दृष्टि से आप गृहस्थ में जाएंगे कि “मैं देखना चाहता हूँ, गृहस्थ में सुख अधिक है या दुःख अधिक है?” फिर दस—पन्द्रह साल रहकर कुछ अनुभव करेंगे, परीक्षण करेंगे, तो समझ में आ जाएगा कि यहाँ सुख कितना और दुःख कितना है।

अब मान लीजिए, किसी व्यक्ति ने 25 साल की उम्र में शादी की और 15 साल गृहस्थ में रह लिया। अब उम्र हो गई उसकी चालीस। बस चालीस तक उसको समझ में आ जाएगा, कितना सुख है और कितना दुःख। गुरुजन कहते हैं कि जाओ, शादी—विवाह करो, कमाओ—खाओ, मजा करो, संतान उत्पत्ति करो, पाँचों इन्द्रियों के सुख भोगो, पर भोगना इसी हिसाब से, परीक्षण की दृष्टि से ही।

आश्रम का आधार मेहनत

गृहस्थ का नाम भी आश्रम है। ब्रह्मचर्य का नाम भी आश्रम है, वानप्रस्थ भी आश्रम है और संन्यास भी आश्रम है। संस्कृत भाषा में आश्रम के “आ” का मतलब होता है—“चारों ओर से।” इसी तरह “श्रम” का अर्थ है—“मेहनत करना।” इस प्रकार, इसमें चारों ओर से मेहनत की जाती है, उसका नाम आश्रम है।

ब्रह्मचर्य आश्रम में चारों ओर से खूब मेहनत करनी होती है, तब ब्रह्मचारी अच्छा बनता है। गृहस्थ आश्रम में भी खूब मेहनत, बहुत तपस्या करनी पड़ती है, तब गृहस्थ भी अच्छा बनता है। वानप्रस्थ भी आश्रम है। वहाँ भी बहुत तपस्या करनी पड़ती है। तब एक अच्छा वानप्रस्थी बनता है। और चौथा संन्यास, वो भी आश्रम है, उसमें भी खूब मेहनत करनी पड़ती है, तब जाकर संन्यास अच्छा बनता है।

आनंद सिर्फ मोक्ष में मिलेगा

आप पूछेंगे कि यहाँ तो चारों आश्रम में तपस्या ही तपस्या है, तो फिर मौज—मस्ती कहाँ है, आनंद कहाँ है? इसका उत्तर है—“मोक्ष में।” इसलिए जिसको आनंद की इच्छा हो, वो तो मोक्ष की तैयारी कर ले। यहाँ संसार में पूरा आनंद नहीं है, बहुत थोड़ा सा है। यहाँ तो संघर्ष है, लड़ाई है। अच्छाई और बुराई की लड़ाई है। और ये लड़ाई, अनादिकाल से चल रही है।

धीरे—धीरे सब समझ में आएगा

मेरी बातें आपको कितनी समझ में आएंगी, वो मुझे नहीं मालूम, पर मुझे वो ही कहना है, जो सत्य है। जो ईश्वर ने बताया है, जो ऋषियों ने समझाया है। हां, मैं कोशिश करूंगा कि वेदों और ऋषियों की बातें आपको समझ में आएँ। अगर आप समझने के उद्देश्य से, इस दृष्टि से मेरी बातें पढ़ेंगे—समझेंगे, तो धीरे—धीरे आपको ये बातें समझ में आ जाएंगी।

दुख नहीं, सुख चाहिए...

क्या आपमें से कोई दुःख भोगना चाहता है? हां या न? न। क्या आप में से कोई व्यक्ति सुख भोगना चाहता है? हां।... तो आपका सबका उत्तर एक

ही है। दुःख भोगना कोई भी नहीं चाहता, सुख भोगना सभी चाहते हैं। कैसा सुख चाहते हैं—थोड़ी देर का या लगातार? लगातार! केवल सुख चाहते हैं, या साथ में दुःख भी चाहते हैं? केवल सुख चाहते हैं। बिल्कुल ठीक। ऐसा सुख यहां दुनिया में मिलता है? नहीं मिलता। केवल सुख मिलता है? नहीं मिलता। लगातार सुख मिलता है यहां? नहीं मिलता। तो जो चीज हम चाहते हैं, वो तो यहां मिलती नहीं। तो कहां मिलती है?

मोक्ष में मिलता है लगातार सुख

ईश्वर ने वेदों में ये समझाया, कि 'मोक्ष' प्राप्त करो, ये हमारे जीवन का उद्देश्य है। पिछली सृष्टि में हमने कुछ कर्म कर रखे थे। उन किए हुए कर्मों का फल भोगने के लिए हमको इस संसार में आना पड़ा और अपना कर्मफल भोगना पड़ा। वो तो हम भोग ही रहे हैं। और साथ-साथ ईश्वर ने कुछ अच्छी सुविधाएँ और दे दीं, ये बुद्धि दे दी, बोलने के लिए भाषा दे दी, हाथ दे दिए और कर्म करने की स्वतंत्रता दे दी। चार वेदों का ज्ञान दे दिया। अच्छे-अच्छे गुरुजन दे दिए। माता-पिता दे दिए। और कहा— इनकी सहायता से फटाफट 'मोक्ष' की तैयारी करो।

अगर किसी व्यक्ति ने जन्म ले लिया, शरीर धारण कर लिया, फिर वह दुःख से नहीं बच सकता। किसी को कम दुःख आएगा, किसी को अधिक आएगा। दुःख से कोई बच नहीं सकता। जब तक जन्म लेंगे, तब तक हमको दुःख भोगना पड़ेगा। अगर बचना हो, तो उसके लिए एक ही रास्ता है—अगला जन्म लेना बंद करो। इसे नोट कर लीजिए। आपकी 20-50 समस्याओं का उत्तर है, सिर्फ इस एक वाक्य में। "यदि दुःख से छूटना चाहते हैं तो अगला जन्म लेना बंद करो"। बस यही हमारे जीवन का उद्देश्य है। इसीलिए भगवान ने हमको यहां भेजा है संसार में। मनुष्य बनाया है कि जैसे-तैसे करके फटाफट मोक्ष प्राप्त करो।

प्रश्न : हमारे जीवन का अंतिम लक्ष्य क्या है, उसे कैसे हासिल करें?

उत्तर : जीवन का अंतिम लक्ष्य है मोक्ष प्राप्ति। मोक्ष का मतलब जन्म-मरण के चक्कर से छूटना। दूसरे शब्दों में, सारे दुःखों से छूटना, ये जीवन का अंतिम लक्ष्य है। लम्बा लक्ष्य है, समय लगेगा। कितना समय लगेगा? हर एक के लिए

अलग—अलग समय है। समय सबके लिए, कोई समान रूप से निर्धारित नहीं है। हर व्यक्ति की अपनी बुद्धि है, योग्यता है, उसके संस्कार हैं, उसका पुरुषार्थ है, इन सब बातों पर आधारित है कि वो कितने समय में लक्ष्य तक पहुँच जाएगा।

कितने ही जन्मों से हम इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए पुरुषार्थ करते आ रहे हैं, और अभी तक वो लक्ष्य प्राप्त नहीं हुआ, तो हमें आगे भी ऐसे ही करना होगा। इस लक्ष्य के लिए हम मेहनत करते रहेंगे। वेदों को पढ़ना होगा, वैदिक ऋषियों के ग्रंथ पढ़ने होंगे, जिससे हमको समझ में आएगा, मोक्ष क्या होता है, मोक्ष कब मिलता है, मोक्ष किसको मिलता है, कैसे मिलता है, कितनी योग्यता होने पर मिलता है। उसके अनुसार फिर हमको समाज सेवा, देश की सेवा, धर्म की सेवा, निष्काम कर्म करना होगा। और साथ में, बैठकर ईश्वर का ध्यान करना होगा, समाधि लगानी होगी और उपासना करनी होगी।

ये तीन काम करने होंगे:— अपने ज्ञान को शुद्ध करना, निष्काम कर्म करना और ईश्वर उपासना करना। जब ये तीनों काम ऊँचे स्तर के बन जाएंगे, बहुत ऊँचे स्तर तक पहुँच जाएंगे। तब इसका फल ये होगा कि हमारे अन्दर जितनी अविद्या होगी, जितना राग, द्वेष, काम, क्रोध, लोभ, ईर्ष्या, द्वेष, अभिमान, ये जितने भी सारे दोष होंगे, ये दोष धीरे—धीरे कम होते जाएंगे। और कम होते—होते एक दिन पूरे नष्ट हो जाएंगे। जिस दिन ये दोष पूरे समाप्त हो जाएंगे, उसके बाद मोक्ष हो जाएगा। फिर उसके बाद अगला जन्म नहीं होगा।

यही हमारा लक्ष्य है, वहाँ तक हमको पहुँचना है। इस जीवन में जितना हो सके, इस कार्य को करते रहें। जितने दोष कम होंगे, उतना अच्छा। जितना काम बच गया, उतना अगले जन्म में करेंगे। एक जन्म, दो जन्म, चार जन्म, दस जन्म, जिसको जितना समय लगेगा, वो लगेगा। जितनी स्पीड से चलेंगे, उतना जल्दी पहुँचेंगे। जितना धीरे चलेंगे, उतना देर में पहुँचेंगे। हर व्यक्ति स्वतंत्र है। अपनी इच्छा बुद्धि से पुरुषार्थ करें। अंतिम लक्ष्य मोक्ष है, इसको हमें प्राप्त करना होगा।

मोक्ष में क्या होता है?

तीन सुविधाएं होती हैं मोक्ष में। ये ऋषियों की बातें हैं, जो वेदों को पढ़कर ऋषियों ने हमें समझाई। उन्हीं की बातें सुनाउंगा, मैं अपनी कोई बातें नहीं

सुनाता। पहली बात— सारे दुःखों से छूटना। दूसरी— ईश्वर का उत्तम आनंद प्राप्त करना। तीसरी बात— पूरे ब्रह्माण्ड की सैर करना। ये तीन बातें होती हैं मोक्ष में।

मेरा प्रश्न—छोटा सा उत्तर—हां या न में दीजिएगा। क्या आप सारे दुःखों से छूटना चाहते हैं? 'हाँ'। क्या आप ईश्वर का उत्तम आनंद प्राप्त करना चाहते हैं? 'हाँ'। क्या आप पूरे ब्रह्मांड की सैर करना चाहते हैं? 'हाँ'। तो आपने तीनों प्रश्नों के उत्तर में 'हाँ' बोला। ये तीनों बातें होती हैं मोक्ष में। इसका मतलब, हमारे जीवन का उद्देश्य क्या हुआ? बस ये मोक्ष हमारे जीवन का उद्देश्य है। इसलिए भगवान ने हमको भेजा है इस संसार में। ये तो हमारा लक्ष्य हो गया, उद्देश्य हो गया।

जब आप यात्रा शुरू करते हैं, तो पहले घर में बैठकर सोचते हैं—कहां जाना है? बम्बई जाना है, बैंगलोर जाना है, दिल्ली जाना है—कहां जाना है? उसके बाद यात्रा शुरू करते हैं। ऐसा नहीं, कि सामान बांधकर, स्टेशन पर पहुंचकर, फिर सोचते हैं, कहां जाना है। ऐसे नहीं होती यात्रा। पहले यात्रा का लक्ष्य निर्धारित होता है, उसके बाद उस तरह से सारी तैयारी की जाती है।

लक्ष्य का पता चल गया। हमारे जीवन का लक्ष्य है—मोक्ष प्राप्ति। जो—जो चीज हमें चाहिए वो यहां नहीं मिलती है। वो मोक्ष में मिलती है। तो लक्ष्य बनाने के बाद अब साधन ढूँढ़ेंगे। तो, लोगों ने पूछा, कि हम मोक्ष तक कैसे पहुंचेंगे? ऋषियों ने बताया, कि वेदों में ऐसा लिखा है। चार वर्ण और चार आश्रम। ये मोक्ष का रास्ता है। जिसको मोक्ष में जाना हो, वो चार वर्ण और चार आश्रम में से गुजरेगा। और स्टेप बाई स्टेप एक—एक करके ऊँचे स्तर को प्राप्त करेगा। इस प्रकार से वो मोक्ष तक पहुंच जाएगा।

चार वर्ण कौन से? ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, ये चार वर्ण हैं। वर्ण का मतलब व्यवसाय, आपका बिजनेस, ऑक्यूपेशन, ऐसा काम धंधा जिससे आप कुछ धन कमाते हैं, रोटी कमाते हैं, खाना—पीना खर्चा करते हैं।

वेदों के अनुसार ये चार वर्ण, जन्म से नहीं माने जाते, ये कर्म से माने जाते हैं, गुण, कर्म, योग्यता से माने जाते हैं। ब्राह्मण, विद्या संबंधी कार्य करने वाला। क्षत्रिय, रक्षा का काम करने वाला—सेना, पुलिस, न्यायाधीश। और वैश्य, खेती—व्यापार, उद्योग—धंधे करने वाला। और शूद्र, फोर्थ क्लास मजदूरी करने वाला सेवक वर्ग।

शूद्र का मतलब अच्छूत नहीं है। शूद्र का मतलब—सेवक। जो सेवा करता है, जिसको हम लेबर क्लास कहते हैं, या फोर्थ क्लास कहते हैं। मजदूर मेहनत करने वाला, चपरासी पटेवाला।

सबको अपनी योग्यता बढ़ाते हुए, सबसे ऊँचे—ब्राह्मण स्तर पर पहुँचना होगा तो आगे मोक्ष का रास्ता खुलेगा।

ऐसे ही ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, संन्यास, ये चार 'आश्रम' हैं। हमें इन चार आश्रमों में से गुजरना होगा। सबसे ऊँचा आश्रम संन्यास है। अपने यहां भारतीय परम्परा में छोटा व्यक्ति बड़े के पांव छूता है, या बड़ा व्यक्ति छोटे के पांव छूता है? छोटा व्यक्ति बड़े के पांव छूता है। ये अपने यहां भारतीय परम्परा है। अब इस परम्परा के हिसाब से बताइए— संन्यासी व्यक्ति, गृहस्थी के पांव छूता है? या गृहस्थी, संन्यासी के पांव छूता है? गृहस्थी, संन्यासी के पांव छूता है। बताइए, कौन छोटा हुआ? गृहस्थी, संन्यासी के पांव छूता है। इसका मतलब गृहस्थी छोटा हुआ और संन्यासी बड़ा हुआ।

छोटी कक्षा पहले पढ़ते हैं, बड़ी कक्षा बाद में पढ़ते हैं। इस नियम से बताइए— पहले गृहस्थी बन कर, बाद में संन्यासी बनते हैं या पहले संन्यासी बनके, बाद में गृहस्थी बनते हैं? पहले गृहस्थी बनते हैं, बाद में संन्यासी बनते हैं। जो कक्षा पहले पढ़ी जाती है—वो कौन सी? छोटी। तो वेदों के अनुसार, ऋषियों के अनुसार गृहस्थ आश्रम छोटा, संन्यास आश्रम बड़ा। परन्तु गृहस्थ का महत्व भी कम नहीं है। अलग—अलग दृष्टिकोण से हरेक आश्रम का अपना—अपना महत्व है।

वेदों को पढ़कर ऋषियों ने भी समझाया है— उन्होंने कहा कि अर्थव्यवस्था की दृष्टि से—खर्च—बर्च की व्यवस्था से, प्रबंध व्यवस्था आदि की दृष्टि से गृहस्थ आश्रम बड़ा है। अर्थव्यवस्था की दृष्टि से, ईकोनॉमिक्स, खानपान, खर्चा, दान देना, सेवा करना आदि—आदि, इस दृष्टि से तो गृहस्थ बड़ा है। क्योंकि ब्रह्मचारी को भी गृहस्थ ही खर्चा देता है और वानप्रस्थी का भी खर्चा कभी—कभी कर लेता है।

कभी वानप्रस्थी के पास अपने पैसे होते हैं तो वो अपने खर्च कर लेता है, नहीं होते हैं तो वो भी गृहस्थी से ही खर्चा लेता है। और संन्यासी का खर्चा भी गृहस्थी ही उठाता है। इस प्रकार खर्च की दृष्टि से, अर्थव्यवस्था की दृष्टि

से गृहस्थ आश्रम बड़ा है। लेकिन विद्या—विज्ञान, ज्ञान—विज्ञान की दृष्टि से, वैराग्य की दृष्टि से, सेवा परोपकार की दृष्टि से निष्काम कर्म करने की दृष्टि से संन्यास आश्रम बड़ा है।

तो एक व्यक्ति कहने लगा, कि यदि गृहस्थ व्यक्ति धन न दे, खर्चा—वर्चा न करे, तो फिर संसार कैसे चलेगा? मैंने कहा—आपकी बात बिल्कुल ठीक है कि अगर गृहस्थी खर्चा न देगा, तो समाज नहीं चलेगा। समाज तो खर्च पर ही चलता है, दान पर ही चलता है। फिर मैंने उससे पूछा—अच्छा यदि हमारे पास धन तो है, पर विद्या नहीं है तो बिना विद्या के क्या हम धन का सही उपयोग कर पाएंगे? नहीं कर पाएंगे। दुरुपयोग करेंगे, कोई जुआ खेलेगा, कोई शराब पीएगा, कोई उलटे—सीधे काम करेगा, धन का विनाश कर देगा। इससे लाभ के स्थान पर हानि होगी। धन तभी उपयोगी है, जब उसके साथ में विद्या हो, विज्ञान हो।

संन्यासी व्यक्ति, समाज को विद्या देता है। अब धन और विद्या की तुलना करें, तो धन बड़ा या विद्या बड़ी? विद्या बड़ी। जो विद्या देता है, वो बड़ा हुआ। जो विद्या—विज्ञान वाला व्यक्ति है, वो संन्यास आश्रमी है, और वो बड़ा होता है। तो हमको आश्रमों में से चलते हुए अंतिम आश्रम—संन्यास तक पहुंचना होगा। ये दो चीजें प्राप्त करके वर्णों में ब्राह्मण वर्ण, और आश्रमों में संन्यासी, ये दो स्थितियां प्राप्त करके, फिर आगे हमारा मोक्ष का रास्ता खुल जाएगा, आगे मोक्ष हो जाएगा।

इस गृहस्थ के कर्तव्यों को, गृहस्थ की जिम्मेदारियों को, गृहस्थ की पद्धति को समझें। जिससे कि आप अपने वर्तमान गृहस्थ जीवन को अच्छा बना सकें, सुखी बनाएं और आने वाली पीढ़ियों के लिए एक अच्छा मार्गदर्शन प्रस्तुत करें, कि आपका अनुकरण करके आने वाली पीढ़ियां भी अपने गृहस्थ जीवन को सुखी बनाएं।

महर्षि मनु जी कहते हैं, चार वेदों को पढ़ करके फिर गृहस्थ में जाना चाहिए। अगर चार वेद न पढ़ सकें तो तीन वेद पढ़ करके, कोई व्यक्ति तीन भी नहीं पढ़ सके, तो वो दो पढ़ लेवे, फिर गृहस्थ में प्रवेश करे। और किसी ने कहा, कि हम तो दो भी नहीं पढ़ सकते तो महर्षि मनु जी ने कहा— अच्छा जी, कम से कम एक वेद तो पढ़ लो। एक वेद अंग—उपांग सहित। मतलब

दर्शन, व्याकरण, उपनिषद् आदि ये सारे शास्त्र पढ़ लो। उसके बाद गृहस्थ में जाना चाहिए। तब तो गृहस्थ में आपको सुख मिलेगा।

एमबीए करना हो, तो उसका सिलेबस होता है, सीए करना हो तो उसका सिलेबस होता है। एमटेक, एमसीए करना हो, तो उसका भी सिलेबस होता है। लेकिन गृहस्थ में प्रवेश करना हो, तो उसका कोई सिलेबस नहीं। अब कोई सिलेबस ही नहीं, कोई पढ़ाई—लिखाई ही नहीं, तो डिग्री बिना कैसे सफलता मिलेगी?

तीसरा चौथा आश्रम भूलना गलत

यदि कोई परीक्षण की दृष्टि से गृहस्थ को नहीं जिएगा और बस अंधाधुंध पाँचों इन्द्रियों के भोगों में डूबता रहेगा, अंधाधुंध पैसे कमाएगा, खाएगा—पिएगा, डांस करेगा, उल्टे—सीधे काम करेगा, तब उसको 15 साल तो क्या, 50 साल में भी समझ में नहीं आएगा कि संसार में दुःख है। वो सारा जीवन फिर गृहस्थ में ही बैठा रहेगा। वो तीसरा आश्रम नहीं समझ पाएगा और तीसरे आश्रम में प्रवेश करने की बात भी नहीं सोचेगा। जैसा कि आजकल का माहौल है। आजकल लोग चार आश्रम को नहीं जानते, दो को ही जानते हैं, ब्रह्मचर्य और दूसरा गृहस्थ आश्रम बस। और तीसरा—चौथा भूल जाते हैं।

संन्यास आश्रम में कोई इक्का—दुक्का दिखता है, वानप्रस्थ में भी कोई—कोई दिखता है। बाकी सब तो गृहस्थ में ही रहते हैं क्योंकि उन्होंने परीक्षण नहीं किया। गृहस्थ को कैसे जीना चाहिए, उस ढंग से नहीं जिया, बस आंख बंद करके अंधाधुंध भोगों के पीछे पड़े रहे। उनको समझ में नहीं आया, कि गृहस्थ छोड़ना भी चाहिए, गृहस्थ से बाहर भी निकलना चाहिए। आगे वानप्रस्थ आश्रम भी है, उसमें भी जाना चाहिए। गृहस्थ की जो समस्याएं हैं, इनसे कभी तो पीछा छूटना चाहिए। इन समस्याओं से छूटने का उपाय, तीसरा वानप्रस्थ आश्रम है। जहां व्यक्ति घर के राग—द्वेष से, मोह—माया से, आसक्ति से छूट सकता है और अपने जीवन के लक्ष्य को आगे प्राप्त कर सकता है। ये वे ही लोग कर पाएंगे, जो गृहस्थ को परीक्षण की दृष्टि से जिएंगे कि हमें ये परीक्षण करना है कि संसार में कितना सुख और कितना दुःख है।

प्रश्न : पति—पत्नी पूरा जीवन साथ रहें, क्या वेद में ऐसा भी कोई विधान है?

उत्तर : पति-पत्नी पूरा जीवन साथ रहें, वेदों में ऐसा कोई विधान नहीं है। वेदों के अनुसार ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तीन वर्णों में पति-पत्नी को आगे चलकर गृहस्थ पूरा करके, फिर वानप्रस्थ में प्रवेश करना चाहिए। उनके जीवन का उद्देश्य मोक्ष प्राप्ति होना चाहिए। इसी उद्देश्य से वो वानप्रस्थ आश्रम में जाएं, साधना करें।

वानप्रस्थ में भी पति-पत्नी साथ में रह सकते हैं। बस, वो गृहस्थ वाला संबंध नहीं रखेंगे। इस अवधि में कोई शारीरिक चेष्टा, कुचेष्टा आदि नहीं करेंगे। भले ही साथ में रहें, एक-दूसरे की सेवा सहयोग करें, एक-दूसरे का साथ दें, उसमें कोई बुरी बात नहीं। दोनों मिलकर साधना करें और ईश्वर प्राप्ति के लिए प्रयत्न करें, परंतु जब संन्यास लेना होगा, तब फिर साथ में नहीं रह पाएंगे। पति-पत्नी को वानप्रस्थ के बाद वैराग्य होने पर, संन्यास में अलग-अलग होना होगा।

शूद्रों के लिए तो ठीक है छूट है, उनको मोक्ष की बात समझ में आती नहीं, इसलिए उनके लिए ऐसा नियम नहीं है। शूद्र जो कम योग्यता वाले हैं, सामान्य योग्यता वाले हैं, वो पति-पत्नी जीवन भर साथ रह सकते हैं। शूद्रों के लिए छूट है, अन्यो के लिए नहीं।

प्रश्न : मानव की औसत आयु कम हो गई है, इसलिए इन आश्रमों की आयु उस हिसाब से कब से शुरू होती है। कुछ लोगों की तो संन्यास आश्रम की आयु तक मृत्यु भी हो जाती है, तो ऐसी स्थिति में क्या करें?

उत्तर : सामान्य रूप से पुराने समय के हिसाब से पच्चीस-पच्चीस वर्ष के चार आश्रम माने जाते थे। ब्रह्मचर्य आश्रम 25 वर्ष तक, गृहस्थ आश्रम 25 वर्ष तक, वानप्रस्थ आश्रम 25 वर्ष तक और फिर आगे जीवन के चौथे 25 वर्ष के भाग में संन्यास आश्रम। इस तरह 100 वर्ष औसत आयु मानकर चार बराबर भागों में आश्रम-काल का विभाजन होता था।

आजकल औसत सौ वर्ष तक तो लोग जी नहीं पाते। कोई 60, 70 कोई-कोई 80 तक भी चले जाते हैं। इस आयु तक शरीर की शक्ति भी बहुत घट जाती है, कम हो जाती है। इसका एक कारण यह है कि हमारा जीवन जीने का तरीका ही गलत हो गया है। हम गृहस्थ आश्रम में ही सारी शक्ति खर्च कर देते हैं। इस वजह से वानप्रस्थ, और संन्यास के लिए शक्ति बचती

ही नहीं। 12-12, 15-15 घंटे काम, धंधा, व्यापार करते हैं। थका-थकाकर चूर कर देने वाली काम करने की पद्धति ठीक नहीं है। फिर भी सब बातें ध्यान में रखकर आज की तारीख में पुरुषों को 25 वर्ष तक तो ब्रह्मचर्य का पालन करना ही चाहिए। फिर 25, 26, 28 में शादी-विवाह करना चाहिए। स्त्रियों को 18-20-22 वर्ष में शादी-विवाह कर लेना चाहिए। फिर 50, 52, 55 की उम्र तक वानप्रस्थ में प्रवेश करना चाहिए। तब तक बच्चे बड़े हो जाएंगे। उनकी भी शादी हो जाएगी और कोई पोता-पोती भी हो जाएगा। फिर व्यक्ति अपने गृहस्थ के कर्तव्यों से मुक्त हो जाएगा। फिर वो 50, 52, 55 वर्ष में वानप्रस्थ आश्रम में चला जाएगा और 10 साल, 15 साल वानप्रस्थ आश्रम में तपस्या करेगा। फिर उसकी उम्र हो जाएगी 65 के आसपास। इसलिए गृहस्थ में सारी शक्ति खर्च न करें। कुछ शक्ति बचाकर रखें ताकि वानप्रस्थ में उस शक्ति का उपयोग कर सकें। आगे फिर संन्यास में भी शरीर में बची हुई शक्ति का लाभ ले सकें।

65 साल तक अगर वो साधना करता है, 52 के बाद, 12, 13 साल वानप्रस्थ आश्रम में साधना करने से उसकी वैराग्य की स्थिति अच्छी ऊँची हो जाए, तो फिर 65 के आसपास संन्यास ले सकता है। आजकल की स्थिति को देखते हुए यदि 65 में भी उसको वैराग्य न हो पाए तो फिर संन्यास लेना कोई आवश्यक नहीं है, वो तो कंडीशनल है। यदि वैराग्य हो, तो ही संन्यास लेना है, नहीं तो वानप्रस्थी बना रहे पूरा जीवन, उसमें कोई आपत्ति नहीं है। तो ये हुई आश्रमों की आयु के संबंध में चर्चा।

प्रश्न : किन नियमों का पालन कर गृहस्थ को कुछ अच्छा बनाया जा सकता है?

उत्तर : वेदों के आधार पर ऋषियों ने बताया कि एक गृहस्थ को अपनी 24 घंटे की दिनचर्या, (24 घंटे का टाइम-टेबल) बनाना चाहिए। टाइम-टेबल तो ब्रह्मचारी, गृहस्थी, वानप्रस्थी, संन्यासी सबके लिए है।

अपना 24 घंटे का टाइम-टेबल बनाएं...

जो भी व्यक्ति सुख से जीना चाहता है, उसको अपना रोज का टाइम-टेबल बनाना चाहिए। उदाहरण के लिए रात को जल्दी सोना, सुबह जल्दी उठना, एक मोटा सिद्धांत है। वेदों के अनुसार जल्दी सोने का मतलब, रात को 10

बजे सो जाना, जल्दी उठने का मतलब, सुबह 4 बजे उठ जाना। आप कहेंगे, साब 4 बजे तो आधी रात होती है, कैसे उठ जाएंगे? मत उठिए, मैं 4 बजे आपको उठने के लिए नहीं कह रहा हूँ, मैं तो पुराना सिस्टम बता रहा हूँ कि उसका मतलब क्या है। आप जितना पालन कर सकें, उतना कीजिए। जितना पालन करेंगे, उतना लाभ होगा और जितना पालन नहीं करेंगे, नियमों को भंग करेंगे, उतना दुःख बढ़ेगा, उतनी समस्याएं बढ़ेंगी, उतना शरीर में रोग आएंगे और आपके जीवन में परेशानी, कठिनाई उत्पन्न होगी। प्राचीन सिस्टम है, सुबह 4 बजे उठना और पाँच-छह बजे तक दो घंटे में नहाना-धोना, व्यायाम करना और ईश्वर का ध्यान करना। फिर हवन कर लेना। उसके बाद नाश्ता करना। अब आपने अपने बच्चों को गुरुकुल तो भेजा नहीं। बच्चे आपके पास, आपके घर में हैं, तो उनको घर में ही हवन करना, संध्या करना सिखाइए, अपने साथ बैठाइए। आपको भी करना है और आपके बच्चे को भी करना है।

टाइम-टेबल के हिसाब से समय को व्यवस्थित करें। बहुत सारा समय है हमारे पास, पर हम समय को इधर-उधर खर्च कर देते हैं, उसकी ठीक व्यवस्था नहीं करते। फिर शिकायत ये रहती है, कि साहब हमें हवन, संध्या के लिए समय नहीं मिलता। बहुत से लोगों से हम पूछते हैं कि आप अपने घर में हर रोज हवन करते हैं? यज्ञ करते हैं? कोई स्वाध्याय करते हैं? ईश्वर का ध्यान, कोई पूजा-उपासना करते हैं? तो कहते हैं कि नहीं, नहीं करते। हम पूछते हैं क्यों नहीं करते? वो कहते हैं कि, जी समय ही नहीं मिलता।

समय का प्रबंधन दूर करेगा, समय न होने की समस्या.....

ऐसा नहीं है कि साधना, हवन-पूजन और स्वाध्याय के लिए समय नहीं मिलता। समय बहुत सारा है, हम समय को व्यवस्थित नहीं करते, टाइम-मैनेजमेंट नहीं करते। ये निर्धारण नहीं करते कि कितना समय किस काम में खर्च किया जाए। टेलीविजन देखने के लिए, गपशप मारने के लिए, टेलीफोन पर, मोबाइल पर बात करने के लिए बहुत समय मिलता है। फेसबुक पर चैट करने के लिए, वॉट्सएप पर समय खूब खर्च करते हैं। और भी बहुत सारी चीजों में खूब समय लगाते हैं, जैसे कि शॉपिंग में, खेलकूद में पार्टी में, डांस में बहुत सारा समय खर्च करते हैं। पर जो आवश्यक कार्य हों, उनके लिए समय नहीं खर्च करते। तो निवेदन है, उस समय को व्यवस्थित करें, तो आपको बहुत सारा समय मिलेगा।

उस समय में आप हवन भी कर सकते हैं, ध्यान भी कर सकते हैं, स्वाध्याय भी कर सकते हैं। सब कुछ कर सकते हैं, बस कागज पर उसको लिखें। इसी टाइम-टेबल के अंतर्गत और क्या-क्या कार्य, करने चाहिए, क्या-क्या काम जोड़ने चाहिए, अपनी दैनिक दिनचर्या में। तो उसमें सुबह का ध्यान और शाम को ईश्वर का ध्यान करें। चाहे आप पंद्रह-पंद्रह मिनट ही करें, अधिक न सही, सुबह जितना आपको अनुकूलता हो, ईश्वर का ध्यान करें। ऐसे ही पन्द्रह-बीस मिनट शाम को भी ईश्वर का ध्यान करें, दोनों समय रोज ध्यान करें, आपको बहुत लाभ होगा।

प्रश्न : मैं एक किसान हूँ, मैं अपना टाइम-टेबल कैसे बनाऊँ? कभी मुझे समय बहुत अधिक मिलता है, और कभी काम बहुत रहता है। मेरी समस्या यह है कि मुझे संध्या-उपासना के लिए समय ही नहीं मिल पाता है?

उत्तर : आप अपनी एक व्यवस्थित दिनचर्या बनाएँ। कागज पर टाइम-टेबल लिख लेवें। रात को लगभग 9-10 बजे सो गए, सुबह चार-पाँच बजे उठ गए। सुविधा के अनुसार टाइम-टेबल बना लीजिए। जिसमें 15-20 मिनट सुबह और 15-20 मिनट शाम को ध्यान करना, सुबह या शाम को दिन में कम से कम एक बार हवन करना। 20-30 मिनट प्रतिदिन वैदिक ग्रन्थों का (सत्यार्थ प्रकाश आदि का) स्वाध्याय करना। कभी-कभी सत्संग में जाना, जैसा समय मिले, वैसा कार्यक्रम तय करें।

जिन दिनों काम नहीं रहता है, उन दिनों अपनी निश्चित दिनचर्या से चलें। और जब काम अधिक रहता है, तो उन दिनों जब समय मिले, तभी करें, लेकिन संध्या-उपासना करें अवश्य। भले ही थोड़ा आगे-पीछे करना पड़े, पर सुखी गृहस्थ के लिए एक सुनिर्धारित दिनचर्या आवश्यक है।

ध्यान से छू-मंतर हो जाएगा टेंशन.....

जो दिनभर काम करते रहते हैं, उससे चिंता बढ़ती है, तनाव होता है, टेंशन होती है, वो सब दूर हो जाएगा, ध्यान करने से। इसलिए ध्यान का अभ्यास करें। प्रतिदिन पंद्रह- सत्रह मिनट का दैनिक यज्ञ होता है, वो दैनिक यज्ञ सुबह के समय करें।

कुछ लोगों को सुबह समय नहीं मिलता, तो वो शाम को कर लें, सुबह

जल्दी भागना है, ड्यूटी पर लंबा जाना है। 6-7 बजे घर से निकलना है, और सुबह यज्ञ नहीं कर पाते हैं। अथवा बच्चे सुबह यज्ञ में नहीं बैठ पाते, बच्चों को सुबह स्कूल जाना होता है, तो आप शाम को अपने घर में हवन कर सकते हैं। कोशिश करें, बच्चों को जरूर बैठाएं हवन पर। अगर सुबह बैठा सकते हैं, तो सुबह बैठाएं, सुबह नहीं बैठा सकते, शाम को बैठाएं। 24 घंटे में एक बार कम से कम आपके घर में हवन होना चाहिए और बच्चों को उसमें बैठाना चाहिए, तब बच्चों के अच्छे संस्कार बनेंगे।

प्रश्न : जीवन में पैसे का महत्व कितना है?

उत्तर : आज लोगों ने सिर्फ पैसे को केन्द्र बना लिया है। जीवन का लक्ष्य बस इतना ही दिखता है कि बस पैसे कमाओ। दिमाग में भ्रांति ये है कि जितने अधिक पैसे कमा लेंगे, उतने ज्यादा सुखी हो जाएंगे पर ये सत्य नहीं है। एक सीमा तक पैसा आपको सुख देगा। अच्छी बात है, पैसा कमाना चाहिए। हम पैसे के विरोधी नहीं हैं। पैसे के बिना कुछ नहीं होता है। आप घर से बाहर निकलो, तुरन्त खर्चा है। खर्चा है, इसलिए पैसा तो चाहिए न, तभी खर्च कर पाएंगे। वेद भी कहता है, पैसे कमाओ। पर प्रश्न है कितना पैसा कमाएं?

पैसा सुख प्राप्ति के लिए कमा रहे हैं या दुःख प्राप्ति के लिए? सुख प्राप्ति के लिए। इसलिए जिस सीमा तक आपको पैसा सुख देता है, उस सीमा तक पैसा कमाइए, तो कोई आपत्ति नहीं है। एक सीमा के बाद, वो पैसा आपको दुःख देना शुरू कर देगा। जब वो सीमा आ जाए, तो पैसा कमाना बंद। अब आप जो पैसा कमाएंगे, वो आपके लिए परेशानी उत्पन्न करेगा, इसलिए उस सीमा का ध्यान रखें। वो सीमा आप दो साल में, चार साल में पूरी कर पाएं तो यह कठिन है। जितना आपके जीवन भर के लिए खर्च चाहिए, वो दो-चार साल में आप इकट्ठा नहीं कर सकते। धीरे-धीरे कमाएंगे, थोड़ा-थोड़ा कमाएंगे। आपके लिए 25 साल का समय है। गृहस्थ में 25 साल तक धीरे-धीरे, थोड़ा-थोड़ा पैसा इकट्ठा करेंगे, खर्च भी करते जाएंगे, कुछ भविष्य के लिए जमा भी करेंगे। बस उतना ही जमा करेंगे, जितने में आपका पूरा जीवन का खर्चा निकल जाए। अपने खाने-पीने का, बच्चों का, स्कूल का, पढ़ाई का, उनकी शादी का, आपके बुढ़ापे का, बीमारी, ऑपरेशन, चिकित्सा, मंहगाई आदि सारा खर्चा गिन लीजिए और एक फिगर बनाइए कि हमको जीवन भर आराम से जीने के लिए इतना पैसा चाहिए। जिस दिन वो पैसा पूरा हो जाए,

उतना आपका लक्ष्य पूरा हो जाए, उस दिन के बाद व्यापार बंद, नौकरी बंद, सब धंधा बंद। अगर उसके बाद भी आप व्यापार में लगे रहे और पैसा कमाते रहे, तो फिर वो आपके लिए हानिकारक और दुःखदायी होगा। वो फालतू का पैसा क्यों जमा कर रहे हैं, जो न आप खाएंगे, न दान देंगे।

प्रश्न : धन के बारे में थोड़ा और विस्तार से जानकारी दें?

उत्तर : बहुत अच्छी जिज्ञासा है। आप जान लें कि धन की तीन गतियाँ होती हैं—एक दान है, दूसरी भोग और तीसरी विनाश। इन तीन गतियों में से सबसे पहली है, दान। कुछ रुपये अच्छे काम में दान देना चाहिए। जिनसे सच्चाई का प्रचार हो, सच्चाई को प्रोत्साहन मिले। शुभ कर्मों में, वेद प्रचार में, पुस्तक प्रकाशन में, समाज सेवा के लिए, रोगियों के लिए, अनाथों के लिए, विधवाओं के लिए, गाँव के लिए, पशु-पक्षी के लिए कुछ पैसा दान करना चाहिए। यह दान बहुत पुण्य का काम है।

वेदों का सिद्धांत है कि अपनी आय में से कम से कम 10 प्रतिशत तो दान देना ही चाहिए, ताकि हमारे कुछ शुभ-कर्म जमा हों और अगला जन्म भी हमको मनुष्य का मिले। हम सौ रुपये कमाते हैं और 10 तो क्या एक रुपया भी दान नहीं करते, सब इधर-उधर खर्च कर देते हैं, तो फिर हमारा पुण्य तो कुछ हुआ ही नहीं। जब पुण्य नहीं होगा, तो फिर अगला जन्म मनुष्य का कैसे मिलेगा? इसलिए कुछ अगले जन्म को भी सुधारना है, कुछ इस जन्म को भी सुधारना है।

धन की जो तीन गतियाँ हैं, उनमें से दूसरी है भोग। खा-पी लेना, अपने ऊपर खर्च कर देना, परिवार के लिए खर्च कर देना। और अगर न आप दान देते हैं, न आप खाते-पीते हैं, तो फिर उसकी तीसरी गति होगी, नाश। कोई छीन ले जाएगा, कोई खा जाएगा, सरकार टैक्स लगा देगी, कोई उधार लेके भाग जाएगा फिर लौटाएगा नहीं। फिर दुःखी परेशान होते रहेंगे। या फिर यही पैसे जमा करके छोड़ के चले जाएंगे, अब वो पैसे, जो आप न खा सके, न दान दे सके, किस काम के? वो तो यहीं रह गए, उसके लिए व्यर्थ में 20 साल मेहनत की। जो आपके किसी काम में नहीं आया। खा-पी लेते, तो भी चलो लाभ होता, दान दे देते तो पुण्य मिलता। इससे अगले जन्म में लाभ हो जाता। इसलिए, जो न आप खा-पी सकते, न आप दान दे सकते, वो पैसा व्यर्थ और दुःखदायी है। इसलिए व्यर्थ में पैसा मत जमा कीजिए।

प्रश्न : पैसा आवश्यकता से अधिक होने में कौन सी परेशानी है?

उत्तर : जब आपके पास आपकी आवश्यकता से अधिक पैसा बढ़ने लगेगा तो फिर कई सारे लोग आपसे माँगने वाले आ जाएंगे। कोई भाई—भतीजे आ जाएंगे या कोई और रिश्तेदार आ जाएंगे, कोई दोस्त आ जाएंगे। कोई उधार मांगेगा, कोई दान मांगेगा। आप जानते हैं कि, किसी को आप उधार पैसा दे दें, तो उससे वापस निकलवाना कितना मुश्किल काम है। अब वो पैसा आपके लिए समस्या बन गया। अगर आप उसको उधार देते हैं, और वापस नहीं आता है, तो भी समस्या है। और नहीं देते हैं, तो उससे रिश्ता बिगड़ता है, नाराजगी होती है। कहेगा— देखो साहब, इसके पास पैसे हैं, फिर भी हमको नहीं देता, हमारी सहायता नहीं करता। तो आप सोचिए, उस पैसे ने आपको सुख दिया या दुःख दिया? आपकी समस्या बढ़ा दी या नहीं?

प्रश्न : पैसे को लेकर “वेद” का क्या कथन है?

उत्तर : वेद कहता है, पैसा कमाओ, परन्तु बहुत पैसा मत कमाओ। जितनी जरूरत है, उतना कमाओ। कुछ दान भी दो, कुछ खाओ—पियो। और ईश्वर का ध्यान—भगवान का भजन करो। तो वेदों के अनुसार धन कमाने के लिए एक दिन में अधिकतम आठ घण्टे का समय खर्च करना चाहिए। ऐसे थोड़ा—थोड़ा करके, धीरे—धीरे पैसा कमाओ, धीरे—धीरे जमा करो, जिससे अपना जीवन ठीक से चलता रहे।

आज तो हम देखते हैं, जो लोग नई—नई फैक्ट्री लगाते हैं, वे 15—15 घण्टे मेहनत करते हैं। वे पूरी शक्ति सिर्फ पैसे कमाने के लिए खर्च कर देंगे। वे न बच्चों पर, न पत्नी पर, न अपने स्वास्थ्य पर, न घर पर ध्यान देंगे। न हवन करेंगे, न स्वाध्याय करेंगे, न सत्संग में जाएंगे, न समाज के किसी काम में सहयोग करेंगे। सुबह से रात तक उनके दिमाग में पैसा ही घूमता रहता है। ऐसे पैसा कमाना हानिकारक है। यह बहुत सारी समस्याएं पैदा कर देगा। आपकी बहुत सारी उन्नति रुक जाएगी, जीवन में असंतुलन हो जाएगा। उस असंतुलन से बचने के लिए अधिकतम आठ घण्टा धन कमाने का समय रखिए। उसके बाद ऑफिस से, नौकरी से, व्यापार से लौटकर, मुंह—हाथ धोकर या स्नान करके, जैसी आपकी इच्छा हो, ईश्वर का ध्यान करें। सारे परिवार के लोग मिल कर बैठें, साथ में भोजन करें। फिर उसके बाद कुछ चर्चा

करें, कि आज का दिन कैसा रहा, कहाँ—कहाँ गए, किस—किस से मिले, क्या—क्या बात हुई, क्या खाया। परिवार के सदस्यों की सारी खोजबीन—जांच पड़ताल करें। आज आपको क्या समस्या हुई, उस समस्या को सुनें और उसको सुलझाएं। इस तरह से आप धन कमाने के साथ—साथ अपने बच्चों पर ध्यान देंगे, तो आपके बच्चे अच्छे बनेंगे। आपके बच्चे क्या करते हैं, कहाँ जाते हैं, क्या भूल कर रहे हैं, वो आपको पकड़ में आ जाएगी। जब आप बच्चों से मिलते नहीं, बैठते नहीं, बात नहीं करते तो आपको पता ही नहीं चलता, कि आपके बच्चे क्या—क्या भूल कर रहे हैं।

आवश्यकताओं की पूर्ति संभव, इच्छाएं अनंत.....

यह बात सदा स्मरण रखें कि संसार में जीवन—यापन के लिए अनिवार्य आवश्यकताओं की पूर्ति हो सकती है, परन्तु इच्छाओं का कोई अंत नहीं है। सभी की सभी इच्छाएं पूरी नहीं हो सकतीं। इसलिए इच्छाओं को पूरा करने की न सोचें, आवश्यकताओं को पूरा करने की सोचें। बच्चों को धार्मिक बनाएं, बुद्धिमान बनाएं, चरित्रवान बनाएं और फिर बाद में विद्वान भी बनाएं। धार्मिकता पहला क्रम, विद्वता का दूसरा क्रम, इस तरह से मान करके चलें।

बच्चों को व्यायाम के लिए भी प्रेरित करें। खेलकूद, व्यायाम, कुछ न कुछ शारीरिक श्रम भी होना चाहिए, बड़ों का भी, बच्चों का भी। इस तरह से आप अपना गृहस्थ चलाएंगे, तो आपका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा, परिवार में शांति होगी, समृद्धि होगी, आनंद होगा, प्रेम होगा, संगठन होगा, अनुशासन होगा और खूब अच्छी तरह से आप उन्नतिपूर्वक जाएंगे।

पंद्रह—बीस मिनट का समय, स्वाध्याय के लिए निकालें। प्रतिदिन अच्छे वैदिक ग्रंथों का, आर्ष ग्रंथों का अर्थात् ऋषियों के बनाए ग्रंथों का स्वाध्याय करें। और सप्ताह में एक दिन सत्संग में जाएं, जहां—जहां भी आपके अड़ोस—पड़ोस में आर्य समाज चलती है, वहां जाएं। साप्ताहिक सत्संग में वहां दो घण्टा जरूर भाग लें। आपको वहां से बहुत कुछ सीखने को मिलेगा, बहुत कुछ जानने को मिलेगा। ये वैदिक विद्याएं आपको बहुत सारी समझ में आएंगी। इस कार्यक्रम को तो साप्ताहिक रूप से चलाएं ही, साथ ही अपने घर में स्वाध्याय प्रतिदिन करें।

प्रश्न ये है कि चलो—गृहस्थ में आ ही गए, तो अब यहां क्या करें, कैसे इसको सुखी बनाएं? अब उसके उपाय ऋषियों ने बताये, कि इनसे सुख बढ़ेगा, इन उपायों का प्रयोग करें। और ऐसा गृहस्थ बनाएं, जिससे आपको लगे, कि यहां भी कुछ ठीक है, कुछ अच्छा है, कुछ शान्ति है, कुछ यहां भी रहने जैसा है। तो उसके लिए ऋषियों ने कुछ बातें बताईं। उनमें से एक विधि बताई कि—

पंचमहायज्ञ, प्रतिदिन गृहस्थ व्यक्ति को करने चाहिए।

पहला यज्ञ— ब्रह्मयज्ञ, दूसरा यज्ञ— देवयज्ञ, तीसरा यज्ञ— पितृयज्ञ, चौथा यज्ञ— बलिवैश्वदेव यज्ञ, पांचवा यज्ञ— अतिथि यज्ञ।

ये पांच महायज्ञ प्रतिदिन करेंगे, तो आपका गृहस्थ अच्छा बनेगा। गृहस्थ में आपको कुछ सुख मिलेगा। यदि पंच महायज्ञ प्रतिदिन नहीं करेंगे, तो गृहस्थ तो वैसा ही होगा, जैसा आजकल चल रहा है। तो ये रोज करने के कर्म हैं।

पहला यज्ञ है—ब्रह्मयज्ञ :

इसके दो भाग हैं। एक भाग है— आसन लगाकर आंख बंद करके ईश्वर का ध्यान—चिंतन—मनन, स्तुति—प्रार्थना—उपासना करना। वैसे नियम तो एक घंटा सुबह, एक घंटा शाम का है। एक घंटा नहीं तो पौना घंटा निकालें, कुछ तो समय निकालें। आधा—आधा घंटा करें तो बहुत अच्छी बात है। इतना भी नहीं निकालें, तो 20 मिनट सुबह, 20 मिनट शाम को। इतना समय जरूर निकालें।

अगर आप अपने गृहस्थ को सुखी बनाना चाहते हैं, तो कंडीशन एप्लाइड, शर्तें लागू। ये शर्त है, अगर गृहस्थ को सुखी बनाना है तो समय निकालना पड़ेगा, बहाना नहीं चलेगा।

भूख लग रही है और खाना पकाने का समय नहीं है, तो क्या भूख मिट जाएगी? आपका कोई बहाना नहीं चलेगा, रसोई में जाना पड़ेगा, भोजन पकाना पड़ेगा। उसे खाना होगा, तभी पेट भरेगा। किसी बहाने से काम नहीं चलेगा।

जितनी आपकी सुविधा हो समय की, उतना समय निकालें, ईश्वर का ध्यान करें। ईश्वर का स्वरूप समझें। ईश्वर का स्वरूप क्या है, ईश्वर का हमसे क्या संबंध है। हमसे उसका क्या लेना—देना है। हमारा उसके प्रति क्या कर्तव्य है। और उससे हमको क्या—क्या सुविधाएं मिलती हैं, क्या—क्या लाभ

होते हैं। इन सब बातों को जानने की, समझने की कोशिश करें। यह ब्रह्मयज्ञ का एक भाग हुआ—ईश्वर का ध्यान करना। ब्रह्मयज्ञ का दूसरा भाग है — स्वाध्याय करना। वेदों का अध्ययन करना, ऋषियों के ग्रंथों को पढ़ना, मनुस्मृति को पढ़ना।

मनुस्मृति बहुत अच्छी पुस्तक है। कितने अच्छे सभ्यता के नियम लिखे हैं कि पति—पत्नी का आपस में कैसा कर्त्तव्य होता है, घर में कैसे रहना चाहिए, बड़ों के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए आदि—आदि।

सत्यार्थ प्रकाश पढ़ें, ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका, संस्कारविधि, व्यवहारभानु, आर्योद्देश्यरत्नमाला आदि—आदि ऐसे—ऐसे अच्छे—अच्छे महर्षि दयानंद सरस्वती जी के लिखे ग्रंथ और ऋषियों के ग्रंथ—योगदर्शन, सांख्यदर्शन, न्यायदर्शन, उपनिषद् ऐसे बढ़िया—बढ़िया ऋषियों के ग्रंथ पढ़ें। ये स्वाध्याय कहलाता है। तो ईश्वर का ध्यान और स्वाध्याय ये दोनों मिलकर एक यज्ञ ब्रह्मयज्ञ पूरा हुआ।

दूसरा—देवयज्ञ :

दूसरा कार्य है देवयज्ञ, अग्निहोत्र करना। छोटा सा हवन है, ज्यादा देर नहीं लगती। 15—17 मिनट लगते हैं रोज के हवन में। कोई लंबा—चौड़ा काम नहीं। इतना समय तो आप आराम से निकाल सकते हैं।

टेलीविजन देखने में, टेलीफोन में, गप्पें मारने में, शॉपिंग में बहुत सारा समय खर्च करते हैं तो हवन के लिए 15—17 मिनट निकाल सकते हैं। इससे आपके घर में शांति होगी, सुख होगा, संगठन होगा, आपका दिन अच्छा बनेगा, परिवार में प्रेम बढ़ेगा। बच्चों पर अच्छे संस्कार पड़ेंगे। आपका गृहस्थ सुखी हो जाएगा।

जहां—जहां भी आपके आसपास आर्यसमाज हो, वहां जाएं। वहां के अधिकारियों से संपर्क करें। उनसे कहें, हमको हवन सिखाइए। वे आपको हवन सिखाएंगे। हवन की सामग्री मिलेगी, हवन कुंड मिलेगा। और सारी विधि बताएंगे। पुस्तक मिलेगी, सीडी मिलेगी। फिर अपने घर में हवन का कार्यक्रम शुरू करें। आप एक महीना करके देखिए। आपको परिणाम नजर आएगा। बहुत अच्छा लाभ होगा। बच्चों के अच्छे संस्कार बनेंगे। बच्चे आपके

बुद्धिमान बनेंगे, धार्मिक बनेंगे। आपके अनुशासन में चलेंगे। इस तरह अपने गृहस्थ को सुखी बनाने का प्रयास करें। तो ये दूसरा कार्य था देवयज्ञ।

तीसरा पितृयज्ञ :

अपने बड़े-बुजुर्गों की सेवा अवश्य करें.....

गृहस्थ को अच्छा बनाने के लिए, आपके घर में मौजूद जो अपने बड़े-बुजुर्ग हैं, माता-पिता, सास-ससुर आदि, उनकी सेवा श्रद्धा से करें। उनसे अच्छा व्यवहार करें, उनसे अच्छी भाषा बोलें, उनसे लड़ाई-झगड़ा न करें। प्रेम से, आदर से सम्मान से, उनकी आवश्यकताओं को पूरा करें। उन्हें भोजन खिलाना, उनसे मीठी भाषा में बोलना, आदर-सम्मान से बोलना।

उनके साथ आदर-सम्मान से व्यवहार करें। उनके साथ झगड़ा नहीं करें। उनके साथ मीठी-भाषा बोलें, कठोर भाषा नहीं बोलें। उनको डांट-फटकार नहीं करें। उनकी उपेक्षा नहीं करें। बड़ों की सेवा करने से खूब आशीर्वाद मिलता है। उससे हमारा भाग्य चमकता है। हमारा सौभाग्य बनता है। हमारा उत्साह बढ़ता है। हमारी बुद्धि अच्छी काम करती है। और हमारी सब प्रकार की उन्नति होती है। सुख-समृद्धि होती है। कभी-कभी वृद्धावस्था में रोग भी आ जाता है, यदि माता-पिता रोगी हो गए, तो अच्छे डॉक्टर-वैद्य से अच्छी तरह उनकी चिकित्सा कराना। माता-पिता की, अपने बड़े-बुजुर्गों की सेवा करना। ये अपने गृहस्थ में सुख-शांति उत्पन्न करने वाला बहुत ही महत्वपूर्ण कार्य है। इस पर भी पूरा ध्यान दिया जाए।

आप अपने बड़ों की सेवा करेंगे, तो आपके बच्चे भी आपकी सेवा करेंगे। यहां तो संसार में एक हाथ दे, एक हाथ ले, ऐसा ही व्यवहार चलता है। चलिए सीधी सी बात पूछता हूँ — क्या आप भी कभी बूढ़े होंगे या नहीं? होंगे। क्या आप बुढ़ापे में अपने बच्चों से, अपनी सेवा कराना चाहेंगे या नहीं? चाहेंगे। यदि आप चाहेंगे कि आपके बच्चे आपके बुढ़ापे में आपकी सेवा कर दें, तो क्या आपको अपने बड़ों की सेवा करनी चाहिए या नहीं? करनी चाहिए। बस, इसी का नाम पितृयज्ञ है। बड़ों की सेवा करो। भारत में परम्परा बहुत सालों से है। अब घटती जा रही है। बड़ों की ओर लोग ध्यान नहीं देते। अब तो शादी करते ही अलग हो जाते हैं। माता-पिता अलग, बेटा-बहू अलग। उनको पूछते ही

नहीं, बड़ों के साथ रहते ही नहीं, उनकी सेवा करते नहीं। परिवार टूटते जा रहे हैं। सब बिखरते जा रहे हैं। संयुक्त परिवार की परम्परा खत्म होती जा रही है। ये हमारे गृहस्थ को दुःखदायक बनाता है। यदि आप गृहस्थ को अच्छा सुखदायक बनाना चाहते हैं तो कोशिश करें, संयुक्त परिवार में रहें, इकट्ठे रहें।

हाँ, कोई अपना गृहस्थ पूरा करके वानप्रस्थ में चला गया, जंगल में आश्रम में तपस्या करने, चलो ठीक है। वो साधना के लिए गया तो कोई बात नहीं। पर यदि कोई वानप्रस्थ में नहीं जा रहा है, और गृहस्थ में ही अपने परिवार के साथ रह रहा है, तो संयुक्त कुटुम्ब की परम्परा बनाए रखें। उसमें हमारा संगठन होता है और मुसीबत में एक-दूसरे की सहायता होती है।

आपस में उत्साह बना रहता है, प्रेम बना रहता है। कुछ बातें सहन भी करनी पड़ती हैं, वो तो ठीक बात है परन्तु उसमें कुल मिलाकर लाभ अधिक है और हानि कम। इसलिए संयुक्त कुटुम्ब की परम्परा बनाए रखें। उसमें हमको अधिक अच्छा रहेगा, अधिक सुरक्षा रहेगी। तो बड़ों की सेवा करना माता-पिता की श्रद्धापूर्वक सेवा करना, ये तीसरा यज्ञ है—पितृयज्ञ। यह जरूर करें। सम्मानपूर्वक करें।

चौथा बलिवैश्वदेव यज्ञ :

पशुओं, रोगियों, असहायों पर करुणा करें.....

हमारे पास-पड़ोस में गाय, कुत्ता, घोड़ा, कबूतर, चिड़िया ऐसे प्राणी मिलते रहते हैं। इनके पास कोई नौकरी—व्यापार नहीं है। ये बेचारे कैसे जिएंगे? कहां से कमाएंगे, कहां से खाएंगे? खेती नहीं कर सकते, व्यापार नहीं कर सकते। भोजन तो इनको भी चाहिए।

हमें भगवान ने हाथ दिए, बुद्धि दी, पैसे दिए, साधन दिए और संपत्ति दी। तो हमारा कर्त्तव्य बनता है, कि जो हम संपत्ति कमाते हैं, उससे हम थोड़ा-थोड़ा इन प्राणियों की रक्षा भी करें। इनको भोजन दें, इनके जीवन की सुरक्षा करें। गाय को खिलाइए, कुत्ते को खिलाइए, कबूतर को खिलाइए। बहुत पुण्य मिलेगा। और प्राणी भी आपके साथ हिलमिलकर रहेंगे। और इन प्राणियों की रक्षा यदि हम करेंगे, तो उससे हमको ही लाभ है। ये हमारे लिए बहुत उपयोगी है।

चीन में बताते हैं कि एक बार वहां के लोग बहुत से पक्षी मार के खा गए। चायना के लोग मांसाहारी हैं, वे खा जाते हैं। कुछ भी नहीं छोड़ते। तो परिणाम क्या हुआ, उनके खेतों में कीड़े इतने बढ़ गए, इतने बढ़ गए, कि वो सारी फसल खा गए। अब जब फसल खा गए तो चीन के लोगों को खाने को नहीं मिला अनाज। तब चीन के लोगों को समझ में आया, कि ये पक्षी हमारे लिए कितने काम के हैं। पक्षी हमारे लिए उपयोगी हैं, ये हमारे खेतों में कीड़े खा जाते हैं तो हमारी फसलों की रक्षा होती है। बताते हैं कि चीन देशवालों ने विदेशों से पक्षी मंगवाएं और अपने देश में छोड़ दिए। तब जाकर कीड़े खाए पक्षियों ने।

पक्षियों को मार के नहीं खाना, उनकी सुरक्षा करनी चाहिए। अगर हम प्राणियों की रक्षा करेंगे, तो ये प्राणी हमारी रक्षा करेंगे। हम गाय को भोजन देते हैं, रोटी देते हैं, चारा खिलाते हैं तो हम गाय पर एहसान नहीं कर रहे हैं। गाय को खिलाएंगे, तो गाय हमको दूध देगी और दूध के बिना हम क्या जिएंगे? आपको दूध चाहिए, हाँ या नहीं? हाँ। मख्वन चाहिए, मलाई चाहिए, मिठाई चाहिए, पनीर चाहिए, खीर चाहिए, मावा—पेड़ा चाहिए, तो कहाँ से आएगा? गाय से। गाय होगी, तो ये सब मिलेगा खाने को। गाय को चारा खिलाकर ये मत समझिए, कि हम गाय पर एहसान कर रहे हैं। आप स्वयं पर एहसान कर रहे हैं। आप गाय को नहीं बचा रहे बल्कि गाय आपको बचा रही है।

आप खुद घर में नहीं पाल सकते, कोई बात नहीं। गौशाला में जाकर वहां पर सहयोग करें, दान दें। ताकि गाय की रक्षा होती रहे। गाय का दूध मिलता रहे। तो हमारे जीवन की रक्षा होगी।

कोई विकलांग है, कोई रोगी है, कोई अस्पताल में है, कोई असमर्थ है, युद्ध में या दुर्घटना में उसके हाथ—पांव टूट गए, अब वो कमा नहीं सकता। ऐसे जो असहाय लोग हैं, उनकी भी थोड़ी—थोड़ी सहायता करनी चाहिए। क्योंकि वो किसके भरोसे जिएंगे। अब वे स्वयं तो कमा नहीं सकते, आपको ईश्वर ने धन दिया है, बुद्धि दी है, विद्या दी है, परिवार में सब कुछ अनुकूल है, तो आपका ये कर्तव्य बनता है कि ऐसे लोगों की सहायता करें, जो स्वयं समर्थ नहीं हैं। जीवन में पुण्य कमाने और सुख—शांति प्राप्त करने के लिए ये बहुत आवश्यक कार्य है। ये चौथा कार्य था— बलिवैश्वदेव यज्ञ।

पांचवा अतिथि यज्ञ :

अतिथि का मतलब जिसके आने—जाने की कोई तिथि निश्चित नहीं। कभी भी आ जाए, वो अतिथि कहलाता है। और वेदों के अनुसार—ऋषियों के अनुसार अतिथि शब्द का मुख्य अर्थ है— संन्यासी। मेरे जैसा, असली अतिथि तो मैं हूँ। मेरा कोई ठिकाना नहीं—आज यहां—कल वहां। तीन दिन यहां रहता हूँ, दो दिन वहां रहता हूँ। फिर देशभर में घूमता रहता हूँ। सुबह जब मैं सोकर उठता हूँ तो सबसे पहले मुझे ये देखना पड़ता है, सोचना पड़ता है मैं कहा पर हूँ, दिल्ली, मुम्बई, बड़ौदा या अहमदाबाद में। क्योंकि हमारा कोई ठिकाना नहीं, हमारा काम घूमने का है, प्रचार करने का है। इस तरह से जो घूमने वाले, प्रचार करने वाले वेदों के उपदेशक, संन्यासी, उपदेष्टा आदि, ये हैं अतिथि।

अपने घर पर विद्वानों को आमंत्रित करते रहें...

एक अंतिम कार्य है, जो गृहस्थ को करना चाहिए। और वो है कि कभी—कभी अपने घर पर आर्य विद्वान को, उपदेशक को, संन्यासी को आमंत्रित करें। वैसे तो ये भी रोज का काम है, पुराने समय में हर रोज एक विद्वान, संन्यासी, उपदेशक गृहस्थों के घर आता था। और उनको उपदेश करता था, उनको विद्या पढ़ाता था, उनकी समस्याएं सुनता था, उनकी समस्याओं को सुलझाता था। तो ये हर रोज का नियम था, परंतु आज इतने विद्वान मिलते नहीं, इतने संन्यासी मिलते नहीं, इतने उपदेशक मिलते नहीं, बहुत शॉर्टेज चल रही है, आजकल। बहुत इक्का—दुक्का ही कोई मिलता है। तो जैसी परिस्थिति हो उसके अनुरूप, फिर वैसा ही इंतजाम करना होगा। आपको विद्वान रोज नहीं मिलते, महीने में एक बार मिलें, तो एक बार उनका सत्संग करें।

कहीं सार्वजनिक स्थान पर सत्संग होता है, सामूहिक रूप से होता है, तो वहां जाएं, उनका सत्संग सुनें। और अगर सुविधा हो कभी—कभी उनको घर बुलाने की, तो अपने घर पर अवश्य बुलाएं, महीने में एक बार, दो बार। अथवा जैसे सुविधा हो, जैसी अनुकूलता हो, दो—चार महीने में एक बार, छह महीने में एक बार, कभी तो उनका सत्संग करें।

विद्वानों का सत्संग करने से, हमारे मन में जो बहुत सारी समस्याएं हैं, जो बहुत सारी शंकाएं हैं, वो दूर हो जाती हैं। और हमें जीवन कैसे जीना चाहिए,

वो रास्ता ठीक-ठीक समझ में आता है। इतिहास बताता है कि कितने ही लोग सत्संग में जाकर के बहुत अच्छा सुधर गए। उनके जीवन में बहुत से दोष थे। कोई जुआ खेलता था, कोई शराब पीता था, कोई चोरी करता था, कोई रिश्वत लेता, कोई डकैती डालता था। उनके वो सारे दोष छूट गए और वो एक अच्छे इंसान बन गए। अमीचंद, स्वामी श्रद्धानंद ऐसे-ऐसे बहुत सारे इतिहास के उदाहरण हैं। और बहुत पुराने उदाहरण भी आप सुनते हैं, कोई डाकू रत्नाकर था, ऐसे ही कोई अंगुलीमाल डाकू था। ऐसे-ऐसे बहुत सारे इतिहास के उदाहरण हैं, जिनसे पता चलता है कि अच्छे लोगों का, महापुरुषों का सत्संग करके उनका जीवन भी अच्छा हो गया, शुद्ध हो गया। अतएव विद्वानों का सत्संग करना, यथाशक्ति उनसे लाभ उठाना, विद्या प्राप्ति करना, शंका-समाधान करना और यथायोग्य उनको दान, दक्षिणा, किराया देना, भोजन आदि खिलाना-पिलाना, उनकी सेवा करना, ये गृहस्थ लोगों का कर्तव्य है। अब तक बताए गए काम, आप अपने दैनिक जीवन में जोड़ लें, थोड़ा सा दिनचर्या में इनको जोड़ लें, तो आपका गृहस्थ बहुत अच्छा चलेगा। आप स्वयं अनुभव करेंगे; दो महीना-चार महीना प्रयोग करके देखें, प्रैक्टिकल करके देखिए। आपको इसका परिणाम दो चार महीने में, दिखाई देगा।

जब आपके घर कोई अतिथि आएँ, तो उनका सत्संग करें। उनसे अच्छी-अच्छी बात सुनें। ऐसे ही अपने घर पर किसी अतिथि को रोज बुलाना चाहिए, ये रोज का काम है। रोज आपके घर में एक संन्यासी, वेद का उपदेशक आना चाहिए, जो आपको अच्छी-अच्छी बात सिखाए। आपके घर की पूछताछ करें, आपके घर में हवन होता है कि नहीं होता है। भाईयों में कोई झगड़ा तो नहीं है, कोई संपत्ति का झगड़ा तो नहीं है। पति-पत्नी में कोई मन-मुटाव तो नहीं है, बच्चे आपके ठीक अनुशासन में चल रहे हैं या नहीं चल रहे हैं। इस टाइप की बातें आपसे पूछे, आपकी समस्याओं को सुने, आपकी समस्याओं को सुलझाए। तो देखो घर में कितनी शांति होगी, कितना आनंद होगा, सारी समस्या खत्म। जो भी समस्या हो अतिथि को बताइए, संन्यासी को बताइए, वो आपको समाधान बताएगा, आपके लड़ाई-झगड़े छुड़ा देगा। आपकी सम्पत्ति का झगड़ा छुड़ा देगा, आपस का प्रेम बना देगा, संगठन बना देगा और उसको दो-चार रोटी खिला दी और थोड़ा सा आने-जाने का किराया भाड़ा दे देना, बस बहुत सस्ता काम।

दो भाइयों में झगड़ा हो गया। कोर्ट में केस चलता रहा, दस साल तक। दोनों का लाखों रुपया खर्चा हो गया वकीलों के पास। और 10 वर्ष के बाद में फैसला हुआ। एक भाई जीत गया और एक हार गया। और बाद में जब केस का निर्णय हुआ, क्या उन दो भाइयों में रिश्ता बनेगा या टूटेगा? रिश्ता तो टूट ही जाएगा, चाहे कोई भी जीते दोनों में से। आपस का प्रेम नष्ट हो जाएगा, दस साल तक टेंशन में रहेंगे। क्या लाभ हुआ। और एक संन्यासी आपके घर पर आएगा, आपकी बात सुनेगा, आपका झगड़ा मिटा देगा, आप उसकी बात मान लेंगे, आपका प्रेम बढ़ जाएगा, लड़ाई-झगड़ा छूट जाएगा। दस साल तक की टेंशन बचेगी। लाखों रुपये का खर्चा बचेगा। आपस का रिश्ता बना रहेगा। और दो-पाँच सौ रुपया खर्चा होगा, बताइए, कितना सस्ता हो गया? इसलिए अतिथि यज्ञ करना चाहिए। तो महर्षि मनु तो कहते हैं, रोज आपके घर में होना चाहिए? इतने संन्यासी आजकल मिलते नहीं हैं, बहुत शॉर्टेज चल रही है। चलो कोई बात नहीं, रोज नहीं आ सकता, तो कभी-कभी तो आना चाहिए। आपके घर रोज नहीं आ सकता संन्यासी, न सही, कभी-कभी किसी सार्वजनिक स्थान पर, कहीं सत्संग-मंडल में जाएं, जहाँ पर कोई संन्यासी आए। वेद का उपदेशक होना चाहिए, ये ध्यान रखना, चाहे जो संन्यासी नहीं। चाहे जो प्रवक्ता तो बहुत मिलते हैं, उनकी बात हम नहीं कर रहें। वेद का विद्वान हो, वेद को जानता हो, उसका जीवन वेद के अनुसार हो। उसका लक्ष्य भी मोक्ष प्राप्ति हो, ईमानदार हो, चरित्रवान हो, बुद्धिमान हो, परोपकारी हो, निष्कामकर्मी हो। ऐसे अच्छे संन्यासी की बात कर रहा हूँ, उसका नाम है अतिथि।

तो जब भी अवसर मिले, महीने में, दो महीने में, छह महीने में, साल में, कभी भी, किसी न किसी अच्छे विद्वान संन्यासी का सत्संग करें, उसके पास बैठें, उससे चर्चा करें, सत्संग करें, शंका-समाधान करें और थोड़ा बहुत उसको खर्चा-पानी दें, बस आपका भी काम चल जाएगा और उसका भी चल जाएगा। इस प्रकार से ये पाँचवा अतिथि यज्ञ है।

पाँच यज्ञ सुखी गृहस्थ की कुंजी :

जो गृहस्थ लोग ये पाँच यज्ञ करते हैं, उनके घर में शांति होती है, आनंद होता है, उत्साह होता है, प्रेम होता है, संगठन होता है। वो गृहस्थ सुखी होता है, वो गृहस्थ स्वर्ग होता है।

शास्त्रों में बताया है कि जो स्वर्ग की कामना करता है, वो यज्ञ करें। तो गृहस्थ आश्रम को भी बहुत से लोग स्वर्ग आश्रम कहते हैं। वो स्वर्ग आश्रम अर्थात् सुख देने वाला आश्रम तभी बनेगा, जब आपके घर में ये पंच महायज्ञ का अनुष्ठान चलेगा। पाँचवा यज्ञ आप प्रतिदिन नहीं कर सकते, कोई बात नहीं, बाकी चार तो रोज कर सकते हैं। आप रोज ईश्वर का ध्यान कर सकते हैं, स्वाध्याय कर सकते हैं, हवन भी घर में रोज कर सकते हैं, कोई दिक्कत नहीं है। माता-पिता की सेवा, वो भी कर सकते हैं, आपके साथ में ही रहते हैं। और आस-पास प्राणी मिलते ही हैं, उनको भी खिला-पिला सकते हैं। एक यज्ञ बच गया है, अतिथि यज्ञ। वो कभी-कभी कर लें, आज की देशकाल परिस्थिति को ध्यान में रखते हुए, इतना भी आप कर लें तो आपका गृहस्थ बहुत अच्छा बनेगा और सुखी बनेगा।

प्रश्न : आपने समझाया कि हर रोज हवन करें, पंद्रह-पंद्रह मिनट ध्यान और स्वाध्याय करें तो बहुत लाभ होगा। मैं ये सब कार्य न करूँ तो क्या नुकसान होगा?

उत्तर : हां बहुत अच्छा प्रश्न, नहीं करेंगे तो नुकसान क्या होगा? अगर आप ईश्वर का ध्यान-उपासना नहीं करेंगे, तो नुकसान ये होगा कि आपकी टेंशन, आपकी चिंताएं दूर नहीं होंगी, आपकी बुद्धि का विकास नहीं होगा, आपके जीवन में शुभ-कर्मों का प्रवेश नहीं होगा। जो ईश्वर से हमको शक्ति मिलती है, वो शक्ति नहीं मिलेगी। जो आनंद मिलता है, वो आनंद नहीं मिलेगा। जो उत्साह मिलता है, जो निर्भयता प्राप्त होती है, जो न्याय, सेवा, परोपकार, दान, दया आदि, ये सारे गुण हमको ईश्वर-उपासना से प्राप्त होते हैं। यदि आप ईश्वर-उपासना नहीं करेंगे, तो ये सारे गुण आपको प्राप्त नहीं होंगे।

फिर क्या होगा? फिर जो समाज का प्रभाव है न, वो हम पर पड़ेगा। जैसे हम देख रहे हैं कि समाज में लोग झूठ बोलते हैं, चोरी करते हैं, रिश्वत लेते हैं, हेरा-फेरी करते हैं, बस वैसा ही जीवन रहेगा। आज लोग टेंशन में हैं। क्यों? वो झूठ बोलते हैं, चोरी करते हैं, इसलिए टेंशन हैं। तो वो ही काम आप भी करेंगे और आप भी टेंशन में रहेंगे। ध्यान न करने से ये सब नुकसान होगा। यदि ईश्वर उपासना करेंगे, ध्यान करेंगे तो ये दोष धीरे-धीरे कम होते जाएंगे, चिंता, तनाव, टेंशन झूठ, छल-कपट बुराइयां छूटती जाएंगी, आप एक अच्छे

आदमी, ईमानदार बनेंगे, चरित्रवान बनेंगे, धार्मिक बनेंगे, बुद्धिमान बनेंगे। और उससे आपके जीवन में जो आनंद होगा, जो शांति होगी, जो उत्साह होगा, जो प्रसन्नता होगी, जो सेवा और परोपकार की भावना होगी, उसका लाभ आपको मिलेगा। अगर उपासना नहीं करेंगे, तो ये सारा लाभ नहीं मिलेगा।

ऐसे ही आप यज्ञ नहीं करेंगे तो क्या होगा? आप लोग स्कूटर तो चलाते हैं, कार भी चलाते हैं, बाइक भी चलाते हैं, प्रदूषण तो फैलाते हैं और शुद्धि करते नहीं तो परिणाम क्या होगा? आप हवन नहीं करेंगे, तो वायु-प्रदूषण बढ़ता जाएगा। आज प्रदूषण बढ़ते-बढ़ते बहुत भयंकर समस्या आ गई, लोगों को सांस लेने के लिए शुद्ध वायु नहीं मिल रही। परिणाम ये होगा कि शुद्ध वायु इतनी कम हो जाएगी, कि आपको भविष्य में हो सकता है, ऑक्सीजन का सिलेंडर पीठ पर लेकर चलना पड़े। इतनी भयंकर स्थिति आ जाएगी, आपको सांस लेने के लिए भी शुद्ध वायु नहीं मिलेगी और सिलेंडर से आपको काम चलाना पड़ेगा।

मैंने ऐसा सुना है, जैसे आपके टेलीफोन का बूथ अर्थात् पी.सी.ओ. होता है न, वहां जाकर आप रुपया डालो और अपना फोन कर लो, ऐसे ऑक्सीजन बूथ बन चुके हैं, विदेशों में। जिन लोगों को सांस की तकलीफ है, सांस लेने में दिक्कत आती है। उनको प्रदूषण से जब घबराहट होती है, तो उस सांस लेने वाले बूथ में जाते हैं, वहां एक पाउण्ड, एक डॉलर डालते हैं और वो पाँच मिनट सांस लेते हैं। अगर आप हवनादि नहीं करेंगे तो ऐसी ही स्थिति फिर भारत में भी होगी। फिर स्वास्थ्य बिगड़ेगा, प्रदूषण से आपके शरीर में रोग आएंगे। वो जीवन, जीवन थोड़े ही है, जहां सारा दिन रोगी रहें, परेशान रहें, दुःखी रहें, आयु भी घट जाए।

हवन आदि करने से आयु बढ़ेगी, शरीर स्वस्थ रहेगा, मन प्रसन्न रहेगा और परिवार में जब हवन में बच्चे इकट्ठे बैठेंगे, तो बहुत बड़ा लाभ ये होगा कि उन पर अच्छे संस्कार बनेंगे। वो धार्मिक बनेंगे, आपके बच्चे अनुशासन प्रिय बनेंगे। यदि आप हवन नहीं करेंगे, बच्चों को हवन में नहीं बिठायेंगे, तो आपके बच्चे धार्मिक नहीं बनेंगे, अनुशासन प्रिय नहीं बनेंगे, आपकी कोई बात नहीं सुनेंगे और वृद्धावस्था में आपकी कोई सेवा नहीं करेंगे, ये सारा नुकसान तो होगा। इसलिए इन सब कामों को करना चाहिए।

प्रश्न : क्या गृहस्थ आश्रम में प्रतिदिन यज्ञ-संध्या करना अनिवार्य है। नियमित रूप से न करें तो क्या इससे कुछ हानि हो सकती है?

उत्तर : जी हाँ, यज्ञ-संध्या करना, वेद में हमारे दैनिक कर्तव्य बताए गए हैं। दैनिक यज्ञ-संध्या करने से घर-परिवार में, बच्चों और बड़ों, सब पर बहुत अच्छा प्रभाव पड़ता है। उनका विचार-संस्कार बहुत शुद्ध होता है, ईश्वर के प्रति आस्तिकता, श्रद्धा की शुभ-भावना उत्पन्न होती है, आपस में प्रेम और संगठन होता है, अनुशासन होता है, सब प्रकार की समृद्धि होती। इस प्रकार गृहस्थी व्यक्ति को बड़ा पुण्य मिलता है। इससे उसका ये जन्म भी अच्छा रहता है, अगला जन्म भी अच्छा रहता है। इसीलिए गृहस्थ व्यक्ति को नियमित रूप से, प्रतिदिन यज्ञ-संध्या, उपासना-स्वाध्याय करना चाहिए। इसके अलावा, सप्ताह में एक बार या जैसी भी सुविधा हो, आर्य-विद्वानों के उपदेश, प्रवचन, सत्संग भी सुनने चाहिए। ऐसा गृहस्थ जीवन ही वेदसम्मत माना जाएगा।

प्रश्न : पति-पत्नी को गृहस्थी की गाड़ी चलाने के लिए और क्या-क्या सावधानियाँ रखनी चाहिए?

उत्तर : गृहस्थ जीवन में हमें ये भी निश्चित करना चाहिए, कि हम जो बचत करें, वो किस तरह से करें। हमारी भविष्य की योजनाएं क्या हैं? कार खरीदनी है, मकान खरीदना है, भविष्य के कुछ और बड़े खर्चे हैं, बच्चों की पढ़ाइयों के भी खर्चे हैं। पति-पत्नी दोनों की इन्कम कितनी है। यदि केवल पति अकेला ही कमाता है, पत्नी घर संभालती है, तो पति की इन्कम कितनी है, वर्तमान के खर्चे कितने हैं, भविष्य की योजनाएं क्या हैं, वो सारा कागज पर हिसाब करके रखना चाहिए।

पति-पत्नी मिलकर के बैठें और एक-दूसरे को बताएं कि हमारी इन्कम कितनी है और हमारी योजनाएं कैसी हैं। उसके लिए हमारा आज का खर्च कितना है और भविष्य के लिए हम कितना बचा सकते हैं। हमारे पास वर्तमान में क्या संपत्ति है और आगे कितनी-क्या चाहिए। आपस में ऐसी चर्चा करने से भ्रांति नहीं होती, संशय नहीं होता, व्यर्थ आरोपबाजी नहीं होती। अन्यथा पत्नी कहती है, “तुम बहुत फालतू खर्च करते हो और हमको ये खरीदना, वो खरीदना है, तुम इसके लिए कोई योजना नहीं बनाते।” इस तरह की आरोपबाजी चलती है।

अगर पति-पत्नी दोनों को स्पष्ट हो, कि हमारी इतनी इन्कम है, इतने खर्चे हैं और इतनी हम बचत कर सकते हैं, तो व्यर्थ की आरोपबाजी से बचा जा सकता है, और आपस में कोई झगड़ा भी नहीं, संशय भी नहीं, कुछ भी नहीं।

इस तरह, छोटी-छोटी बचत हर महीने करते रहें तो धीरे-धीरे एक अच्छी खासी राशि इकट्ठी हो जाएगी। जिससे आप अपनी भविष्य की योजना पूरी कर सकेंगे। जैसे कि, खुद का मकान खरीदना है, कार खरीदनी है, कोई और ऊंची वस्तु खरीदनी है, बच्चों की पढ़ाई है, उनके खर्चे हैं, उनकी शादियों के खर्चे हैं, वो सब धीरे-धीरे पूरे हो जाएंगे। इस तरह आपस में एक-दूसरे के साथ परस्पर समायोजन करके स्पष्टता रखनी चाहिए।

यहां ये जरूर ध्यान रखने योग्य है कि कर्ज नहीं लेना चाहिए। वेदों में कर्ज लेने को अच्छा नहीं बताया गया है। जो व्यक्ति उधार लेता है, ऋण लेता है, उसको रात को ठीक से नींद नहीं आती, उसके सिर पर बोझ बना रहता है। इसीलिए अपना खर्चा उतना ही रखें, जितनी इन्कम हो। बल्कि इन्कम ज्यादा हो, खर्चा थोड़ा कम रखें, ताकि दो रुपये बचें और भविष्य में काम आए।

आजकल लोगों में एक फैशन हो गया है कि पैसे उधार ले लो और कार खरीदो। लोन पर मकान भी मिलता है और एजुकेशन लोन भी पढ़ाई के लिए मिलता है। पर लोग ये समझते हैं कि बस उधार ले लो, “फिर चुकाना भी तो पड़ेगा? वो चुकाएंगे कैसे?” इस पर वो ज्यादा विचार नहीं करते। बस लोन ले लेते हैं, और बाद में चलकर जब इतनी बचत नहीं होती, तब फिर कठिनाई आती है। उस समय बुद्धि काम नहीं करती, चिंताग्रस्त होकर सोचते हैं कि अब क्या करें? कर्जा हो गया, जिसे समय पर चुका नहीं पाते तो फिर या तो जुआ खेलते हैं या चोरी आदि करते हैं, रिश्वत लेते हैं, या कोई और तरह के गलत तरीके अपनाते हैं, जिससे जीवन बिगड़ता है।

गृहस्थी को जब और कोई रास्ता नहीं सूझता, तो कई बार आत्महत्या तक करने की नौबत आ जाती है। हमें ऐसी दुर्घटनाओं से बचना चाहिए। इस तरह के गलत काम नहीं करने चाहिए। बुद्धिमत्ता से काम करें, ठीक न्याय से, ईमानदारी से अपना जीवन चलाएं। क्योंकि गृहस्थ में आर्थिक जिम्मेदारियां बहुत होती हैं।

जीवन भी अनिश्चित है, इसकी कोई गारण्टी नहीं है। कभी दुर्घटना में कोई हाथ-पांव टूट जाएं, नुकसान हो जाए, या दुर्घटना में मृत्यु हो जाए, तो आजकल बीमा-पॉलसी भी होती है। यह जीवन सुरक्षा भी चलती है, जो कि एक अच्छी सुविधा है। खासतौर से गृहस्थ लोगों को तो अपना बीमा अवश्य कराना चाहिए। इस बीमे के नियम के बहाने से थोड़ी और बचत होती रहती है। इससे आपत्तिकाल में एक बड़ी राशि मिलती है, जिससे जीवन साथी के जीवन की बहुत सारी समस्याएं हल हो जाती हैं। निःसंदेह गृहस्थ जीवन में, पैसे के बिना कुछ चलता नहीं, तो पति-पत्नी दोनों अपना-अपना बीमा अवश्य कराएं। इससे आपत्तिकाल में जो पैसा मिलेगा, उसका दूसरा व्यक्ति अपने जीवनयापन में लाभ उठा पाएगा, अपने जीवन की सुरक्षा कर पाएगा। इस तरह से आपको करना चाहिए।

प्रश्न : गृहस्थ जीवन को ठीक से चलाने के लिए क्या उपाय अपनाएं?

उत्तर : गृहस्थ जीवन को ठीक से चलाने के लिए गृहस्थ की जानकारी अच्छी तरह से होनी चाहिए। आजकल लोग समझते हैं, कि बस शादी कर ली और जीवन भर के लिए पति-पत्नी बन गए। अब आजीवन साथ रहेंगे। समाज का परम्परागत वातावरण भी ऐसा ही है, कि साथ जिएंगे— साथ मरेंगे। माना जाता है, कि शादी तो सात जन्मों का बन्धन है। ठीक से जानकारी न होने के कारण भी लोगों को गृहस्थ में बहुत सारी परेशानियाँ आती हैं।

वेदों के अनुसार वैदिक ऋषियों ने कहा, कि मनुष्य जीवन के चार भाग हैं—ब्रह्मचर्य आश्रम, गृहस्थ आश्रम, वानप्रस्थ आश्रम और संन्यास आश्रम।

ब्रह्मचर्य के नियमों का पालन करते हुए पहले 25 साल तक रहना आदर्श जीवन तो जीना ही चाहिए। ऐसा इसलिए क्योंकि उसके बिना शरीर का ठीक से विकास नहीं होगा। विद्या पढ़ना ब्रह्मचारी का कर्तव्य है। शरीर का बल बढ़ाना, बुद्धि को बढ़ाना, चरित्र अच्छा बनाना; ये सारे काम ब्रह्मचारी 25 वर्ष तक करें। इसके बाद फिर अगले 25 वर्ष गृहस्थ में रहना चाहिए। 50 साल की आयु पूरी होने पर वानप्रस्थ में भी जाना है। इस तरह ये गृहस्थाश्रम एक प्रयोगशाला है।

गृहस्थ आश्रम में कुछ प्रयोग, कुछ एक्सपेरिमेंट करना है। ये देखना है, कि गृहस्थ में कितना सुख है और कितना दुःख है। कोई भी व्यक्ति दुःख भोगना

तो नहीं चाहता। हां, सुख अवश्य भोगना चाहता है। सुख की आशा से ही वो गृहस्थ आश्रम में प्रवेश करता है। विवाह से पहले उसको ऐसा लगता है, कि गृहस्थ में बहुत सुख है। ऋषियों ने वेदों के आधार पर बताया है, कि कोई बात नहीं, आपको ऐसा लगता है कि उसमें बहुत सुख है तो जरा इसका परीक्षण कर लो, देख लो कि गृहस्थ में कितना सुख और कितना दुःख है। इस प्रकार से जीवन की आश्रम व्यवस्था संसार के सुख—दुःख का परीक्षण करने की प्रयोगशाला है। 26 से 50 साल की उम्र तक गृहस्थ में रहकर मनुष्य समझ लेता है कि इसमें कितना सुख है, कितना दुःख है। गृहस्थ में पूरा सुख नहीं मिलता, बहुत सारी परेशानियां, दुःख, राग—द्वेष आदि—आदि का आना—जाना सब कुछ चलता रहता है।

कुल मिलाकर 50 साल तक की उम्र में सार ये निकलता है जितना सुख व्यक्ति सोचता था कि गृहस्थ में मिलेगा, उतना तो मिला नहीं। पर जितना दुःख सोचा था, उससे कई गुना अधिक भोगना पड़ा। इस तरह से उसका अनुभव 50 साल की उम्र में पूरा हो जाता है।

ऋषि लोग कहते कि जब गृहस्थ का परीक्षण हो जाए, जब संसार के सुख—दुःख का परीक्षण हो जाए, तो उसके बाद फिर वानप्रस्थ आश्रम में प्रवेश करना चाहिए। गृहस्थ को छोड़कर वन में जाएं, कहीं आश्रम में जाएं। वहां साधना करें, तपस्या करें। ऐसे संसार के दुःखों से छूटने के लिए, पूर्ण आनंद की प्राप्ति के लिए, फिर व्यक्ति को जंगल में जाकर के साधना करना चाहिए, तपस्या करनी चाहिए।

आज प्रायः कोई भी व्यक्ति सौ वर्ष नहीं जी पाता है। इसलिए 25 साल वानप्रस्थ में न रह पाएं तो कोई बात नहीं, पंद्रह साल रहें, दस साल रहें। इन दस—पन्द्रह वर्षों में साधना करें, शास्त्रों का अध्ययन करें, ईश्वर का ध्यान करें, उपासना करें, वैराग्य को बढ़ाएं। एक दो घंटा संस्था की सेवा भी कर दें। आश्रम की, समाज की सेवा भी थोड़ी—थोड़ी होती रहे। मुख्य रूप से अपना विकास करते रहें।

जब वैराग्य अच्छा हो जाए, शास्त्रों का अध्ययन अच्छा हो जाए, आचरण अच्छा हो जाए, तब जाकर वैराग्य होने पर फिर चौथे आश्रम संन्यास में प्रवेश करना चाहिए। फिर आगे मोक्ष की तैयारी करनी चाहिए।

विवाह से पहले इतनी सारी दूरदृष्टि बनाकर, इतनी योजना बनाकर फिर व्यक्ति को गृहस्थ में जाना चाहिए। जो व्यक्ति यह समझता है, कि पूरा जीवन अब गृहस्थ में ही रहेंगे, तो उसका ये विचार ठीक नहीं है। वेदों के अनुकूल नहीं है, ये सुखदायक नहीं है। ऐसा व्यक्ति सारा जीवन राग—द्वेष की भट्टी में जलता रहेगा। इन दुःखों से पार नहीं पाएगा। इस प्रकार से बार—बार उसका संसार में जन्म होता रहेगा। उसका राग—द्वेष छूटेगा नहीं, अविद्या हटेगी नहीं। फिर वो बार—बार संसार में जन्म लेकर दुःख भोगता रहेगा। इसलिए गृहस्थ में जाने से पहले पूरी तैयारी करके, फिर गृहस्थ में जाना चाहिए।

पहले ही तय कर लेना चाहिए, कि हम गृहस्थ के बाद वानप्रस्थ में जाएंगे, और आगे संन्यास भी लेंगे। सबका उपकार करेंगे, समाज सेवा भी करेंगे और मोक्ष की तैयारी करेंगे। इतना सोच कर गृहस्थ में जाने पर, गृहस्थ जीवन दूसरे दुनियावालों की तुलना में अच्छा रहेगा। गृहस्थ में इतना राग—द्वेष भी नहीं बढ़ेगा। फिर वो व्यक्ति अपना गृहस्थ आश्रम पूरा करके वानप्रस्थ में चला जाएगा। गृहस्थ के जो दुःख समस्याएं हैं, उनसे भी छूट सकेगा।

इतिहास में एक महाभारत काल की एक बात है। आप सब जानते हैं, कि अभिमन्यु चक्रव्यूह में घुस तो गया, लेकिन उससे बाहर नहीं निकल पाया। चक्रव्यूह में फंसकर मारा गया। क्यों बाहर नहीं निकल पाया? इसलिए नहीं निकल पाया, कि घुसने की विधि तो उसने सीख ली, पर चक्रव्यूह से बाहर आने की विधि को पूरी तरह नहीं सीख पाया। ठीक से समझ नहीं पाया और जल्दबाजी में पूरी विधि सीखे बिना ही घुस गया। परिणाम ये हुआ कि वह मारा गया।

गृहस्थ भी एक तरह से चक्रव्यूह है। गृहस्थ में घुसने का मतलब है, आप भी एक चक्रव्यूह में फंस रहे हैं। गृहस्थ में आपको बड़े टेढ़े—मेढ़े, विचित्र अनुभव होंगे, खट्टे—मीठे अनुभव होंगे। वहां सुख भी आएगा, दुःख भी आएगा, तरह—तरह के झंझट आएंगे, परेशानियां आएंगी। जैसे अभिमन्यु को जब बाहर आने की कला नहीं मालूम, तो चक्रव्यूह में घुसना नहीं चाहिए था। उसने दुस्साहस किया, गलती की। अतः मृत्यु का दण्ड उसे भोगना पड़ा। ठीक इसी तरह, जिसे गृहस्थ से बाहर निकलना नहीं आता, वानप्रस्थ में प्रवेश करना नहीं आता, और जो पहले से सोचकर नहीं जाता, कि “मैं गृहस्थ में जा तो रहा हूँ,

चक्रव्यूह में घुस रहा हूँ, मुझे एक दिन इससे बाहर निकलना होगा। मुझे इसके बाद वानप्रस्थ में भी जाना है, फिर संन्यास में भी जाना है।” वो अभिमन्यु की तरह मारा जाएगा। वह बहुत से दुःख भोगेगा और जीवन-भर दुःखी होता रहेगा। इसलिए गृहस्थ में उसी को प्रवेश करना चाहिए, जो गृहस्थ से बाहर निकलना जानता है, वानप्रस्थी बनना जानता है।

यदि वह वानप्रस्थ की मानसिकता बनाकर गृहस्थ में जाए, तो उसका गृहस्थ जीवन अच्छा चलेगा। वो ज्यादा मोह-माया में नहीं फंसेगा। खूब अच्छी तरह से गृहस्थ जीवन चलाएगा, और एक दिन उससे बाहर भी निकल जाएगा। इस बात पर भी बहुत ध्यान देना चाहिए। ये बहुत ही महत्व की बात है।

प्रश्न : पति-पत्नी का संबंध कैसा होना चाहिए? जिससे कि उनका आपसी रिश्ता बहुत अच्छा हो, मजबूत हो, आपस में प्रेम हो।

उत्तर : आपस में संवेदनशीलता होनी चाहिए, एक-दूसरे की संवेदनाओं को पति-पत्नी दोनों समझें सकें। पति की क्या भावनाएं हैं, पत्नी उनको इशारे में समझ ले। पत्नी की क्या भावनाएं हैं, पति उनको इशारे में ही समझ ले। आपस में ऐसा समन्वय, बुद्धिमत्ता, समझदारी, संवेदनशीलता हो, तो गृहस्थ बहुत अच्छा चलेगा। दोनों एक-दूसरे की भावनाओं का आदर करें और एक दूसरे की बात को पूरा करें।

अगली बात है, संकल्प की, पति-पत्नी ने जो दायित्व अपने ऊपर लिया है, उसको अच्छी तरह निभाने के लिए संकल्प करें कि हम एक-दूसरे को सुख देंगे, दुःख नहीं देंगे। गृहस्थ का उद्देश्य सुख प्राप्ति है। दुःख भोगने के लिए तो कोई व्यक्ति शादी करता नहीं। परंतु लोगों को, क्योंकि इन नियमों का पता नहीं, और पता भी हो, तो लोग पालन नहीं करते। फिर कहते हैं “साहब! गृहस्थ में बड़ा दुःख है।” भाई दुःख तो आपने स्वयं बना रखा है। गृहस्थ के नियमों को जानों, उनका पालन करो। आपका गृहस्थ जीवन बहुत अच्छा हो जाएगा, सुखी हो जायेगा।

तो इस तरह से पति-पत्नी संकल्प लेवें, कि “हम एक-दूसरे को अच्छी तरह से सुख देंगे, किसी की उपेक्षा नहीं करेंगे, किसी का अपमान नहीं करेंगे, किसी को नीचा नहीं दिखाएंगे, किसी को अपने से घटिया नहीं समझेंगे।”

“पति—पत्नी दोनों में एक जैसी आत्मा को स्वीकार करेंगे।” इस तरह का संकल्प होना चाहिए, तभी तो गृहस्थ—जीवन अच्छा चलता है।

जब शादी होती है तो, पत्नी ये ही सोच के जाती है शादी करके, कि “मेरा पति मुझे सुख देगा।” पति भी यही सोचता है कि “यह मेरी पत्नी है, ये तो मुझे सुख देगी।” जब दोनों सुख चाहते हैं, तो फिर दोनों को एक—दूसरे को सुख देना ही चाहिए। ऐसा करेंगे, तभी तो सुख मिलेगा। ईश्वर का ये नियम है, जब आप दूसरे को सुख देंगे, तो दूसरा आपको सुख देगा, यदि आप दूसरे को दुःख देंगे तो दूसरा आपको दुःख देगा। विवाह के पश्चात् पति—पत्नी को ऐसे भावनाओं की दृष्टि से एक—दूसरे को बराबर समझ कर चलना चाहिए। सोच यही हो कि मैं भी आत्मा हूँ, वो भी आत्मा है। इस तरह दोनों को समान स्तर का मानकर चलना चाहिए।

फिर अगली बात है कि घर—गृहस्थी अच्छी चलाने के लिए, आर्थिक रूप से भी सामर्थ्य अच्छा होना चाहिए। पति इतना कमा ले, कि घर का पूरा खर्चा अच्छी तरह से चल जाए। पत्नी का, बच्चों की पढ़ाई—लिखाई का भी, जो भी है। फिर आगे उनकी शादी, उनका नौकरी लगने तक जो भी सारा खर्चा है। वो पति इतना कमा सके, कि घर के सारे खर्चे ठीक—ठीक निकल जाएं। जो आवश्यक खर्चे हैं, वो तो पूरे होने ही चाहिए। इसके साथ ही यह भी ध्यान रखें कि बहुत लगजरी—लाइफ भी न जिएं, जितनी चादर हो उतना ही पैर फैलाएं। जितना जीवन चलाने के लिए बेहद आवश्यक हैं, उतनी सुविधाएं तो पूरी होनी ही चाहिए। इस तरह से पति का इतना सामर्थ्य हो, कि वो धन—संपत्ति की दृष्टि से कमजोर न हो, तो गृहस्थ अच्छा चलता है।

एक अंतिम बात है, समर्पण की। एक—दूसरे के प्रति पति—पत्नी का समर्पण होना चाहिए। अथवा कभी दूसरे की खातिर एक को अपनी कुछ इच्छाएं छोड़नी पड़ें, तो इतना त्याग भी उनमें होना चाहिए, कि “मेरी पत्नी को थोड़ी कठिनाई है, कष्ट है, मुझे इस समय अपनी इच्छा उसके सुख के लिए छोड़ देनी चाहिए। पति को सोचना चाहिए कि अपने सुख को छोड़कर पत्नी की सेवा करूंगा। ऐसे अपने शौक को भी छोड़ना पड़ता है।

शादी के बाद अब पति—पत्नी दोनों मिलकर एक हो गए अर्थात् दोनों का सुख—दुःख एक हो गया। ऐसा नहीं कर सकते, पत्नी बेचारी बीमार पड़ी है,

और पति बाहर सैर करना आदि अपने शौक पूरे करता है। इसी तरह पति बीमार हो और पत्नी अपनी पार्टी में जाती रहे, किटी-पार्टी में इधर-उधर, अपने शौक पूरे करती रहे। गृहस्थ में ऐसा आचरण ठीक नहीं होता। दोनों को एक-दूसरे के लिए त्याग करना पड़ता है, परस्पर समर्पित रहना पड़ता है कि, मेरी पत्नी का दुःख, मेरा दुःख है, पति ऐसा सोचे और पत्नी ये सोचे की पति का दुःख, मेरा दुःख है। “जब मेरा पति दुःखी है तो मैं सुखी कैसे रह सकती हूँ” पत्नी को ऐसे सोचना चाहिए। पति को भी ऐसे सोचना चाहिए कि “मेरी पत्नी दुःखी है तो मैं सुखी कैसे हो सकता हूँ। जब तक इसका दुःख दूर न हो जाए, तब तक मुझे भी शांति नहीं है।” ऐसे आपस में प्रेम, त्याग और समर्पण की भावना हो, तो गृहस्थ जीवन अच्छा होता है। तो इन सब बातों का यदि ध्यान रखा जाए, तो गृहस्थ को हम अच्छा बना सकते हैं, ऐसा बनाने का प्रयत्न करना चाहिए। यही सुखी गृहस्थ की कुंजी है।

पति-पत्नी को, दोनों को ही इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि वे आपस में एक-दूसरे को वैसा ही स्वीकार करें, जैसा उनका वास्तविक गुण, कर्म, स्वभाव है।

यदि वो एक-दूसरे को बदलने की कोशिश करेंगे, अर्थात् पत्नी चाहे कि “मैं पति को बदलूँ, उसकी आदतें बदलूँ।” यह रवैया निःसंदेह बहुत हानिकारक होगा। पति चाहे, कि “मैं पत्नी की आदतें बदलूँ,” तो वो भी हानिकारक होगा। इसलिए दोनों एक-दूसरे को जैसा है, वैसा स्वीकार करें। ‘इनकी आदतें कैसी हैं,’ ये तो शादी से पहले सोचना चाहिए था, लड़का-लड़की को अगर आपस में एक-दूसरे की आदतें स्वीकार नहीं हैं, तो शादी करनी ही नहीं चाहिए। इसलिए पहले से एक दूसरे की परीक्षा करके, यदि एक दूसरे के गुण, कर्म, स्वभाव स्वीकार हों, तभी वही शादी करनी चाहिए।

जल्दबाजी में शादी नहीं करनी चाहिए। महज शक्ल देख ली, कुछ पैसा देख लिया, कुछ पढ़ाई-लिखाई देख ली। इतने मात्र से गृहस्थ जीवन सुखी नहीं बनता। और भी बहुत सारी बातों का अध्ययन/परीक्षण करना चाहिए। उनकी जो रुचियाँ हैं, आदतें हैं वो सब जाँच करके फिर सोचना चाहिए, कि यदि हमें एक दूसरे की आदतें रुचियाँ, हॉबीस स्वीकार हैं, तब ही विवाह करेंगे। और जब शादी हो गई, तो फिर वो दोनों जैसे हैं, वैसा ही उनको परस्पर स्वीकार करने की कोशिश करें।

पति और पत्नी दोनों ही इस बात का ध्यान रखें, कि अपने-अपने जो भी दोष हैं, उनको दूर करें और जो अच्छी बातें हैं, अच्छे गुण हैं, उन पर अधिक फोकस करें, उनका अधिक ध्यान रखें।

जिन कामों के करने से पति को खुशी मिलती है, पत्नी उन कामों को करे। जिन कामों के करने से, पत्नी को खुशी मिलती है, पति उन कामों को करे। आपस में एक दूसरे की प्रसन्नता के लिए कार्य-व्यवहार करें। पत्नी को कोई काम पसंद नहीं है, तो पति उस काम को न करे। पति को कोई काम पसंद नहीं है तो पत्नी उस काम को न करे। इस तरह से एक दूसरे की भावनाओं का आदर करें।

एक-दूसरे के प्रति त्याग की भावना रखें। कुछ छोटी-मोटी बातें हों जो एक-दूसरे को पसंद नहीं होतीं, उन बातों को सहन करने की कोशिश करें। यही सोचें कि कमियां तो प्रायः हर व्यक्ति में होती हैं। तो अपनी-अपनी कमियों को देखें, उन कमियों को दूर करें। दूसरे साथी के अच्छे गुणों को धारण करें, उनको सामने रख के चलें, तो ऐसा करने से आपस में संबंध बहुत अच्छा बनता है, प्रेम-भाव बढ़ता है। एक-दूसरे के प्रति सहानुभूति और एक-दूसरे का आदर सम्मान बढ़ता है। इससे पति-पत्नी में बहुत अच्छा प्रेमपूर्ण और मजबूत सम्बन्ध बनेगा।

प्रश्न : आदर्श गृहस्थ जीवन जीना क्या हमारी प्राथमिक जिम्मेदारी है? और अच्छाई से यानि की ईमानदारी से जो धन हम कमाते हैं, उसका फायदा इसी जन्म में मिलता है?

उत्तर : ये हमारी प्राथमिक जिम्मेदारी है कि हम, ईमानदारी से, धन कमाएं। एक आदर्श व्यक्ति बनकर जीएं। कई बार हम गृहस्थ लोगों से पूछते हैं, कि जी आप झूठ तो नहीं बोलते। वो कहते हैं हां साहब, झूठ तो बोलते हैं। तो हम पूछते हैं कि, क्यों झूठ बोलते हैं? वो बोलते हैं, हम गृहस्थी हैं। बताइए, ये क्या उत्तर हुआ कि हम गृहस्थी हैं। फिर हम पूछते हैं, कि आप चोरी तो नहीं करते? वो बोले, हां साहब करते हैं। क्यों करते हैं? हम तो गृहस्थी हैं। मतलब एक ऐसा उत्तर रट रखा है कि, गृहस्थियों को सब छूट है, झूठ बोलो, चोरी करो, रिश्वत लो, डकैती डालो, जो मर्जी करो, उनको कोई पाप नहीं लगता है। ऐसा दिमाग बना रखा है लोगों ने। ये ठीक नहीं है।

ब्रह्मचारी हो, गृहस्थी हो, वानप्रस्थी हो, संन्यासी हो, कोई भी हो। ईश्वर का नियम सबके लिए एक जैसा है। झूठ बोलना सबके लिए अपराध है। गृहस्थी होने के नाते आपको कोई कन्सेशन, कोई छूट-छाट नहीं है। ब्रह्मचारी को भी, गृहस्थी को, संन्यासी को, वानप्रस्थी को दण्ड मिलेगा ही। जो भी झूठ बोलेगा, उसको दण्ड मिलेगा। चोरी करेगा, रिश्वत लेगा, हेरा-फेरी या कोई भी गड़बड़ करेगा, सबको दण्ड मिलेगा। इसलिए गृहस्थ होने पर ये बहाना नहीं चलेगा।

हमारे शास्त्रों में लिखा है, महर्षि मनु जी ने, महर्षि दयानंद जी ने लिखा है, चाहे झूठ-अधर्म से चक्रवर्ती राज्य भी क्यों न मिलता हो, तो भी नहीं लेना चाहिए। चक्रवर्ती राज्य क्या होता है? सारी धरती का राज्य, सब देशों का बड़ा अधिकारी, वो चक्रवर्ती राजा होता है। झूठ बोलने से, इतना बड़ा राज्य भी मिलता हो, सारी धरती का, तो भी नहीं लेना चाहिए। आज तो आदमी पाँच रुपये के लिए, दो रुपये के लिए झूठ बोलता है। तो आदर्श रूप में गृहस्थी बनकर सच्चाई से, ईमानदारी से धन कमाएं। जितना मिले, उतने में संतोष का पालन करें और उसका लाभ उठाएं, ऐसे हमको जीना चाहिए। तो हमारा परिवार अच्छा बन जाएगा।

प्रश्न : पति दान करता है, तो उसका फल उसको ही मिलता है या आधा उसके परिवार वालों को मिलेगा?

उत्तर : बहुत अच्छा प्रश्न है, कि जब परिवार के बहुत सारे लोग घर में रहते हैं और पैसे कमाता है पति। पत्नी घर संभालती है, वो घर की व्यवस्था देखती है। पति बाहर से पैसे कमा के लाता है। अब कहीं संस्था में, कोई अच्छे काम में दान देता है। इसका उत्तर ये है, कि अगर पति दान देता है, तो उसमें आधा पुण्य उसकी पत्नी को भी मिलेगा। पति व्यापार से पैसे कमाता है तो ऐसा नहीं समझना चाहिए कि वो सारी कमाई पति की अकेले की है। वो दोनों की कमाई है। पत्नी की भी और पति की भी। अन्तर इतना है कि, पत्नी घर का काम संभालती है और पति बाहर का व्यापार संभालते हैं। दोनों मिलकर के काम संभालते हैं, तब जाकर के धन कमाया जाता है।

अगर सुबह पत्नी नाश्ता न दे, टाइम पर अच्छा खाना नहीं दे, और दाल में मिर्ची, नमक ज्यादा डाल दे, फिर देखो पति कैसे कमाएगा, पैसे! उसकी

बुद्धि नहीं चलेगी, गुस्सा आ जाएगा, व्यापार में लड़ाई—झगड़ा करेगा, तो धंधा ठीक नहीं होगा। इस प्रकार से पत्नी घर का काम संभालती है, पति बाहर का काम संभालता है और दोनों मिलकर काम करते हैं। तब जा कर सम्पत्ति प्राप्त होती है। इसलिए जो व्यापार से आय होती है, उसमें दोनों का हिस्सा होता है। दोनों का आधा—आधा हिस्सा होता है, और उसमें से जो कोई दान होता है, तो उसमें पुण्य भी दोनों को मिलता है। दोनों को बराबर आधा—आधा पुण्य मिलता है।

प्रश्न : अपना जीवन साथी न पसंद हो लेकिन माँ—बाप के आनंद के लिए उसे अपना लिया तो अपना गृहस्थ जीवन कैसे सुखी बनाएँ?

उत्तर : शादी हो चुकी है, अपना लिया है, दो—चार साल निकल गए और वो नापसंद है। और माता—पिता का दबाव है कि तुमको इसके साथ ही रहना पड़ेगा। ऐसी परिस्थिति है, तो अब ऐसी परिस्थिति में हम जबरदस्ती बहुत दिन नहीं जी पाएंगे। माता—पिता के दबाव से, समाज के दबाव से, किसी के भी दबाव से, जो चीज आपको पसंद नहीं है, आप किसी के भी दबाव से, उस स्थिति में नहीं रह पाएंगे। अपनी पसंद को ठीक कर लें अर्थात् जो—जो टकराव है, उस टकराव को दूर करना चाहिए और तालमेल बनाकर के अच्छी तरह रहें। दुःखी होकर के नापसंद की स्थिति में आप बहुत दिन तक साथ में नहीं रह पाएंगे। आपके मन में गड़बड़ बढ़ती जाएगी, बढ़ती जाएगी और माता—पिता का दबाव इतना है, प्रेशर इतना है, जैसे—तैसे निभा रहे हैं, तो कब तक निभा पाएंगे? एक दिन आपकी सहनशक्ति खत्म हो जाएगी। फिर जोरदार विस्फोट होगा, वो अच्छा नहीं है। उससे पहले प्रेम से, शांति से अलग हो जाना अच्छा है। या तो जो चीज आप को मिली है, उसको पसंद बनाकर के व्यवस्थित हो जाएं और नहीं व्यवस्थित हो पा रहे हैं, कोई तालमेल नहीं बैठ रहा है, तो शांति से, प्रेम से अलग हो जाइए। किसी के दबाव से बहुत दिन नहीं जी पाएंगे।

प्रश्न : वैदिक तरीके को मानता हूँ, उस पर चलता भी हूँ, पर शराब की बुरी लत दोष है, कैसे बचूँ?

उत्तर : ये जो शराब पीने का दोष है, जो परेशान कर रहा है। अगर आप किसी भी दोष से बचना—छूटना चाहते हैं, तो दण्ड को याद रखें। “दण्ड के

बिना कोई सुधरता नहीं है”। आज तक दुनिया में जितने भी लोग सुधरे हैं या आज सुधरे हुए दिख रहे हैं, वो भूतकाल में सुधरे हुए थे, या आज सुधरे हुए दिख रहे हैं अथवा भविष्य में सुधरेंगे, उनके सुधार का केवल मात्र एक ही उपाय, एक ही कारण है। वो है दण्ड। जब दण्ड याद रहेगा, तो आप गलती नहीं करेंगे। और यदि दण्ड को भूल जाएंगे, तो खूब गलती करेंगे।

एक छोटा सा उदाहरण देता हूँ। जब चौराहे पर लाल-बत्ती होती है लेकिन पुलिस वाला कोई नहीं होता है, कोई चालान काटने वाला नहीं होता, कोई दण्ड देने वाला तो है नहीं तो आप लाल-बत्ती से निकल जाते हैं, रुकते नहीं। और जब लाल-बत्ती पर पाँच-सात ट्रैफिक पुलिस वालों की टीम हो और उनके पास डण्डे भी हों, वायरलेस सेट भी हो, चालान बुक भी हो, मोटर साइकिल भी हो अब आप लाल-बत्ती क्रॉस कर के दिखाएं। बताइए, करेंगे? अब नहीं करेंगे। अब क्यों रुक गए? वो दण्ड समझ में आ रहा है। अब लाल-बत्ती क्रॉस करेंगे, तो दण्ड मिलेगा। पुलिस वाले पकड़ लेंगे। और जहाँ दण्ड समझ में नहीं आता, वहाँ खूब गलती करते हैं। तो शराब पीना भी ऐसी ही गलती है। ये स्वास्थ्य के लिए भी, चरित्र के लिए भी, बुद्धि के लिए भी हानिकारक है। बुद्धिनाशक है, रोग उत्पन्न करने वाली है। और आपके घर के सदस्य भी इसको पसंद नहीं करते। आप इस तरह से सोचें।

इस प्रकार से, जो-जो दोष हम करते हैं, यदि हम इन दोषों को करते रहेंगे, तो सबसे पहला नुकसान ये होगा कि कुछ समय के पश्चात् हमारे शरीर में रोग उत्पन्न हो जाएगा और फिर हमें उसका कष्ट भोगना पड़ेगा। जब हम रोगी हो जाएंगे, तो हमारे परिवार के सदस्य भी दुःखी होंगे। वो आज भी इसको पसंद नहीं करते और रोगी होने पर और ज्यादा परेशान होंगे। उनको हमारी सेवा करनी पड़ेगी, और वो फिर हमको खूब डांट-डपट भी करेंगे, खूब गालियां भी देंगे। क्यों तुम ऐसे काम करते हो कि रोगी हो गए। तब आप भी दुःखी और वो भी दुःखी। फिर इस काम में आपको बहुत सारा पैसा भी खर्च करना पड़ेगा। अभी तो शराब पीने पर पैसा खर्च कर रहे हैं, सिगरेट-बीड़ी में खर्च कर रहे हैं। कल रोगी होंगे, तो चिकित्सा में आपको पैसा खर्च करना पड़ेगा। तो पहले तो शराब पीने पर पैसा खर्च कर रहे हैं, फिर चिकित्सा में पैसा खर्च करेंगे। वो भी नुकसान होगा। और ये सब होने के बाद फिर अगला जन्म आपको खराब मिलेगा, अच्छा नहीं मिलेगा। कोई कहेगा, साहब मैं तो

तीस साल से शराब पी रहा हूँ, कुछ भी नहीं हुआ है, अब तक। ठीक है, आपका शरीर अच्छा है, बलवान है, स्वस्थ है। वह उस शराब के कण को झेल रहा है, सह रहा है, इसलिए आपको कोई बड़ा रोग प्रकट नहीं हुआ है। लेकिन नुकसान तो हो रहा है, जो प्रत्यक्ष नहीं दिख रहा। और मान लीजिए, पूरे जीवन भर भी आपको ऐसा कोई रोग नहीं भी हुआ, तो भी इसका अर्थ ये नहीं समझना चाहिए कि ईश्वर आपको माफ कर देगा, ईश्वर आपको दण्ड नहीं देगा। अगले जन्म में आपको उसका खतरनाक दण्ड भोगना पड़ेगा, मनुष्य का जन्म नहीं मिलेगा। अगर इस तरह के दोष करेंगे, बीड़ी, सिगरेट पीना, जुआ खेलना, शराब पीना, अण्डे, मांस, खाना, तो फिर पशु-पक्षी योनियों में, कुत्ता, बिल्ली, गधा, हाथी, सुअर, बंदर, भेड़, बकरी ऐसी-ऐसी योनियों में जाना पड़ेगा। उस दण्ड को याद रखें। यदि आप दण्ड याद रखेंगे, तो आपका ये दोष छूट सकता है। कोई भी दोष छूट सकता है। अपने घर में लिखकर के दीवाल पर चिपकाइए “दण्ड के बिना कोई सुधरता नहीं है।” इस बात को जरूर लिखें, फिर साथ लिखें कि— “ईश्वर के दण्ड से कभी नहीं बच सकते”, इस वाक्य को लिखें। जनता के दण्ड से तो बच सकते हैं। यहाँ तो चोरी से, रिश्वत से, सिफारिश से छूट सकते हैं। और ईश्वर के यहाँ तो दण्ड मिलेगा ही। वहाँ नहीं बच सकते। तो ऐसे-ऐसे दण्ड को याद रखने से आप सब दोषों से बच जाएंगे।

प्रश्न : गृहस्थ जीवन का वास्तविक मतलब क्या है?

उत्तर : ब्रह्मचर्य आश्रम में रहकर विद्यार्थी पढ़-लिख कर विद्वान हो जाए और विवाह के योग्य हो जाए। इस तरह आगे वह गृहस्थ आश्रम में अपनी योग्यता के आधार पर प्रवेश करे। गृहस्थ वह है, जो घर को चलाने के नियम सीख ले। जो अपनी विवाह करने की इच्छा, वेदों के अनुसार, ऋषियों के अनुसार गृहस्थ के नियमों का पालन करते हुए पूरी करे। जो अपना वैवाहिक जीवन धर्मपूर्वक बिताए। माता-पिता, पत्नी-बच्चों आदि के प्रति अपने कर्तव्य जो वेद आदि शास्त्रों में बताए गए हैं, उन कर्तव्यों का पालन करें। धन कमाने में ईमानदारी का प्रयोग करें। न्याय से व्यवहार करें। मित्रों और रिश्तेदारों, किसी के प्रति भी अन्याय न करें। ईश्वर की उपासना प्रतिदिन नियमपूर्वक सुबह-शाम दोनों समय करें। अपने घर में यज्ञ भी प्रतिदिन करें। पशु-पक्षियों की रक्षा करें, उनको कुछ दाना-चारा खिलाएं। अतिथि, विद्वान, संन्यासी,

वैदिक—उपदेशकों का सत्संग करें। बुरे पाप कर्मों—झूठ छल, कपट, चोरी, बेईमानी आदि से बचें। ईश्वर प्राप्ति को ही जीवन का मुख्य लक्ष्य मान कर चलें। बच्चों पर ध्यान दे, उनकी उन्नति का पूरा प्रबंध करें। अपने लिए भी और बच्चों के लिए भी आध्यात्मिक और भौतिक दोनों तरह का संतुलन बनाकर चलें। इस तरह से वैवाहिक जीवन को जिएं। इस प्रकार से वैवाहिक जीवन जीना ही वास्तव में गृहस्थ जीवन का अभिप्राय है।

प्रश्न : सुकरात, नृसिंह मेहता, श्रीजी प्रभुपाद और डोंगरेजी महाराज आदि बड़े विद्वान थे। फिर भी वो अपना गृहस्थ जीवन सुखी क्यों नहीं बना पाए?

उत्तर : ये लोग भले ही अच्छे थे, बुद्धिमान थे, धार्मिक थे, ईश्वर भक्त थे, परोपकारी भी थे, इनमें बहुत सारे गुण थे। ये ठीक बात है। परंतु जो दूसरा पात्र है विवाह में, जिसके साथ विवाह किया यानि उनकी पत्नियां, इतनी योग्य नहीं थीं, इतनी संस्कारी नहीं थीं कि वो अपने पति के गुणों का महत्व समझ पातीं। उनका महान उद्देश्य समझ पातीं और उनको सहयोग कर पातीं। जिससे कि घर में बुद्धिमत्ता से, शांति से, आनंद से वो लोग सुकरात आदि जी लेते।

व्यक्ति कर्म करने में स्वतंत्र है। जो भी पूर्वजन्मों के संस्कार हैं, वर्तमान जन्म के संस्कार हैं, जो माता—पिता के दिए हुए संस्कार हैं, जो समाज के, राजा के दिए हुए प्रशिक्षण हैं, उनके कानून हैं। उनके वातावरण से जो कुछ व्यक्ति सीखता है, जो कुछ प्रेस और मीडिया से व्यक्ति सीखता है, उन सब बातों के कारण व्यक्ति प्रभावित होता है। वो इन सब कारणों से जैसा बन पाया, वैसा ही वो जीता है। तो जैसे ये सुकरात, नृसिंह मेहता आदि जो अच्छे संस्कार लेकर आए थे, जिन्होंने अच्छे काम किए, वैसे संस्कार, वैसी योग्यताएं उनकी पत्नियों की नहीं रहीं। इसलिए वो प्रयास करने के बावजूद अपने गृहस्थ जीवन को, बहुत अच्छा या सुखी नहीं बना पाए।

प्रश्न : गृहस्थ में छोटी—छोटी टकराहटें क्यों होती रहती हैं? इनसे कैसे बचें।

उत्तर : जब शादी करते हैं तो उस समय एक दूसरे को जो वचन दिया जाता है कि “मैं आपकी सेवा करूंगा, आपकी रक्षा करूंगा, कोई भी काम आप की इच्छा के विरुद्ध नहीं करूंगा,” इन वचनों को पति—पत्नी आपस में भूल

जाते हैं। इसीलिए अनेक बार गृहस्थ में छोटी-छोटी बात को लेकर आपस में तनाव होता है, तरह-तरह का टकराव होता है। जबकि विवाह के समय पति-पत्नी एक दूसरे को वचन देते हैं कि दोनों व्यक्ति मिल-जुलकर एक दूसरे की सहमति से ही कोई काम करेंगे। यदि पति वचन पर स्थिर रहता, पत्नी भी वचन निभाती, तो तनाव नहीं बढ़ता और टकराव नहीं होता। इसलिए बुद्धिमत्ता का व्यवहार तो यही है कि एक दूसरे को दिए गए सातों वचन का आदर करें। उन्हें पूरी ईमानदारी से निभाएं।

साथ ही, बीच-बीच में एक दूसरे की खुले दिल से प्रशंसा भी करते रहें। पत्नी अपने पति के गुणों को बताती रहे, उनके कथन करती रहे, उत्साह बढ़ाती रहे। ऐसे ही पति भी— “आज आप ने खाना बहुत अच्छा बनाया, वैसे तो खाना रोज ही अच्छा रहता है, लेकिन आज कुछ ज्यादा ही अच्छा है। आज आपका कपड़ा बहुत अच्छा है, इसका डिजाइन बहुत अच्छा है, आपकी पसंद बहुत बढ़िया है।” ऐसे-ऐसे कुछ भी परिस्थिति के अनुकूल एक दूसरे की सत्य प्रशंसा करें, तो संबंध आपस में अच्छा बना रहेगा। इससे गृहस्थ जीवन अच्छा चलेगा। इस बात का भी ध्यान रखना चाहिए। इस तरीके से छोटे-छोटे व्यर्थ के तनावों से बचाव संभव होगा।

प्रश्न : पत्नी को ससुराल की बातें मायके में बतानी चाहिए या नहीं? यदि पति पीटता हो, तो चुपचाप सहें या बताएं?

उत्तर : गृहस्थ जीवन में अनेक पति-पत्नी में टकराव भी होता है। टकराव स्वाभाविक है, क्योंकि दुनिया में कोई भी दो व्यक्ति ऐसे नहीं हैं, जिनके विचार सौ परसेन्ट एक जैसे हो। जब टकराव होता है, मतभेद होता है, तो आपस में नाराज भी हो जाते हैं और बातचीत भी बंद कर देते हैं। उसके बावजूद कुछ समय बाद आपस में दोनों मिल जाते हैं। फिर बैठकर समझौता करते हैं। फिर आगे चलकर प्रेम से अपना जीवन जीते हैं।

विकार तब होता है, जब ये दोनों पति-पत्नी आपस में उन बातों को प्रेम से न सुलझाएं। अगर पत्नी अपनी ससुराल की छोटी-मोटी बातें, अपने मायके में जाकर सुनाएगी, तो मामला बिगड़ेगा। अगर पत्नी ऐसे बुराई करे तो मायके वाले, जो उसके माता-पिता हैं, उनको चाहिए कि वो अपनी बेटी को रोकें और कहें “ये छोटी-मोटी बातें तुम अपने घर में सुलझाओ, हमें मत सुनाओ, वरना तुम्हारा

घर बिगड़ेगा।” इस तरह से मायके वालों को बेटी को बताना और समझाना चाहिए, कि वो अपने घर की बात अपने घर में सुलझाए, तो बहुत बढ़िया।

यदि पत्नी को पति बेरहमी से पीटता हो और धमकी देता हो कि मैं तुम्हें जान से मार डालूंगा। ऐसी कोई खतरनाक बात हो, तो फिर ठीक है, जरूर अपने मायके में बतानी चाहिए। ताकि समय रहते उस समस्या का समाधान किया जा सके। लेकिन छोटी-मोटी नोक-झोंक हो, तो ऐसी बातों को मायके में नहीं बताना चाहिए, पति-पत्नी आपस में ही उसको बैठकर सुलझाएं।

जो पति और पत्नी की आपसी बातें होती हैं, वो अपने पेरेन्ट्स को या अपने मित्रों-रिश्तेदार को, किसी को न बताएं। पति-पत्नी दोनों आपस में ही झगड़ें और आपस में ही निपटें; तब तो गृहस्थ अच्छा चलेगा। यदि कोई तीसरा बीच में टांग अड़ाएगा, हस्तक्षेप करेगा, तो वो जरूर इन दोनों के बीच में कुछ और फूट डालेगा और दोनों को लड़ा भिड़ा कर के अपना स्वार्थ सिद्ध करेगा। परिणाम होगा, कि गृहस्थ जीवन बिगड़ेगा। इसलिए इस बात की सावधानी भी दोनों को रखनी चाहिए।

प्रश्न : पति-पत्नी के व्यक्तिगत झगड़े में किसी और को सुलह के लिए शामिल करना उचित है या अनुचित?

उत्तर : गृहस्थ जीवन में अनेक बार पति-पत्नी में टकराव होता है, जो स्वाभाविक है। हालांकि इसके बावजूद कुछ समय बाद वे आपस में हंसते हुए भी हो जाते हैं। साथ बैठकर समझौता करते हैं, फिर आगे चलकर कुछ बातों में सहमत और कुछ में असहमत होते रहते हैं। इस तरह से सभी अपना जीवन जीते हैं। लेकिन पारिवारिक जीवन में विकार तब होता है, जब पति-पत्नी आपस में उन बातों को आसानी से न सुलझाएं, हठधर्मिता का रवैया अपना लें।

जब पति-पत्नी हठ या अभिमान के कारण अपनी-अपनी बात पर अड़ जाते हैं, तब झगड़ा नहीं सुलझता। ऐसी स्थिति में किसी अनुभवी बूढ़े व्यक्ति को, जिसे प्रायः कोई स्वार्थ न हो, अपना जीवन लगभग जी चुका हो, पक्षपातरहित, न्यायप्रिय एवं सत्यवादी हो, ऐसे व्यक्ति को मध्यस्थ बनाना चाहिए। उसकी बात दोनों पति-पत्नी मानें, तो झगड़ा सुलझ सकता है। उक्त गुणों से रहित, जवान, स्वार्थी व्यक्ति को मध्यस्थ न बनाएं। उससे हानि होने की संभावना है।

प्रश्न : पति-पत्नी के बीच गृहक्लेश का कारण क्या है? इससे बचने के क्या उपाय हैं?

उत्तर : गृहस्थ जीवन एक सुसंस्कारित-पारिवारिक जीवन है। जिसमें हमको यह ध्यान रखना चाहिए कि हम अपने परिवार के लिए पर्याप्त समय निकालें। आजकल हर तरफ आपाधापी चल रही है। लोग भागम-भाग में हैं, फास्ट लाइफ हो गई है, सब पैसे कमाने के पीछे पड़े हैं। इस कारण से बहुत सारा समय धन कमाने में खर्च कर देते हैं। परिणामस्वरूप जो पारिवारिक जीवन है, वो बिगड़ता है। नियमपूर्वक उसके लिए दो घंटा, तीन घंटा या कुछ न कुछ समय प्रतिदिन निकालना ही चाहिए। जो ऐसा नहीं कर पाते, उनको हानि उठानी पड़ती है।

दरअसल, जब हम परिवार के सदस्य के साथ मिलते-बैठते नहीं, उनसे बातचीत नहीं करते, तो उसकी मन की स्थिति का भी हमें पता नहीं चलता। इसका दुष्परिणाम यह होता है, कि दूर-दूर रहने से बहुत सारी भ्रांतियां और बहुत से संशय मन में पैदा हो जाते हैं, गलत विचार मन में उत्पन्न होते रहते हैं। कालांतर में ऐसी भ्रांतियों के कारण ही पति या पत्नी को ऐसा महसूस होता है, कि मेरा घर में कोई स्थान ही नहीं। मुझे जितना महत्व मिलना चाहिए, उतना महत्व नहीं दिया जा रहा है।

पत्नी ये सोचती है, कि मैं तो सुबह से रात तक बस मशीन की तरह काम करती हूँ। मुझे तो एक तरह से इन्होंने काम वाली बाई समझ रखा है। बस साहब आए, मैंने नाश्ता तैयार किया, खा-पी के अपने ऑफिस चले गए और शाम को, रात को ऑफिस से लौटे, मुंह हाथ धोया, नहाए-धोए, खाना खाया और बस इधर-उधर की दो चार बातें की, और सो गए। मेरे सुख-दुःख का, मेरी मानसिक स्थिति का, मेरी समस्याओं का कुछ हालचाल पूछा ही नहीं। क्या मैं नौकरानी बनके आई थी इस घर में, कि खाया-पिया और सो गए। इस तरह आपस की जो दूरियां हैं, वो धीरे-धीरे बढ़ती जाती हैं। मन में एक-दूसरे के प्रति अनेक प्रकार के द्वेष-दोष आ जाते हैं। हमको इनसे भी बचने का प्रयास करना चाहिए।

व्यापार करना चाहिए, पैसा कमाना चाहिए, इसका विरोध नहीं है। लेकिन उसका समय निर्धारित होना चाहिए, दो घंटा, तीन घंटा कुछ समय घर के

लिए भी निकालना चाहिए। पति का कर्तव्य है कि वह अपनी पत्नी से बात करे, बच्चों से बात करे, उनकी मानसिक स्थिति का अध्ययन करे। इससे उसको पता चलेगा कि किसके मन में क्या है, कहां भ्रांति हो रही है, उस भ्रांति को दूर करे। इस तरह एक-दूसरे के प्रति गलतफहमी को दूर करे।

अनेक बार व्यक्ति भ्रांति में पड़कर दूसरे को ऐसी कठोर भाषा बोलता है, या व्यंगात्मक भाषा बोलता है, जिसके परिणाम अच्छे नहीं होते। उससे मन की दूरियां आपस में बढ़ती जाती हैं। फिर वो खुल के बताता भी नहीं, कि मुझे आपके कारण क्या-क्या परेशानियां, क्या-क्या कष्ट हैं। इससे एक प्रकार से आपस में द्वेष बढ़ता जाता है और बारूद की तरह इकट्ठा होता जाता है। लंबे समय के बाद यह द्वेष बम-विस्फोट की तरह फूटता है। उसकी घटनाएं हम अक्सर अखबारों में पढ़ते ही रहते हैं कि फलाने ने आत्महत्या की, फलाने ने पति को मार दिया, फलाने ने पत्नी को मार दिया। इस तरह की खबरें अखबारों में आती हैं, तब पता चलता है कि इसने आत्महत्या क्यों की, अथवा अपने पति की हत्या क्यों की, अथवा पति ने अपनी पत्नी की हत्या क्यों की। उनको पारिवारिक गृहकलेश के कारण ऐसा कदम उठाना पड़ा।

पति को संशय है, उसकी पत्नी कहीं जाती है, ऑफिस में जाती है, किसी दूसरे पुरुषों से गलत संबंध रखती है। वो खुल के बात नहीं करता, तो भ्रांति या संशय के कारण जो सोच रहा हूँ, वो ठीक ही है, ऐसा मान लेता है। बिना प्रमाण की बात पर विश्वास करने से आपस में संशय बढ़ता जाता है। एक सीमा के बाद फिर वो या तो खुद मर जाता या उसको मार देता। हमें गृहस्थ में ऐसी चीजों से बचने का प्रयास करना चाहिए।

यदि इतनी सावधानी नहीं रखेंगे, इसके परिणाम आगे अच्छे नहीं आएंगे। नतीजतन परिवार में कलह बढ़ेगा, परस्पर हत्याएं होंगी या आत्महत्याएं होंगी या तलाक-डायवोर्स होगा। लापरवाही से कुछ इसी तरह के संशय बढ़ेंगे। अतएव दो घंटा, तीन घंटा रोज घर के लिए समय निकालें। व्यापार थोड़ा कम करें, अपने घर को संभालें। इस तरह गृहस्थ जीवन अच्छा चलेगा।

प्रश्न : पति-पत्नी अपने मायके-ससुराल के प्रति कैसा व्यवहार रखें?

उत्तर : पति और पत्नी दोनों को ये बात ध्यान रखनी चाहिए कि वे एक-दूसरे के परिवार वालों के प्रति कटु वचन न बोलें। दोनों को एक-दूसरे

के माता-पिता या एक-दूसरे के पारिवारिक सदस्यों के बारे में कभी निंदा-चुगली या आरोपबाजी नहीं करनी चाहिए अर्थात् पत्नी अपने ससुराल वालों के विरुद्ध कुछ उल्टा-सीधा न बोले। पति के सामने भी नहीं और अपने मायके में भी नहीं। और ऐसे ही पति को भी ध्यान रखना चाहिए, कि वो भी अपनी पत्नी की बुराई न करे। पत्नी के मायके वालों की बुराई न करे, कहीं पर भी परस्पर कटुतापूर्ण व्यवहार न करें। ऐसा इसलिए क्योंकि अब शादी कर ली, तो शादी के बाद दोनों का एक ही परिवार हो गया। ऐसे में एक-दूसरे के मान-सम्मान की रक्षा करनी चाहिए।

शादी का मतलब है, दो परिवार जुड़ करके एक बड़ा परिवार बन गया, तो सारे संबंधी हो गये अपने। तो फिर अपने संबंधियों की बुराई करना, तो कोई बुद्धिमत्ता नहीं है। इसीलिए पति-पत्नी दोनों को ही ये ध्यान रखना चाहिए, कि वो, अपने सास-ससुर की या और अन्य परिवार वालों की बुराई न करें, उनकी निंदा न करें। उनकी सुविधाओं का ध्यान रखें और उनका आदर सम्मान करें। उनमें जो अच्छी बातें हैं, उन पर ध्यान केंद्रित करें। बाकी कमी और दोष सबमें होते हैं, उनको छोड़ दें, उन पर ज्यादा ध्यान न दें। कुछ अच्छे ढंग से जीवन जीना है, तो हमें ऐसे ही चलना होगा।

फिर अगली बात है, कि पति-पत्नी आपस में एक-दूसरे के साथ कठोर भाषा न बोलें, व्यंग्यात्मक शब्दों का प्रयोग न करें। तीखी भाषा न बोलें, कड़वी बात न बोलें, जो कुछ कहना हो प्रेम से कहें।

किसी विद्वान का कथन है कि तलवार का घाव तो दवा से भर जाता है, लेकिन जबान का घाव लंबे समय तक नहीं भरता। इसलिए जबान से ऐसी कठोर भाषा कभी नहीं बोलनी चाहिए, जिससे दूसरा व्यक्ति जीवन भर परेशान हो। उससे फिर अपना आपस का प्रेम टूटेगा और फिर गृहस्थ जीवन में बिगाड़ होगा।

पति-पत्नी दोनों को ये ध्यान रखना चाहिए, कि वे समाज के या दुनिया के दिखावे के लिए फालतू खर्च न करें। अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए तो पैसा खर्च करें। दिखावे के लिए जैसे आजकल लोग बड़े-बड़े मकान बनाते हैं, बंगले बनाते हैं, बड़ा-बड़ा फर्नीचर लाते हैं, बड़े-बड़े ड्राईंग रूम बनाते हैं, जबकि वहां पर उसका कोई खास उपयोग होता नहीं। हमने इतना

बड़ा बंगला बनाया, इतनी बड़ी मोटर गाड़ी खरीदी, हमारी 20 लाख की गाड़ी है, ये 30 लाख की, 40 लाख की मर्सिडीज है। इस तरह का कार्य अक्सर लोग दिखावे के लिए किया करते हैं। तो ऐसा भी नहीं करना चाहिए। अपनी आवश्यकता हो, तो ठीक है, उस हिसाब से आप खर्च करें।

अगली बात यह है कि पति-पत्नी को आपस में एक-दूसरे पर पूरा विश्वास होना चाहिए। आपस में भरपूर प्रेम होना चाहिए, एक-दूसरे पर संशय नहीं करना चाहिए। ये तभी हो सकता है, जब वे आपस में सच बोलते हों। पति-पत्नी आपस में जो भी बात हो, खुलकर करें। अपने मन की बात एक दूसरे के सामने खुलकर रखें। अगर झूठ बोलेंगे तो एक-दूसरे पर विश्वास नहीं रहेगा। जब एक दूसरे का विश्वास नहीं रहेगा तो गृहस्थ जीवन में दरार पड़ेगी, मतलब कमजोरी आयेगी। और गृहस्थ जीवन अच्छा नहीं चलेगा। छोटी-छोटी बात पर गुस्सा करने लगेंगे, शंका करेंगे। किसी ने बहका दिया और आपने उसकी बात को मान लिया, विश्वास कर लिया। पत्नी से पूछा नहीं, कि “आप वो काम करती हैं, या नहीं करती”। और ऐसे संशय करने लगे, तो गृहस्थ जीवन बिगड़ जाएगा। ऐसे ही पत्नी को किसी ने भड़का दिया, “तुम्हारा पति वहां फलानी स्त्री के साथ घूमता रहता है, या उससे कुछ उसका गलत संबंध है।” पत्नी भी आंख बंद करके किसी की बात पर विश्वास न कर ले। समझदारी इसी में है कि वो शांति और प्रेम से अपने पति से पूछे, खुल कर पूछे कि “भई मैंने ऐसी बात सुनी है। आप बताइए सच क्या है?” पति भी सच बोले, कि ये झूठ है। तुम्हें परीक्षा करनी हो, तो खुलकर के करो। “तुम खुद ही जा कर बात कर लो उस स्त्री से, जिसका नाम मेरे साथ जोड़ा जा रहा है। तुम्हें पता चल जाएगा, मेरा उससे कोई गलत संबंध है या नहीं है।” तो इस तरह से खुलकर जिएं। अपने अंदर की बात दोनों खुलकर करें, पति भी और पत्नी भी। इससे क्या होगा? इससे संशय नहीं होगा, परस्पर विश्वास होगा। और विश्वास से ही गृहस्थ का जो महल है, वो मजबूत बनता और गृहस्थ जीवन में सुख होता है। तो इस तरह से पति-पत्नी को आपस में सावधानीपूर्वक जीवन जीना चाहिए।

जब तक पति-पत्नी खुलकर बात नहीं करते, तब तक सुखी गृहस्थ जीवन अच्छा नहीं माना जाता। गृहस्थ का मतलब ये नहीं, कि पति-पत्नी बस शादीशुदा हो गए, या दोनों साथ में एक ही मकान में रह रहे हैं। इसका अर्थ कोई

अच्छा सुखी गृहस्थ नहीं है। सुखी गृहस्थ के लिए दोनों में प्रेम होना चाहिए, संगठन होना चाहिए, एक दूसरे के लिए सेवा और त्याग की भावना होनी चाहिए, परस्पर विश्वास होना चाहिए, तो गृहस्थ अच्छा सुखदायक होगा।

ऐसे ही गृहस्थ जीवन को अच्छा बनाने के लिए कुछ और बातें भी बुद्धिमानों ने बताई हैं। आपस में संयम से जीएं। कभी-कभी मन में क्रोध उठता है, लोभ उठता है, अभिमान उठता है, काम-वासना उठती है, या इस तरह के कई दोष मन में उत्पन्न होते हैं। तो ऐसी स्थिति में पति-पत्नी दोनों ही अपने ऊपर संयम रखें, और किसी भी दोष से प्रभावित न हों, जैसे कि बताते हैं, श्रीराम और सीताजी दोनों गृहस्थ व्यक्ति थे और दोनों का गृहस्थ जीवन बहुत अच्छा था। दोनों ने बहुत संयम से जीवन जिया। उन्होंने गृहस्थ में रहते हुए भी, ब्रह्मचर्य का पालन किया। मन-इन्द्रियों पर संयम रखना, काम, क्रोध, लोभ, अहंकार आदि दोषों पर विजय प्राप्त करना, ये गृहस्थ को सुखी बनाने के उपाय हैं। अगर ऐसा नहीं करेंगे, तो गृहस्थ अच्छा नहीं बनेगा।

दुनिया की पागलपन की बातों के पीछे न जाएं, दुनिया में तो पागलपन चलता है, “साहब हम तो गृहस्थी हैं, अब गृहस्थी हैं तो कुछ तो करेंगे ही।” जरा बताइए कि कौन से शास्त्र में लिखा है कि, गृहस्थी हैं तो काम, क्रोध, लोभ के चक्कर में पड़ेंगे? ये तो मूर्ख और आलसी लोगों की बातें हैं। गृहस्थ जीवन बहुत तपस्या का जीवन है, बहुत कठिनाई का जीवन है, इसमें बहुत संयम रखना पड़ता है। तब जाकर कुछ आपस में तालमेल बैठता है, तब जाके गृहस्थी अच्छी बनती है। इसलिए संयम से रहना चाहिए, मन इन्द्रियों पर कंट्रोल रखना चाहिए।

और अगली बात है, संतुष्टि। आपस में संतोष का पालन करना चाहिए। कैसी भी परिस्थिति हो, कैसे भी साधन हों। थोड़ा मिले, तो थोड़े, अधिक मिले, तो अधिक। जैसी भी सुख-सुविधा मिले, पति-पत्नी को, उतने ही साधनों से संतुष्ट रहना चाहिए। तब तो गृहस्थ सुखी बनता है।

अगली बात है कि संतान। संतान तो गृहस्थ का बड़ा उत्तम भाग है। संतान अच्छी है, तो समझो गृहस्थ जीवन सफल है।

प्रश्न : पति-पत्नी को स्वयं और संतान को अच्छे संस्कार देना क्यों आवश्यक है? इसके अभाव में क्या खतरे हैं?

उत्तर : अगर संतान अच्छी नहीं बन पाई, तो आपका गृहस्थ जीवन फेल है, व्यर्थ है। व्यक्ति विवाह करता है, तो उसका विवाह का एक उद्देश्य ये भी होता है, कि “हम अच्छी संतान बनाएंगे। जो अपना भी कल्याण करेगी, हमारी भी कुछ सेवा कर देगी और समाज को भी सुख देगी।” ऐसी बढ़िया संतान बनाना गृहस्थ जीवन का एक उद्देश्य होता है।

यदि माता-पिता तपस्या नहीं करते, तो संतान अच्छी नहीं बनेगी। इसलिए उत्तम संतान बनाने के लिए माता-पिता को बहुत तप करना पड़ता है, और आदर्श जीवन बनाना पड़ता है। वे अच्छे-अच्छे गुण धारण करने पड़ते हैं, जिन गुणों को देखकर उनकी संतान अच्छी बनती है। इसलिए संतान को उत्तम बनाने के लिए माता-पिता यानि पति-पत्नी को तपस्या करनी चाहिए। जैसे कि बताते हैं— लव और कुश दोनों श्री राम और सीता जी की अच्छी संतान थी। उनका गृहस्थ जीवन सफल हुआ, उन्होंने अच्छी संतान बनाई। इसी तरह श्रीकृष्ण का गृहस्थ जीवन सफल हुआ। उन्होंने प्रद्युम्न जैसी वीर, बलवान, बुद्धिमान संतान बनाई। उसमें पिता की तरह सद्गुण विकसित हुए। इसलिए अच्छी संतान बनाओ तो ठीक है, आपका गृहस्थ जीवन सफल है।

प्रश्न : पत्नी बार-बार मायके में फोन करे या न करे?

उत्तर : तो इस प्रश्न का उत्तर है कि, पत्नी को बार-बार मायके में फोन नहीं करना चाहिए। आज कल लगभग सबकी जेब में मोबाइल फोन रहता ही है। मोबाइल मतलब क्या? चलने-फिरने वाला। ये मोबाइल फोन उनके काम की चीज है, जो चलते-फिरते रहते हैं, एक जगह टिकते नहीं हैं। जैसे व्यापारी लोग हैं, वो तो घूमते रहते हैं। जो व्यापारी घूमते रहते हैं, उनके लिए मोबाइल फोन अच्छा है। और जो ट्रेवलिंग (यात्रा) में रहते, कोई मेरे जैसे संन्यासी हैं। वो घूमते रहते हैं, उनको तो मोबाइल फोन ठीक है, काम की चीज है। पर बच्चे हैं, पत्नी है। वो तो घर में ही रहते हैं। बच्चे स्कूल जाते हैं, घर लौट आते हैं, उनको मोबाइल फोन की आवश्यकता नहीं है। पत्नी घर में रहती है, उनको फोन की आवश्यकता नहीं है। कभी कहीं विशेष काम से जाना हो, तो दो-चार घण्टे के लिए फोन ले जाओ, और लाके वापस रख दो।

मोबाइल फोन वैसे अच्छी चीज है, पर उसका सदुपयोग ठीक होना चाहिए। मोबाइल फोन आपकी जेब में है, इसका अर्थ ये नहीं, कि हर

छोटी-छोटी बात मायके में बताते रहो, कि आज ऐसा हुआ, आज वैसा हुआ, सास के साथ ऐसा हुआ, देवरानी के साथ ऐसा हुआ, आज पराटे बने। अपने घर ससुराल की बात वहाँ मायके में मत बताइए। अपने घर की बातें अपने घर पर रखिए।

चलिए आपसे ही एक छोटा सवाल पूछता हूँ, बेटी शादी करके ससुराल में चली गई। अब उसका घर मायका है या ससुराल? ससुराल। तो ससुराल आपका घर है, अब मायका नहीं है। आप को शादी के बाद अधिक विश्वास मायके पर करना चाहिए या ससुराल वालों पर? तो आप घर की छोटी-छोटी बात मायके में क्यों बताते हैं? इससे आपका घर बिगड़ जाएगा। मायके में सूचनाएं मत दीजिए। अपने घर की बात, घर में रखिए। आपस में थोड़ा बहुत ऊँचा-नीचा सब जगह होता है। उसको वहाँ सहन करना चाहिए।

कहीं-कहीं मायके वाले पहले से ही बेटी को पढ़ा देते हैं। ये टी.वी. सीरियल वाले बहुत बुद्धि खराब करते हैं, ध्यान रखिएगा। ये टी.वी. सीरियल वाले ऐसा पढ़ा देते हैं, सास के विषय में, जैसे कोई मगरमच्छ है, मगरमच्छ। ऐसा डरा देते हैं बिटिया को, कि “तू ससुराल में जा रही है, तेरी सास तुझे खा जाएगी। और तू उससे लड़ना-झगड़ना और फिर ज्यादा ऊँचा-नीचा हो, तो मुझे फोन करना में बैठा हूँ, तू चिंता मत करना।” ऐसा मत कहिए, आपकी बेटी का घर बिगड़ जाएगा।

अब जो ससुराल में गई है, तो उसको प्रेम से भेजो, उत्साह से भेजो। जैसा आपने बीच में सुना, कि वो ससुराल में गई, तो वहाँ उसको नए माता-पिता मिले। मायके में एक माता-पिता थे। अब ससुराल में दूसरे माता-पिता मिल गए, वो उसके माता-पिता है। ऐसा पाठ पढ़ा कर भेजो बेटी को, कि “तुम दूसरे घर में जा रही हो, वहाँ जो तुम्हारे सास-ससुर हैं, वो तुम्हारे माता-पिता है। उनको माता-पिता ही समझना।”

अगर आपकी बेटी ससुराल में गई और उसको मायके की याद आती है कि मेरे घर में मायके में बहुत अच्छा सुख था, यहाँ उतना नहीं है। तो इसका अर्थ ये समझना चाहिए कि ससुराल वालों में कमी है। उसको मायका याद नहीं आना चाहिए। और अगर ससुराल में जाकर वो इतनी खुश हो गई, वो इतनी प्रसन्न हो गई, कि मायके को भूल गई, तो समझ लीजिए, कि ससुराल वाले सफल,

उनका घर सफल। ससुराल वालों को ऐसा घर बनाना चाहिए, जो बहू आई है, उसको मायका याद ही नहीं रहे और वह भूल जाए अपने माता-पिता को, यही उसका घर है। शादी की थी सुख प्राप्ति के लिए। और ससुराल में बेटी को इतना अच्छा सुख और सम्मान मिला, कि वह मायके को भूल गई तो समझना चाहिए, कि शादी करना सफल हुआ। ऐसा गृहस्थ सफल होता है।

कृपया इस बात को ध्यान में रखें, घर की छोटी-छोटी बातें, मायके में न बताएं, फोन का दुरुपयोग न करें। वो तो इमरजेंसी के लिए होता है। मोबाइल फोन पर छोटी-छोटी बात मायके में न बताएं और आपस में ही उसको व्यवस्थित करें, समायोजन करें।

प्रश्न : माता और पत्नी की फरियाद में से पति किसको न्याय दें?

उत्तर : वॉट्स-एप में एक मैसेज में लिखा था, कि “प्रत्येक स्त्री अपने बेटे को श्रवण कुमार तो बनाना चाहती है, पर प्रत्येक पत्नी अपने पति को श्रवण कुमार बनते हुए नहीं देख सकती है।” माँ चाहती है मेरा बेटा, मेरी सेवा करे। और पत्नी ये चाहती है कि वो मेरे हाथ में रहे। माँ की सेवा नहीं करे, बताइए घर कैसे चलेगा। ऐसे नहीं चलेगा।

वेदों का सिद्धांत है, हमको न्याय से चलना होगा। क्या पत्नी चाहती है, कि पति उस पर अन्याय करें, हाँ या न? क्या माँ चाहती है कि बेटा मुझ पर अन्याय करें? दोनों में से कोई भी नहीं चाहता। न पत्नी चाहती है कि पति मुझ पर अन्याय करें, न माँ चाहती है, कि बेटा मुझ पर अन्याय करें। दोनों को न्याय चाहिए, तो आपके सवाल का जवाब है, दोनों को न्याय मिलना चाहिए। पत्नी फरियाद करे, चाहे माँ फरियाद करे, दोनों की फरियाद सुनो, दोनों पक्षों की बात सुनो। एक पक्ष की बात सुनकर कभी न्याय नहीं हो सकता। दोनों पक्षों की सुनिए, निरपेक्ष भाव से सुनिए, शांति से सुनिए और फिर बुद्धि को संतुलित रखकर के ठीक-ठीक न्याय करिए। यदि माँ का दोष हो, तो माँ को समझाएं। पत्नी का दोष हों, तो पत्नी को समझाएं। जिसका दोष हो उसको समझाएं। दोनों को न्याय मिलना चाहिए। इससे आपका गृहस्थ बहुत अच्छा चलेगा।

प्रश्न : कभी-कभी पति के साथ झगड़ा होने पर माताएं अपने पुत्रों को पति के विरुद्ध भड़काती हैं। वो उनको अपने रक्षा-कवच के रूप में इस्तेमाल करती हैं। क्या यही रवैया अपनाना सही माना जाएगा?

उत्तर : जी नहीं। माताओं को ऐसी भूल कभी नहीं करनी चाहिए। पति-पत्नी के आपस के निजी मामले होते हैं, अनेक बातों में मतभेद होता है, कहीं व्यवहार में असंतोष होता है। कहीं-कहीं सास-बहू के कारण भी अनेक घटनाएं ऐसी होती हैं, जो कि माँ को सुखदायक नहीं होती हैं, तब भी किसी भी माँ के द्वारा अपने बच्चे को इस तरह से भड़काना ठीक नहीं।

पत्नी स्वयं अपने पति को उत्तर दे यह सही है। बेटा 15, 17 साल का हो, अभी वयस्क भी नहीं हुआ और वो अपनी माँ का पक्ष ले और पिता से टक्कर ले, यह गलत है। बेटा बदतमीजी से कहे, “तुमने मेरी माँ को दिया ही क्या है आज तक, जब से माँ शादी करके आई है, तब से आज तक उसको अच्छे कपड़े नहीं दिलाए, सोना, चांदी नहीं दिलाया, उसकी इच्छाएं पूरी नहीं कीं।” बेटा कहे कि “तुम्हारी वजह से मेरी माँ को हमेशा दादी, दादा के ताने ही सुनने को मिले” आदि-आदि इस तरह की जो बातें हैं, अगर कोई जवान बेटा, अपने पिता के सामने कहता है, तो ये अत्यंत अनुचित बात है। माँ को कभी भी अपने पक्ष को विजयी बनाने के लिए पुत्र को इस्तेमाल नहीं करना चाहिए। इससे अनेक हानियां होती हैं।

जो पिता दिन-भर मेहनत करता है, खूब धन कमाता है, उनकी सब प्रकार की सुरक्षा करता है, पत्नी-बच्चों के लिए वर्षों तक तपस्या करता है, जब उस पिता को अपने बेटे से ही ऐसी बात सुनने को मिले, तो उसके दिल पर क्या बीतेगी, इसे वे मातायें नहीं समझती, वो ध्यान नहीं देती और अपना पक्ष जिताने के लिए बच्चों को ऐसे भड़काती हैं। उनका इस तरह का व्यवहार उचित नहीं है।

ऐसा करने से पिता को अनेक प्रकार के तनाव का सामना करना पड़ सकता है। इससे पति-पत्नी के रिश्ते में और बिगाड़ आएगा। आपस में प्रेम, श्रद्धा, संगठन टूट जाएगा, कम हो जाएगा, पुत्र के सामने भी पिता को शर्मिंदा होना पड़ेगा कि “ये मेरे विरुद्ध बोलने लग गया है,” जबकि हमारा ये पति-पत्नी का निजी मामला था। इस तरह के निजी विवाद में बेटे को बोलने का कोई अधिकार नहीं है। इसलिए जब 15-17 साल का बेटा ऐसी बातें करता है, तो इससे पिता को बहुत धक्का लगता है। मानसिक तनाव से उसको शारीरिक-रोग भी हो सकते हैं। कभी-कभी ज्यादा तनाव से, चिंता से, झटके लगते हैं, व्यक्ति को लकवा मार जाता है, कभी हार्ट-अटैक आता है,

कभी एसिडिटी हो जाती है, कभी उसको डायबिटीज भी हो जाती है। इसलिए माताओं को ये ध्यान रखना चाहिए कि वो इस प्रकार के प्रयोग न करें, अपने पति के विरुद्ध बच्चों को न भड़काए बल्कि समझदारी से आपस में ही उस बात को निपटाएं जिस बात पर उसका, पति के साथ मतभेद है। जिस विषय पर पति-पत्नी का आपस में मतभेद है, उसमें बच्चों को नहीं लाना चाहिए।

बच्चों की अपनी सीमा होती है। जो पति है, पुरुष है, उसका एक ओर पत्नी के साथ संबंध है, वो अलग तरह का है। फिर बेटे के साथ जो संबंध है, वो अलग प्रकार का है। जिन लोगों के लिए वो दिन-रात मेहनत करता है, उन लोगों से उसको यथोचित व्यवहार, सम्मान-पूर्वक मिलना चाहिए। यदि इस प्रकार से सम्मान मिलेगा तो परिवार में संगठन, शांति, एकाग्रता बनी रहेगी, परस्पर प्रेम होगा, सुख-समृद्धि होगी, और गृहस्थ-जीवन अच्छा चलेगा। इसलिए माताओं को इस विषय में खास ध्यान रखना चाहिए।

कभी-कभी तो ऐसा भी होता है, कि माँ ने कोई शिकायत भी नहीं की बेटे को, और बेटा माँ के प्रति स्नेह भाव रखता है और कभी कोई छोटी-मोटी घटना देखकर वो बीच में पिता के विरुद्ध बोलने भी लगे, तब भी माँ का ही कर्तव्य है कि वो बेटे को रोके कि “नहीं-नहीं तुम चुप रहो, तुम्हारा ये विषय नहीं है, ये हमारा आपस का मामला है, तुम अपना काम करो। हम इसे आपस में सुलझा लेंगे तुम्हें इस विषय में बोलने का अधिकार नहीं है।” ऐसे समझदार माँ को, अपने बच्चों को, रोकना चाहिए, तो परिवार में संगठन, शांति, व्यवस्था बन सकती है। अन्यथा इस कारण से, कई बार पति अपनी पत्नी से नफरत भी करने लगता है, जो आगे चलकर अलगाव में भी बदल कर पूरे वैवाहिक जीवन को तहस-नहस कर सकता है।

प्रश्न : स्वार्थ पूरा होने पर पत्नी, पुत्र की हो जाती है और पति का अपमान करने लगती है। ऐसा क्यों?

उत्तर : आपने खुद ही बोला स्वार्थ पूरा हो गया उसका। ये ही तो उत्तर है। तो जब पत्नी का स्वार्थ पूरा हो गया और उसको बेटा मिल गया और बेटे से उसका तालमेल, ट्यूनिंग अच्छी हो गई तो पति को कौन पूछेगा?

ऐसा नहीं करना चाहिए। अपनी वैदिक-परंपरा कहती है कि, हमें कर्तव्य का पालन करना है। बेटे के प्रति आपका अलग कर्तव्य है, पति के प्रति अलग

कर्त्तव्य है। दोनों के प्रति अपने अलग-अलग कर्त्तव्य हैं। अपने अलग-अलग कर्त्तव्य को पहचानें और दोनों के प्रति अपने कर्त्तव्य का पालन करें।

यदि माँ, बेटे के साथ तालमेल बैठाकर रखती है, पति को पूछती नहीं है, उसका ध्यान नहीं देती है, उसके प्रति अपना कर्त्तव्य नहीं निभाती है तो आपका गृहस्थ अच्छा नहीं चलेगा, टूट जाएगा। उसमें दरार आएगी, रिश्ता बिगड़ेगा।

उन माताओं से मेरा निवेदन है, जो कि इस तरह का व्यवहार करती हैं कि उनका स्वार्थ केवल बेटे से ही नहीं है, उनका स्वार्थ पति से भी है। अगर वो बेटे का स्वार्थ का लाभ देख रही हैं तो पति से जो लाभ हो रहा है तो उसको खोना ठीक नहीं है। ये उनकी समझदारी नहीं है। बुद्धिमत्ता से काम लें, बेटा आपकी अलग सेवा करेगा, उससे आपको अलग फायदे हैं। जबकि पति आपकी अलग रक्षा करेगा, उससे आपको अलग फायदे हैं। तो दोनों फायदे लेने चाहिए। अगर आप बुद्धिमत्ता रखते हैं, तो दोनों के साथ तालमेल बैठाकर रखें। पत्नी के साथ भी और बेटे के साथ भी इसलिए एकपक्षीय होकर, एक पक्ष का लाभ देखना, दूसरे को छोड़ देना, ये बुद्धिमत्ता नहीं है, इससे आप को नुकसान होगा।

प्रश्न — हमारे जीवन के हर क्षेत्र के स्त्रीतत्व में दौड़ क्यों है? आत्म तत्व तो दोनों ही स्त्री और पुरुष में एक है, फिर हर तरफ ये पुरुष तत्व प्रधान क्यों?

उत्तर : एक थाने में थानेदार एक ही होता है, दो थानेदार रखेंगे तो थाने में झगड़ा हो जाएगा, थाना चलेगा नहीं। घर की व्यवस्था, समाज की व्यवस्था, देश की व्यवस्था को ठीक-ठाक रखने के लिए ईश्वर ने ही ये संविधान बना रखा है। और वो स्त्रियों की सुरक्षा के लिए, स्त्रियों के फायदे के लिए ही है।

दो नहीं, एक ही हो थानेदार

पति-पत्नी का जो अभिमान है, जो आपस में टकराता है, वो न टकराएँ। उसके लिए हमको ये समझ लेना चाहिए कि एक पुलिस स्टेशन में जो स्टेशन हेड ऑफिसर होता है एस.एच.ओ., वो एक होता है या दो होते हैं? एक होता है, अगर एक थाने में दो थानेदार रख दें, तो थाना चलेगा? नहीं, चलेगा न। तो आपके घर में भी एक थानेदार होना चाहिए, दो थानेदार नहीं। मेरी बात समझ

गए। आप पति-पत्नी दोनों एक घर में थानेदार बन जाएंगे, तो घर नहीं चलेगा। एक थानेदार होना चाहिए। हाँ जी बताइये बड़ा कौन, छोटा कौन, पति बड़ा या पत्नी बड़ी? पति बड़ा। बस तो पति थानेदार। पति के नीचे रहो।

पति-पत्नी के रूप में स्त्रियों को, पति से छोटा मानना चाहिए। पति को बड़ा मानना चाहिए, पत्नी उससे छोटी। तो ऐसे छोटा बड़ा बनकर रहोगे, तो घर अच्छा चलेगा और दोनों बराबर के रहेंगे, तो फिर घर नहीं चलेगा।

वैदिक-सभ्यता में, वैदिक-परंपरा में स्त्रियों को बहुत ऊँचा स्थान दिया गया है, बहुत ऊँचा सम्मान दिया गया है। मनु-स्मृति में स्त्रियों को बहुत ऊँचा माना है। लेकिन एक स्थान पर 'स्त्री' को ऊँचा माना है, एक स्थान पर 'पुरुष' को ऊँचा माना है। दोनों का अलग-अलग क्षेत्र है। अब वो अलग-अलग क्षेत्र इस प्रकार से है कि जब पति और पत्नी का रिश्ता हो, तो पति बड़ा और पत्नी छोटी। इस तरह से मानकर व्यवहार करें, तो घर में समस्या नहीं आएगी, टकराव नहीं होगा, अभिमान नहीं टकराएगा, घर में सुख-शांति रहेगी, आनंद रहेगा।

जब माता-पिता, इन दोनों स्त्री-पुरुष का बच्चों के साथ यह रिश्ता हो, तो उसमें माता बड़ी होगी और पिता छोटा होगा। माता बड़ी, पिता छोटा। और पति-पत्नी में पति बड़ा, पत्नी छोटी। तो एक क्षेत्र में पुरुष बड़ा हो गया और एक क्षेत्र में स्त्री। दोनों की बात बराबर हो गई। तो स्त्रियों को इन्फिरिटी कॉम्प्लैक्स लाने की आवश्यकता नहीं है, कोई समस्या नहीं है। एक क्षेत्र में वो बड़ी है, एक क्षेत्र में पति बड़ा है। इस तरह से घर में चलिए, बहुत आनंद से जिएं।

अच्छा ये बताइए, क्या आप स्त्री और पुरुष दोनों को एक समान मानते हैं, सौ परसेन्ट? हाँ या न? न। ये सौ परसेन्ट बराबर नहीं मानते। वो ही तो ऋषि भी कहते हैं, कि पुरुष बड़ा, स्त्री छोटी।

स्त्रियों पर कुछ बंधन लगाए गए हैं, कुछ नियम लगाए गए हैं, वो उनकी सुरक्षा के लिए हैं। स्त्रियाँ ऐसा न मानें, कि हमारा शोषण हो रहा है। हमको अकेले घूमने नहीं देते, हमको रात को पिकचर पार्टी में डांस नहीं करने देते। ऐसे-ऐसे जो नियम बनाए गए हैं, कि स्त्रियों के लिए कहा जाता है, कि तुम अकेले मत जाओ, एक-दो साथ में जाओ। पुरुष तो अकेला कहीं भी घूमें, उसको छूट है। और स्त्री को अकेले घूमने की छूट नहीं है। वो स्त्री की सुरक्षा के लिए नियम बनाए गए हैं। उसके ऊपर कोई अन्याय नहीं किया गया।

आप सभी जानते हैं, कि स्त्री पुरुष में अन्तर है। पुरुष ताकतवर है, बलवान है। स्त्री शरीर की शक्ति से थोड़ी कमजोर है। हर एक व्यक्ति के संस्कार, अच्छे-बुरे सब तरह के होते हैं, किसी-किसी के अच्छे नहीं भी होते हैं। तो स्त्रियों की सुरक्षा के लिए नियम बनाया गया है, कि यदि कोई दुष्ट व्यक्ति आपको अकेले में मिल गया, तो हानि होगी, नुकसान होगा। आपकी सुरक्षा व इज्जत को खतरा है, इसलिए अकेले मत जाओ। तो स्त्रियाँ ऐसा न सोचें, कि हम पर कोई अन्याय किया जाता है। हमको हर जगह दबाकर रखा जाता है। हर जगह नहीं दबाया जाता, अनेक स्थानों में आपकी छूट है।

हमारे यहाँ “मातृमान, पितृमान, आचार्यमान पुरुषो वेद,” के अनुसार सबसे पहला गुरु माता है। वहाँ स्त्रियों को प्राथमिकता दी गई है। और इसके संतुलन के लिए ऋषियों ने ये बताया कि घर के जितने काम हैं, घर के अन्दर की व्यवस्था, वो सब स्त्रियों के आधीन है। और जो घर से बाहर के काम हैं, भागना-दौड़ना, पैसे कमाना, भार उठाना, यात्राएं करना, देश-विदेश में धक्के खाना, जो भी, वो पुरुषों के आधीन हैं। अब बताइए, दोनों के बराबर काम बांट रखे हैं। फिर आप ये क्यों सोचते हैं कि हमको सब जगह दबाया जाता है। काम बांट रखा है, वो आपकी सुरक्षा के लिए।

प्रश्न : लिव-इन-रिलेशन को मान्यता देनी चाहिए कि नहीं?

उत्तर : लिव-इन-रिलेशनशिप अर्थात् बिना विवाह के साथ रहना, बिल्कुल गलत है, चरित्रहीनता है। ये विदेशी परंपरा है। ये भारतीय परम्परा बिल्कुल नहीं है। इसके कारण आपके परिवार टूटेंगे ही, रिश्ते टूटेंगे, आपस में द्वेष बढ़ेगा, लड़ाई-झगड़े बढ़ेंगे, कोर्ट में केस बढ़ेंगे, तलाक बढ़ेंगे। लिव-इन-रिलेशनशिप भारतीय परंपरा के अनुकूल बिल्कुल भी नहीं है, इससे बच के रहना।

प्रश्न : जो लड़की ये सोचती है कि गृहस्थ आश्रम दुःखी करने वाला आश्रम है, इसमें जाना नहीं चाहिए तो भी संसार, गृहस्थ में जाने के लिए मजबूर करता है, तो उसे क्या करना चाहिए?

उत्तर : बहुत अच्छा प्रश्न है। जो बिटिया ये चाहती है कि गृहस्थ में न जाऊँ, उसको यदि पहले से समझ में आ रहा है कि गृहस्थ में जाने से मेरा दुःख बढ़ेगा और संसार के लोग उससे जबरदस्ती करते हैं, कि तुम गृहस्थ में

जाओ तो उसे क्या करना चाहिए। इसका उत्तर ये है, कि हमारे सामने दो विकल्प हैं। एक तो गृहस्थ में जाओ, फिर वानप्रस्थी बनो, फिर संन्यासी बनो। और दूसरा विकल्प है— गृहस्थ एवं वानप्रस्थ में न जाकर ब्रह्मचारी से सीधा संन्यासी बनो।

जीवन का मुख्य लक्ष्य है, मोक्ष प्राप्ति। यदि बिटिया, विवाह नहीं करना चाहती है, तो न करे। विवाह में जबरदस्ती नहीं होनी चाहिए। क्योंकि विवाह करना या न करना; यह सबका व्यक्तिगत कार्य है। व्यक्तिगत कार्य में सब स्वतन्त्र होते हैं। जबकि सामाजिक कार्य में परतन्त्र होते हैं। विवाह करने से यदि दुःख बढ़ता है, यह उस बिटिया को विवाह से पहले ही समझ में आ रहा है तो विवाह करके अपना दुःख क्यों बढ़ायें?

यदि परिवार वाले जबरदस्ती विवाह करेंगे, तो वह बिटिया कोई आत्महत्या जैसा गलत कदम न उठा लेवे। यद्यपि ऐसा करना नहीं चाहिए। फिर भी अविद्या के कारण लोग ऐसा कर लेते हैं। तब परिवार वालों को क्या लाभ होगा? इससे तो अच्छा था, बिटिया, शादी न करके साधना/भक्ति करे, समाज की सेवा करे। उस परोपकारिणी, ब्रह्मचारिणी, ब्रह्मवादिनी पुण्यात्मा बेटी को देखकर प्रसन्न होंगे परिवार वाले। जबरदस्ती विवाह करके या तो बेटी ही खो दी या जीवनभर उसे दुःख दिया। इस प्रकार से तो ईश्वर, उन परिवार वालों को बहुत दण्ड देगा, जो अपने बेटा-बेटी का जबरदस्ती विवाह कराते हैं।

प्रश्न — क्या वर्ण व्यवस्था के अनुसार ही विवाह करना चाहिए? क्या यह वेदों के अनुकूल है।

उत्तर : जी हाँ, वर्ण मिलाकर के, गुण, कर्म, स्वभाव मिला कर के विवाह करना चाहिए। ये बात वेदों के अनुकूल हैं। अगर पुरुष ब्राह्मण स्तर का है, ब्राह्मण की योग्यता वाला है, तो जिस कन्या के साथ विवाह करना है, वो भी ब्राह्मण की योग्यता वाली हो। दूसरे शब्दों में यूँ कहूँ कि, पुरुष अगर शिक्षक अध्यापक है, वो ब्राह्मण वर्ण में आता है, उसको अगर कन्या से विवाह करना है, तो वो भी या तो टीचर हो और या फिर विद्या में रुचि रखती हो, प्रेम रखती हो। ऐसे गुण कर्म वाली स्त्री से उसको विवाह करना चाहिए।

आपके मन में शंका यह कि उठेगी, कि पहले मैंने कहा था, कि पैसा कमाना पुरुषों का काम है, स्त्रियों का नहीं। और अब मैं कह रहा हूँ कि पुरुष

टीचर हो, तो स्त्री भी टीचर हो। ऐसे गुण कर्म मिलाकर विवाह करना चाहिए। तो इस संदर्भ में मुझे ये स्पष्टीकरण करना है, कि कुछ-कुछ क्षेत्रों में स्त्रियों को काम करना चाहिए। जो समाज की व्यवस्था को बनाये रखने के लिए आवश्यक हैं, उनमें से एक शिक्षा विभाग है। वेदों के अनुसार ये सिद्धांत है, पुरुष-पुरुषों को पढ़ावें और स्त्रियां-स्त्रियों को। जैसे मैंने पूर्व में कहा कि, गुरुकुल अलग होना चाहिए। शिक्षा विभाग में स्त्रियों को काम करना चाहिए। तो पढ़ाने के लिए उन स्त्रियों को टीचर बनना पड़ेगा। इसलिए विवाह करें, तो ब्राह्मण-ब्राह्मणी के साथ ही विवाह करें, क्षत्रिय-क्षत्रिया के साथ विवाह करें, वैश्य-वैश्या के साथ विवाह करें।

किसी-किसी क्षेत्र में स्त्रियों को जाना आवश्यक है। मैंने एक उदाहरण बताया है कि, शिक्षा विभाग में स्त्रियों को टीचर बनना चाहिए, ताकि वो स्त्रियों को पढ़ा सकें। दूसरा मेडीकल साइंस में, चिकित्सा विभाग में स्त्रियों को जाना चाहिए, ताकि स्त्रियों की चिकित्सा स्त्रियां करें, पुरुषों को न करनी पड़े। इसी तरह से पुलिस विभाग में स्त्रियों को जाना चाहिए। क्या चोरी करने वाले, सारे पुरुष होते हैं? क्या स्त्रियां चोरी नहीं करती हैं? करती हैं या नहीं? ऐसी भी पकड़ी जाती हैं, महिलाएं, जो चोरी करती हैं, जो कानून तोड़ती हैं, जो बिना टिकट चलती हैं, ट्रेन में ऐसी भी मिलती हैं। उन महिला अपराधियों को कौन पकड़ेगा? उसके लिए महिला पुलिस चाहिए।

सड़क पर आन्दोलन होगा, उसमें पुरुष भी आयेंगे और स्त्रियां भी आएंगी। अब जो आन्दोलन में, आन्दोलनकारी लोग जब अतिक्रमण करेंगे, तो उनको रोकना पड़ेगा। जब रोकना पड़ेगा, तब पुरुषों को तो पुरुष पुलिस रोक लेगी, और स्त्रियों को कौन रोकेगा? उनके लिए महिला पुलिस चाहिए। वो उनको रोकेंगी।

ऐसे-ऐसे अनेक क्षेत्रों में स्त्रियों को जाना चाहिए। पर सेना में स्त्रियों को जाने की कोई आवश्यकता नहीं है। आज तो एयर फोर्स में जा रही हैं महिलायें। क्यों भाई, वो पुरुषों से ज्यादा बलवान होती हैं क्या? नहीं। तो फिर फालतू में क्यों वायु सेना में जा रही हैं? नेवी में जा रही हैं, आर्मी में जा रही हैं, वहाँ महिलाओं का कोई काम नहीं। और वहाँ पर बहुत सारे किस्से हमने सुने हैं। वहाँ पर उनका शोषण होता है, अन्याय होता है, अत्याचार होता है, कई महिला पुलिस ऑफिसर अथवा महिला सैनिक, सुसाइड कर लेती हैं। उनके साथ दुर्व्यवहार होता है। उनकी सुरक्षा ठीक से नहीं हो पाती है। और

भारत में दण्ड व्यवस्था कितनी फेल है, वो आप जानते ही हैं। दण्ड व्यवस्था फेल होने से, वहाँ पर उन क्षेत्रों में स्त्रियों को जाना आवश्यक नहीं है, अच्छा नहीं है, उपयोगी नहीं है। आपकी सुरक्षा आपके हाथ में है। अगर भारतीय शासन की दण्ड व्यवस्था अच्छी होती, मजबूत होती, जैसी अरब देशों में है तब कोई खतरा नहीं रहा था। तब भी आपत्तिकाल में ही स्त्रियों को सेना आदि में जाना चाहिए, जबकि पुरुष सैनिक न मिलते हों।

प्रश्न : शादी करने के लिए जन्म-कुण्डली मिलानी चाहिए या नहीं?

उत्तर : जो जन्म-कुण्डली आजकल लोग मिलाते हैं, उसको मिलाने में तो कोई लाभ नहीं है। उस जन्म-कुण्डली में कुछ लिखा भी नहीं है तो मिलाएंगे क्या? वो तो सिर्फ, लकीरें मार के एक, दो, तीन, चार, ऐसे लिख देते हैं। उसमें कुछ नहीं लिखा।

वास्तव में पुराने समय में ब्रह्मचर्य आश्रम में ब्रह्मचारी नगर से दूर जंगल में गुरुकुल में पढ़ते थे। जब पढ़ाई पूरी हो जाती थी तो उनसे पूछा जाता था, तुमको शादी करनी या नहीं करनी? तो जो कहते थे, हां करनी, उनकी जन्म-कुण्डली मिलाते थे। वो कुण्डली वैसी नहीं होती थी, जैसी आजकल की है। वो ऐसी होती थी, कि जब बच्चे का जन्म होता था तो एक नोट-बुक में जन्म से लेकर के पाँच वर्ष तक छोटे बच्चे के गुण, कर्म, स्वभाव उसकी माँ लिखती थी। उसको इतिहास की पुस्तक अर्थात् हिस्ट्री-बुक कहते थे। उसमें उस बच्चे की माँ उसका पूरा हिसाब लिखती थी, कि अब इसकी रुचि कैसी बदल रही है, अब इसके स्वभाव में क्या परिवर्तन आ रहा है, इसको क्या खाना पसंद हैं, इसको खिलौने किस तरह के पसंद हैं, ये शांत रहता है, मस्त रहता है, या दुःखी रहता है, चिड़चिड़ा है। जो भी स्वभाव है, उसका सारा हिसाब-किताब, माँ के द्वारा लिखा जाता था। अब पाँच साल के बाद बच्चा थोड़ा बड़ा हुआ, खेलकूद में भाग लेने लगा, दौड़ने लगा, पिताजी के साथ घूमने लगा, तो तीन वर्ष तक फिर पिताजी की जिम्मेदारी थी। वे उसी हिस्ट्री-बुक में, उसका हिसाब-किताब लिखते थे। आठ साल में उसको गुरुकुल भेज दिया और उसकी हिस्ट्री-बुक भी गुरुजी के हवाले कर दी। अब गुरुजी की जिम्मेदारी नोट करने की। जो भी परिवर्तन आता था, वो सारा गुरुजी लिखते थे। जन्म से लेकर के शादी होने के समय तक, उसकी पूरी हिस्ट्री लिखी जाती थी।

लड़कियों की भी और लड़कों की भी, दोनों की ही लिखी जाती थी। अब जब पढ़ाई पूरी हो गई, तब उनसे पूछते थे। शादी करनी है, तो वो कहते थे, हाँ करनी है। तो उनके गुरुजन वो हिस्ट्री-बुक मँगवाते थे, लड़कों की भी, लड़कियों की भी, फिर उसको मिलाते थे। उसमें लिखा रहता था, कि इस लड़के का गुण, कर्म, स्वभाव, रुचि कैसी है और इस लड़की की रुचि कैसी है?

जिस-जिस का गुण, कर्म, स्वभाव आपस में मिलता था, उस-उस का विवाह करते थे। जो इस प्रकार की कुण्डली मिलाई जाती थी, वो आजकल कोई लिखता नहीं तो मिलाने का कुछ लाभ नहीं। आज की कुण्डली अब कम्प्यूटर से आप चाहे जैसी बना लो, ऐसी लकीरें मारके दो-तीन, चार, पाँच, छह, सात, आठ और जो मर्जी हो लिखवा डालो। जिसकी कुण्डली नहीं मिलती, पैसे दो, तो सब मिलवा देंगे। वो तो पैसे की माया है। इस प्रकार, ऐसी कुण्डली मिलवाने की जरूरत नहीं है। पिछली भूल हो गई, सो हो गई, उसमें सुधार करें। जिनके बच्चे छोटे हैं, वे अभी से अपने बच्चों का इतिहास लिखना शुरू करें। बीस साल बाद आपको लाभ मिलेगा। और अब भी नहीं लिखेंगे, तो 20 साल बाद फिर आपके सामने यही समस्या आएगी कि कहां शादी कराएं, किससे विवाह संबंध करें। आजकल किसी की भी नहीं लिखी। इसलिए अब तो शादी एक जुआ है। यूँ पासा फेंक दिया। तुम्हका लग गया तो ठीक है, नहीं तो अपना पिटते रहो, मार खाते रहो, वो तो सभी को मालूम है।

प्रश्न : गृहस्थ में प्रवेश करने से पहले एक-दूसरे को समय देना चाहिए या बिना समय दिए ही दोनों का विवाह करा देना चाहिए?

उत्तर : पुराने समय में तो कुण्डली हिस्ट्री मिलाकर, आपस में सामने बैठकर एक-दूसरे का इंटरव्यू लेते थे। जब माता-पिता और गुरुजन उनकी हिस्ट्री को मिलाते थे, तो उनको ये पता चलता था, कि उनके गुण-कर्म मिल रहे हैं तो लड़की को बुलाते थे। लड़का-लड़की सामने बैठते थे। गुरुजन कहते थे- तुम आपस में बातचीत कर लो, एक दूसरे का इंटरव्यू कर लो आधा घंटा-एक घंटा उनको समय दिया जाता था, और फिर उनसे पूछा जाता था, अपना विचार बताओ। क्या विचार है, शादी करनी है या नहीं? वो दोनों आपस में दो-दिन या चार दिन बातचीत करके जब उनको भरोसा हो जाता था, कि हाँ ये पात्र मेरे लिए ठीक है, तब हाँ बोलते थे। तो अंतिम निर्णय लड़का-लड़की का होता था, माता-पिता का नहीं।

एक ये भी समस्या है, माता-पिता जो भी तय करते हैं, वो बच्चे को मानना है, ये वैदिक सिद्धांत नहीं हैं, ये वेदों के अनुकूल नहीं हैं। ये त्याग नहीं है। शादी करनी है, लड़के-लड़की को। विवाह में मुख्य प्रयोजन लड़का-लड़की का है। इसलिए शादी करना, नहीं करना, लड़का-लड़कियों का निर्णय है। वो आपस में एक-दूसरे को पहचानें, चर्चा करें। बहुत सारा तालमेल बैठा ही दिया, गुरुजनों ने, उनकी इतिहास की पुस्तक से। और अब तो थोड़ी-बहुत औपचारिकता बची है, कि आपस में जो पूछना है, पूछ लो। और जो पूछ-पाछकर आपको संतोष हो जाए, “हां” हो जाए, फिर तो शादी कर देंगे। और अगर “न” कर दी, तो शादी नहीं करेंगे। फिर भविष्य में जिसके साथ तालमेल बैठेगा, उसके साथ शादी करेंगे। इस तरह से गुण, कर्म, स्वभाव मिलाके, विवाह करना चाहिए। इस तरह से समय देना चाहिए, आजकल की जैसी पद्धति है, वैसी नहीं होनी चाहिए कि दोनों को सिनेमा का टिकट दे दिया, कि जाओ फिल्म देख आओ, वहाँ तो पता नहीं क्या गड़बड़ करेंगे वो, ये पद्धति ठीक नहीं है। सही पद्धति है कि— सामने बैठाओ, उनसे बातचीत करो आमने-सामने 10 मीटिंग करो, फिर जा के कोई अंतिम निर्णय करो।

प्रश्न : क्या दूसरी जाति में विवाह कर सकते हैं?

उत्तर : बिल्कुल कर सकते हैं, भिन्न जाति में विवाह कर सकते हैं, लेकिन विवाह में गुण, कर्म, स्वभाव मिलना चाहिए। एक-दूसरे को पहचानना चाहिए, अच्छी तरह से। मैं यहां “लव-मैरिज” की बात नहीं कर रहा हूँ। गुण, कर्म, स्वभाव मिलाकर विवाह करना चाहिए, ताकि लड़का-लड़की के परिवार वाले भी सहमत हों और लड़का-लड़की भी सहमत हों। यदि अच्छे पढ़े-लिखे हों, दोनों के विचार मिलते हों तो, भिन्न जाति में भी कर सकते हैं।

प्रश्न : लड़की में मंगल हो, तो क्या उसका विवाह मंगल वाले लड़के से ही करना चाहिए?

उत्तर : मंगल का अर्थ क्या होता है। अच्छा या खराब?बोलिए! अच्छा होता है न। मंगल का अर्थ है अच्छा। और ये ज्योतिष वाले, जन्म कुंडली वाले, मंगली-मंगली कहके उसका विनाश कर देते हैं। नहीं-नहीं ये तो मंगली है, मंगली है, जैसे बिल्कुल रिजेक्टड-पर्सन। ये तो बेकार है, घटिया आदमी, इससे शादी नहीं करें।

देखिए आप लोगों में कितना अंधविश्वास, कितनी भ्रांति फैलाई जा रही है। एक ओर मंगलिक कह रहे हैं, और एक ओर कह रहे हैं वो खराब है। तो ये मंगली-वंगली से कोई फर्क नहीं पड़ता है। ये सिर्फ कहने की बात है। न कोई ऐसा मंगली होता है।

मंगल होता है, अच्छा व्यक्ति और वो अच्छा व्यक्ति होता है, कर्म से। जो व्यक्ति अच्छे काम करता, वो अच्छा है, जो खराब काम करता है, वो अच्छा नहीं है। तो अच्छा, तो सभी को होना चाहिए, सभी को मंगल कर्म करने चाहिए, हमारे शास्त्रों में तो लिखा है, मंगलाचरणम्, सांख्यदर्शन में कपिल मुनि जी ने बताया 'मंगलाचरणम्' व्यक्ति को मंगल आचरण करना चाहिए, अच्छे-अच्छे काम करना चाहिए, और सबको करने चाहिए।

ये मंगली के नाम से जो जन्म-कुंडली मिलान है ये सब व्यर्थ है, इसकी भ्रांति में न पड़ें। जन्म कुंडली में कुछ लिखा भी नहीं। आप अपने बच्चों का इतिहास लिखना शुरू करें, तो बीस साल के बाद, जब बच्चे बड़े होंगे, तब वो लिखा हुआ इतिहास, काम आएगा। तब उस इतिहास को मिला कर के फिर शादी-विवाह करें, तो गृहस्थ अच्छा चलेगा। महर्षि दयानंद जी ने लिखा है, सत्यार्थ प्रकाश में, गृहस्थ के चौथे चैप्टर में लिखा है, कि यदि गुण, कर्म, स्वभाव मिलाकर विवाह किया जाए तो गृहस्थ में झगड़ा कम होता है। और बिना गुण, कर्म, स्वभाव मिलाए, अगर विवाह किया जाए, तो लिखा है नित्य ही घर में देवासुर-संग्राम मचा रहे।

देवासुर संग्राम समझते हैं? रोज ही लड़ाई चलती रहे। आजकल तो घरों में बहुत समस्या है, क्योंकि वो गुण, कर्म, स्वभाव तो मिलाते ही नहीं। क्योंकि माता-पिता बच्चों के गुण, कर्म, स्वभाव लिखते ही नहीं तो मिलाएंगे क्या? तो गुण, कर्म, स्वभाव मिलाएं, ये मंगली और जन्म कुंडली में कुछ नहीं रखा है, इस भ्रांति में न पड़े।

प्रश्न : शादी के लिए लड़के-लड़की की उम्र में कितना अन्तर होना चाहिए। लड़की लड़के से आयु में बड़ी हो तो क्या इससे कोई दिक्कत होती है?

उत्तर : जी हाँ, यदि लड़की की उम्र लड़के से अधिक हो तो दिक्कत होती है, ऐसा मेडिकल-साइंस का कहना है। मेडिकल साइंस के हिसाब से लड़के की उम्र, लड़की से अधिक होनी चाहिए। पुराने समय में तो यही नियम था।

गुरुकुल व्यवस्था में विवाह के लिए लड़के-लड़की के बीच बहुत ज्यादा अंतर का विधान किया गया था। लेकिन आजकल स्कूल सिस्टम है, सब लोग नगर में रहते हैं और ब्रह्मचर्य के नियमों का उतना पालन नहीं हो पाता, तो भी वो मूल सिद्धांत तो बना ही रहता है। आजकल के हिसाब से भी देखा जाए तो कम से कम लड़के की उम्र, लड़की की उम्र से चार-पाँच वर्ष तो अधिक होनी ही चाहिए। ऐसा होने पर दोनों के शरीर में शक्ति लगभग बराबर सी होती है। इससे आगे संतानें अच्छी होती हैं। लड़की यदि बड़ी उम्र की हो और लड़का छोटा हो तो आगे संतान उत्पत्ति में बाधा पड़ती है। उनकी संतानों में अनेक प्रकार के रोग या विकलांगता आदि-आदि इस तरह के दोष आने की संभावना रहती है। इसलिए लड़के की उम्र निःसंदेह लड़की से अधिक होनी चाहिए।

प्रश्न : कितनी उम्र तक ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिए? किस उम्र में विवाह करके गृहस्थ में जाना चाहिए?

उत्तर : आजकल के हिसाब से देखा जाए तो लड़कों को कम से कम 25 वर्ष तक ब्रह्मचर्य आश्रम का पालन करना चाहिए। लड़के उसके बाद विवाह की बात सोचें। अधिक से अधिक 27, 28, 30 तक विवाह कर लेना चाहिए।

लड़कियों के लिए 18 साल न्यूनतम आयु तो सरकार ने तय कर रखी है। वे इससे कम में शादी नहीं कर सकतीं। इसलिए स्त्रियाँ को भी 18 साल की आयु तक ब्रह्मचर्य का पालन अवश्य करना चाहिए। उसके बाद फिर वे शादी की बात सोचें। यदि करनी हो तो उन्हें अधिक से अधिक 20-22-24-25 तक शादी कर लेनी चाहिए। किसी को शादी नहीं करनी, आजीवन ब्रह्मचारी रहना हो तो वो रह सकता है। फिर वह जंगल में जाए, आश्रम में रहे।

पुरुष और महिला अपने अलग-अलग आश्रमों में रहें, साधना करें, तपस्या करें, वैराग्य उत्पन्न करें और ईश्वर प्राप्ति के लिए मुख्य रूप से पुरुषार्थ करें, इस तरह से ठीक रहेगा।

यदि अविवाहित स्त्री-पुरुष नगरों में रहें, परिवार में रहें और शादी भी नहीं करें और ब्रह्मचर्य का पालन भी न करें, जंगलों में, आश्रमों में न जाएं, तो ये पद्धति अच्छी नहीं हैं। इसमें व्यक्ति आगे चलकर भटक सकता है, उसमें चरित्र-दोष भी आ सकता है। इसलिए दो में से एक पक्ष अपनाना चाहिए। शादी नहीं करनी तो फिर आश्रमों में जाकर साधना, तपस्या करें और ईश्वर

प्राप्ति के लिए पुरुषार्थ करें, या फिर शादी की उपयुक्त उम्र आने पर थोड़ा गृहस्थ—जीवन का अनुभव अड़ोस—पड़ोस वालों से, बड़ों से सीखकर, मार्गदर्शन लेकर और विधिवत गृहस्थ आश्रम में प्रवेश करें। वहां गृहस्थ के सभी नियमों, जैसे कि पंच महायज्ञ आदि का अनुष्ठान करें। 50, 52, 55 की उम्र तक जब गृहस्थ आश्रम का समय पूरा हो जाए, बच्चे बड़ें हो जाएं और उनकी भी शादी हो जाए और आगे पोता—पोती के रूप में तीसरी पीढ़ी भी चल पड़े, तो फिर वानप्रस्थ आश्रम का समय है। इसलिए 50, 52, 55 की आयु में वानप्रस्थ आश्रम में प्रवेश करना चाहिए। जंगल में कहीं आश्रम में जाकर साधना करनी चाहिए और वैराग्य उत्पन्न करना चाहिए, उसे और ऊंचा उठाना चाहिए। शास्त्रों का अध्ययन, स्वाध्याय, चिंतन, मनन, यज्ञ, संध्या, उपासना ये सब काम वानप्रस्थ में करना चाहिए। इन कार्यों को करते हुए अगर 10—15 वर्ष में अच्छा वैराग्य उत्पन्न हो जाए तो फिर संन्यास आश्रम चौथा आश्रम है, जिसमें प्रवेश करना चाहिए। यदि कोई 50, 52 में वानप्रस्थी बना, उसे वैराग्य उत्पन्न न हो तो वह वानप्रस्थ आश्रम में ही रहे और वैराग्य उत्पत्ति के लिए पुरुषार्थ करता रहे। वह वानप्रस्थ में ही रहे, संन्यास न ले। जब उसे वैराग्य उत्पन्न हो जाए तो ही वो संन्यास ले। उस समय चाहे उसकी उम्र जो भी हो, संन्यास के लिए उम्र का कोई बंधन नहीं है। वो तो योग्यता के ऊपर है। वैराग्य हो, तो ही संन्यास लेना है; न हो, तो नहीं लेना है।

सहशिक्षा पद्धति पूरी तरह गलत

आज स्कूलों में, कॉलेजों में लड़के—लड़कियां सब इकट्ठे पढ़ते हैं। वैदिक शिक्षा पद्धति में सहशिक्षा यानि को—एजुकेशन नहीं था। लड़कों के गुरुकुल अलग, लड़कियों के गुरुकुल अलग, दोनों के शिक्षा संस्थान अलग—अलग होते थे। पुरुषों की शिक्षा संस्था में अध्यापक हो या कर्मचारी सेवक, सब के सब पुरुष होते, वहाँ स्त्रियों का प्रवेश नहीं था। ऐसे ही, स्त्रियों के गुरुकुल में जितने भी कर्मचारी अध्यापक होते थे सब की सब स्त्रियाँ, वहाँ पुरुषों का प्रवेश नहीं था। इस प्रकार की आदर्श पठन—पाठन की व्यवस्था होती थी।

आजकल तो सब नगरों में रहते हैं। नगरों में स्कूल—कॉलेज चलता है। वहीं लड़के—लड़कियां सब इकट्ठे साथ—साथ पढ़ते हैं, जिससे चरित्रहीनता के दोष आते हैं। ये सब पश्चिमी सभ्यता है, जो तेजी से हमारे देश में समाहित

होती जा रही है। इस कारण से, जैसी समस्याएं विदेशों में हैं, वैसी ही हमारे देश में भी उत्पन्न हो रही हैं।

अगर हम इन समस्याओं का समाधान चाहते हैं, तो हमको वापस पुरानी वैदिक शिक्षा-पद्धति पर लौटना होगा। वैसा ही ब्रह्मचर्य आश्रम बनाना होगा, वैसे ही अच्छे गुरुकुल बनाने होंगे, जहाँ व्यक्ति बुद्धिमान बने, धार्मिक बने, चरित्रवान बने, बलवान बने, विद्वान बने और फिर एक अच्छा योगी बनकर, फिर वो देश की सेवा करे, एक श्रेष्ठ नागरिक बनकर अपना कर्तव्य निभाए। ऐसा हमको प्रयत्न करना होगा अन्यथा गृहस्थ जीवन में आज हम जिन समस्याओं से जूझ रहे हैं, उनका समाधान होना कठिन क्या, असंभव ही बना रहेगा। इसका और कोई पक्का समाधान नहीं है।

पहले बच्चों को बनाएं धार्मिक, फिर विद्वान

जो बच्चे आपकी बात नहीं मानते, अनुशासन में नहीं चलते, अपनी मनमानी करते हैं। उसका ये समाधान है, स्कूल बाद में भेजें, पहले उनको धार्मिक बनाइए, पहले उनको हवन करवाइए, पहले उनको ईश्वर का ध्यान करना सिखाइए, गायत्री मंत्र-ओ३म् का जप करवाएं, वैदिक संध्या के मंत्रों का पाठ कराएं। आपकी उस समस्या का ये समाधान है, जो बच्चे आपकी बात नहीं सुनते। अगर उनको इस तरह से कराएंगे, तो वो धार्मिक बनेंगे, अनुशासनप्रिय बनेंगे, आपका भी सम्मान करेंगे और आपकी बात भी मानेंगे।

केवल आपके उपदेश से वे नहीं मानेंगे। पहले आपको खुद को करना पड़ेगा। आप कहेंगे बेटा 10 बजे सो जाओ, तो पहले आपको 10 बजे सोना पड़ेगा, तब वो सोएंगे। आप तो 12 बजे तक जाग रहे हैं, और बच्चों को कहें कि, बेटा 10 बजे सो जाओ तो कोई नहीं सोने वाला। ये मनुष्य का मनोविज्ञान है। जो साइकोलॉजी है, वो ये कहती है कि मनुष्य 10 में से 8 बातें अपनी आँख से देखकर सीखता है। जो आप करते हैं, उसको वो आँख से देखेगा, अच्छा मेरे पिताजी रात को 10 बजे सो जाते हैं, चलो मैं भी सो जाता हूँ। आप सुबह 4-5 बजे उठेंगे तो आपका बच्चा भी चार-पाँच बजे उठेगा। आप 12 बजे तक जागेंगे, तो आपका बच्चा 10 बजे तक नहीं सोएगा। वो भी आपके साथ बैठेगा, खाएगा-पिएगा, खेलेगा, टी.वी. देखेगा, वो भी 12 से पहले नहीं सोएगा। और कितनी बार तो हमने ऐसा भी देखा है, कि उनके बच्चे तो उठ

जाते हैं, उनकी नींद खुल जाती है। और माता—पिता उठते नहीं, तो माता—पिता बच्चे को भी सुला देते हैं। जो आप करेंगे, बच्चा आपकी नकल करेगा। वह 10 में से 8 बातें आपको देखकर सीखेगा। सिर्फ दो बातें आपके बताने से, आपके उपदेश से वह सीखेगा। ये केवल प्रवचन नहीं है। ये वो सब प्रैक्टिकल बातें हैं, जो हमारे घर में होती थीं। हमारे माता—पिता सुबह 4 बजे उठ जाते थे। हम बच्चे थे तो हमको 5 बजे उठाते थे, हम पाँच बजे उठ जाते थे। एक घण्टा हमको नहाने—धोने को मिलता था। सुबह 6 बजे तक हम सब तैयार हो जाते थे और फिर 6 बजे हमारे घर में हर रोज पंद्रह—बीस मिनट हवन होता था। और हम पर सबका नियम था कि जो घर में हाजिर है, उसको हवन में आना होगा। जो हवन में नहीं आएगा, उसका नाश्ता बंद। तो ये दण्ड व्यवस्था बहुत आवश्यक है। जो हम पर लागू थी।

दंड के बिना कोई नहीं सुधरता

मैं देशभर में लोगों को बताता हूँ, कि “दण्ड के बिना कोई सुधरता नहीं है।” बस इस वाक्य को आप बड़े—बड़े मोटे अक्षरों में लिखकर अपने घर में, अपने ऑफिस में चिपकाइए, कहीं भी चिपकाइए। इस बात को बहुत अच्छी तरह से अपने अंदर उतार लीजिए कि, ‘दण्ड के बिना कोई सुधरता नहीं है।’

सबसे पहले आप लोग अपना टाइम—टेबल बनाइए और बच्चों का भी बनाइए। हमारे पिताजी ने टाइम टेबल लिखकर हमारे कमरे में दीवार पर चिपका दिया और कहा कि, देखो ये टाइम—टेबल है और ये घड़ी लगी है। अब घड़ी देखते जाओ और टाइम—टेबल के हिसाब से चलते जाओ। और रोज रात को नौ—साढ़े नौ बजे हमारी रात को क्लास होती थी। हमारे पिताजी पूछते थे, हां भाई बताओ! आज की दिनचर्या कैसी रही? आज क्या—क्या किया, कहाँ गए, क्या खाया, किसके साथ खाया—पिया, किसके साथ घूमे, क्या पढ़ाई की, क्या होमवर्क पूरा किया? अगर नहीं किया, तो क्यों नहीं किया? ऐसे वे हमारी पूरी रिपोर्ट रोज रात को सोने से पहले लेते थे। और जो स्कूल से होमवर्क मिलता था, वो करना और उसके अतिरिक्त कुछ अपने घर की पढ़ाई अलग करना। हमारे ऊपर ये नियम था। हमारे पिताजी रात को रोज चेक करते थे कि आज की पढ़ाई में क्या—क्या आपने किया? आपको भी ऐसा करना होगा, तो आपके बच्चे अच्छे बनेंगे, अनुशासन में चलेंगे, आपकी बात मानेंगे।

शाम को भी 7 बजे हमारा इकट्ठे बैठकर संध्या करने का नियम था और जो शाम को संध्या नहीं करते थे, उनको फिर दण्ड के रूप में रात का भोजन नहीं मिलता था। आपकी इच्छा है, संध्या मत करो, हम खाना नहीं देंगे। हमारे माता-पिता कहते थे, “ये हमारा घर है, तुमको यहाँ रहना है, तो हमारी बात सुननी-माननी पड़ेगी। यदि हमारी बात नहीं मानोगे, तो सामने दरवाजा खुला है, जाओ यहाँ से, हम अपने घर में नहीं रखते।”

अनुशासित रखने के लिए करनी होगी तपस्या

बच्चों को अनुशासित रखने के लिए माता-पिता को तपस्या करनी पड़ेगी। कुछ नियम बनाने पड़ेंगे, पहले उनका स्वयं पालन करना पड़ेगा, फिर अपने आप बच्चे पालन करेंगे। जहाँ-जहाँ पालन नहीं करेंगे। वहाँ फिर उनको थोड़ा प्रेम से समझाना, प्रेम से नहीं मानें तो फिर डांट लगाना और डांट से भी नहीं मानें, तो फिर पिटाई करना, थप्पड़ लगाना, खाना बंद कर देना, उनकी सुविधाएं कम कर देना। आजकल की भाषा में कहें तो उनका पिक्चर, टी.वी., कार्टून बंद कर दीजिए, उनके खिलौने बंद कर दीजिए, उनका सैर-सपाटा बंद कर दीजिए, उनको मिठाई खिलाना बंद कर दीजिए। कोई न कोई, उनको दण्ड देना पड़ेगा।

प्रश्न : क्या दंड के बिना बच्चों के सुधार का दूसरा कोई उपाय नहीं है?

उत्तर : प्रायः दण्ड के बिना कोई सुधरता नहीं। कभी-कभी ऐसा भी हो सकता है कि आपने सारे उपाय कर लिए, फिर भी बच्चे नहीं मानते तो आखिरी उपाय है, उनको धमकी लगाना। ठीक वैसे ही जैसे हमारे पिताजी ने हमको धमकी लगाई। उन्होंने दो-टूक कहा कि बेटा ये हमारा घर है, तुमको यहाँ रहना हो तो जो हम कहेंगे, वो करना पड़ेगा। नहीं तो भाग जाओ यहाँ से, हम नहीं रखते अपने घर में। ऐसी धमकी लगाते समय यह ध्यान रखना कि ये धमकी दस-बारह साल तक ही चलेगी, 15-18 साल वाले को धमकी मत लगाना, नहीं तो वो भाग जाएगा। ये धमकी पहले पन्द्रह साल तक चल जाती थी। अब माहौल बदल चुका है। आज 13 साल के बच्चे को आप धमकी लगाओ, वो कुछ उल्टा-सीधा कर लेगा। ऐसी बहुत घटनाएं सुनते रहते हैं हम। तो बच्चे को ऐसा नहीं पीटना कि बेचारे को नुकसान हो जाए, हाथ-पैर टूट जाए, आँख बिगड़ जाए। जितनी उसकी गलती है, उस हिसाब से, उसके

सुधार के लिए, उसकी उन्नति के लिए दण्ड देना। अपना गुस्सा उतारने के लिए दण्ड नहीं देना। बस ऐसे सावधानी से, हमको गृहस्थ को चलाना होगा।

प्रश्न : बच्चे गलती करें तो क्या माता—पिता का बच्चों को दण्ड देना उचित है?

उत्तर : जी हाँ, वेदों का नियम ये है कि “दण्ड के बिना कोई सुधरता नहीं है।” जब तक बच्चों को उनकी गलती के हिसाब से थोड़ा—थोड़ा दण्ड न दिया जाए, तब तक उनका सुधार नहीं होता। वस्तुतः दण्ड देने का प्रयोजन सुधार करना है।

यदि कोई माता—पिता अपना गुस्सा ठंडा करने के लिए बच्चों को दण्ड दें, तो ये सरासर गलत है। माता—पिता को बच्चे को गलती की सजा या दण्ड देने से पहले यह भी देखना—सोचना चाहिए, कि हमने बच्चे को अपनी तरफ से पहले ठीक—ठीक शिक्षा दी या नहीं? कहीं ऐसा न हो कि माता—पिता ने तो बच्चों को पहले कुछ सिखाया ही नहीं, उन्हें समझाया ही नहीं, कि गलती क्या होती है, और गलती कैसे नहीं करनी चाहिए। इस तरह बच्चों के शिक्षण—प्रशिक्षण में अपनी ओर से कोई कोर—कसर, कमी नहीं होनी चाहिए। बच्चों को अच्छे ढंग से पूरा प्रशिक्षण दें। सब बात बताएं कि ये काम ठीक है, ये काम गलत है। ठीक काम करो, गलत काम मत करो। यदि पूरा प्रशिक्षण देने के बाद भी बच्चे गलती करते हैं, तो फिर उनको दंड दिया जा सकता है।

दण्ड की मात्रा ठीक—ठीक हो, गलती के हिसाब से निर्धारित हो। कभी डांट दिया, कभी थप्पड़ लगा दिया, कभी उसको एकाध टाइम थोड़ा खाना कम कर दिया, उसका टी.वी. कार्टून थोड़ा कम कर दिया, कभी खिलौने लाकर नहीं दिए, कभी घुमाने नहीं ले गए। ऐसे गलती के अनुसार जो उचित लगे, उस—उस परिस्थिति में, उस—उस तरह का दण्ड देना चाहिए। इसके साथ ही माता—पिता को अपना भी अपेक्षित सुधार अनिवार्य रूप से करना चाहिए। यदि वे भी जाने—अंजाने कोई गलती करते हों, तो न्यायपूर्वक स्वयं को भी उसके लिए दण्ड दें। इस तरह अपनी योग्यता बढ़ाएं। पहले अपनी योग्यता अच्छी बनाएं, स्वयं गलतियाँ न करें। फिर अपना सुधार करके अपने बच्चों को, भी सुधारना उचित होगा। आशय यही कि उपदेश, ‘मात्र वाणी’ नहीं वरन ‘आचरण’ से दें, तो निःसंदेह प्रभावी होगा।

इस सन्दर्भ में ये भी ध्यान देना चाहिए, कि घर में समय-समय पर कोई विद्वान संन्यासी, आर्य उपदेशक आते रहें। उनको घर में बुलाते रहें और बच्चों को उन विद्वानों-उपदेशकों से शिक्षा दिलाते रहें। इसका भी बच्चों पर विशेष प्रभाव पड़ता है। बच्चे गलतियाँ कम करते हैं और अच्छी उन्नति करते हैं, उनका सुधार होता है। इस तरह माता-पिता को बच्चों के सुधार का महत्वपूर्ण कार्य करते रहना चाहिए।

प्रश्न : हर गलती के लिए अनिवार्य रूप से दण्ड वाला माहौल बच्चे पर कुछ प्रतिकूल डिप्रेशन आदि मनोवैज्ञानिक प्रभाव डाल सकता है। तो क्या घर में ऐसा कठोर-अनुशासनिक माहौल होना चाहिए, जिससे बच्चा हर-समय भयभीत रहे या फिर घर में कुछ ऐसा व्यवहार हो जिससे कि उसे अधिक दबाव महसूस न हो?

उत्तर : “दण्ड के बिना कोई सुधरता नहीं”....ये वेद-निर्दिष्ट नियम है। यदि बच्चे गलती करते हैं तो उन्हें दण्ड दिया ही जाना चाहिए। दण्ड का मूल प्रयोजन गलती करने वाले का सुधार करना है। अब चाहे वो बच्चा हो या बड़ा हो। इसलिए दण्ड का माहौल तो घर में रखना ही पड़ेगा, अन्यथा बच्चे उद्दंड हो जाएंगे, नियंत्रण में नहीं रहेंगे। अनुशासनहीन बच्चे माता-पिता का जीना कठिन कर देंगे। आगे चलकर वे समाज को भी परेशान करेंगे।

यदि बच्चों को दण्ड दिया जाए, तो यहां यह आशंका व्यक्त की गई कि घर में दबाव का माहौल बन जाएगा और उससे बच्चे डिप्रेशन में चले जाएंगे। मेरा कहना है कि यह सोचना गलत है, ऐसा कुछ भी नहीं होगा। ये महज मानसिक भ्रम है। अतएव अपनी, बच्चों की और समग्र परिवार की भलाई के लिए इस भ्रम को दूर कर लेना अनिवार्य है।

बच्चे अच्छा करने पर प्रशंसा के पात्र बनेंगे और गलत करने पर दंड के। हर गलती के लिए आप बच्चे को डाँटे या थप्पड़ मारें, तो यह ठीक नहीं है। इससे बच्चा डिप्रेशन में जा सकता है। घर में भय का वातावरण न बनाएं। परन्तु बच्चे के दिमाग में इतना अवश्य रहे, कि “गलती करने पर मुझे दण्ड अवश्य मिलेगा। इसलिए मैं गलती नहीं करूँगा।” छोटी गलतियाँ करने पर, जैसे-पाँव लगने से, भूल से, पानी का गिलास गिर गया, तब केवल नजर से ही देख लें। इतने में ही बच्चे को अपनी गलती का अनुभव हो जाएगा। तब बोलने, डाँटने या थप्पड़

लगाने की आवश्यकता नहीं है। यदि बच्चा बार-बार गलती दोहराएँ, तब बोलना-समझाना, डाँटना आदि उचित है। यदि इस तरह न्यायपूर्वक व्यवहार किया जाए तो वे बिगड़ेंगे नहीं। इससे उनका उत्तम-निर्माण होगा।

प्रश्न : छोटे बच्चे भगवान का रूप होते हैं, तो क्या उनको सजा देना अच्छी बात है?

उत्तर : जो छोटे बच्चे होते हैं, आपने कहा कि वो भगवान का रूप होते हैं। अच्छा, भगवान गलतियाँ करता है, क्या? हाँ या न? नहीं करता। तो भगवान तो गलती करता नहीं, और बच्चे गलतियाँ कर रहे हैं, तो बताइए, भगवान का रूप कहाँ हुआ? अगर बच्चे छोटे हैं और आप उनको भगवान का रूप मानते हैं, तो वो गलती नहीं करेंगे। जो बच्चे गलतियाँ कर रहे हैं, तो वो भगवान का रूप नहीं हैं। तो जो बच्चे भगवान का रूप है वो गलती करेंगे, नहीं। और जो गलती करेंगे ही नहीं, तो उनको क्यों दण्ड देना? वो तो अन्याय है। इसलिए जो बच्चे अच्छे हैं, बुद्धिमान हैं, धार्मिक हैं, सीधे सरल हैं, जो गलती नहीं करते, उनको दण्ड नहीं देंगे। अब जो बच्चे गड़बड़ करते हैं, अनुशासन में नहीं रहते हैं, शांति से नहीं रहते, झूठ बोलते हैं, झगड़ा करते हैं, शोर मचाते हैं, तोड़-फोड़ करते हैं, बताने पर भी नहीं समझते, नहीं मानते, तो उनको दण्ड देना पड़ेगा।

बच्चा हो, बूढ़ा हो या जवान हो, दण्ड सबके लिए है। दण्ड कैसा हो, ये ध्यान देने की बात है। हमारे ऋषिगण विद्वान लोग बताते हैं कि, पाँच साल से कम उम्र के बच्चे, छोटे बच्चे, उनको पीटना नहीं चाहिए, उनको थप्पड़ नहीं मारना चाहिए, उनको डण्डा नहीं मारना। उनको दो बार-चार बार, बातचीत से, प्रेम से समझाइए। बेटा, शोर मत करो, शांति से बैठो, हमको काम करने दो। घर में आपके अतिथि आए हैं, मेहमान आए हैं, आप उनसे बात कर रहे हैं, और बच्चे वहाँ शोर मचा रहे हैं, बात नहीं करने देते। यहाँ उनको प्रेम से समझाएँगे कि बेटा, शोर मत करो, हमको बातचीत करने दो, घर में अतिथि आए हैं, ऐसे दो बार, चार बार, उनको प्रेम से समझाइए।

जब प्रेम से समझाने पर भी नहीं मानते, फिर उनको डांट लगाएँ, थोड़ी आँख दिखाएँ, चलो-चलो, चुप-चुप, शोर नहीं करना, चलो उधर जा के बैठो, अपनी पढ़ाई, करो। ऐसे डांट भी लगा सकते हैं, आँख भी दिखा सकते हैं, थोड़ा सा डरा सकते हैं।

कोई—कोई बच्चे ज्यादा अड़ियल होते हैं, वो इतने से भी नहीं मानते हैं। उनका भी इलाज यह है कि बच्चा तीन साल का है, और बार—बार बताने से डांटने से, बार—बार आँख दिखाने से भी नहीं मानता, तब भी इसको थप्पड़ नहीं मारना। उसका फिर आखिरी इलाज ये है कि आप उससे बात मत कीजिए। उससे बात करना बंद। आप भी उससे ये कहिए कि, “तुम हमारी बात नहीं मानते, हम तुमसे बात नहीं करते, जाओ। इधर मुँह घुमाकर बैठ जाओ। देखना, दो मिनट में बच्चा ठीक हो जाएगा, उसको थप्पड़ मारने की जरूरत नहीं है। तीन साल का, चार साल का बच्चा, उसको कहिए, तुमको अच्छा खिलौना नहीं देंगे, तुमको अच्छी मिठाई नहीं खिलाएंगे, ये सुविधा तुम्हारी बंद कर देंगे। बस उसके लिए इतना दण्ड काफी है, थप्पड़ नहीं मारेंगे।

जब बच्चा पाँच साल से बड़ा हो जाए। आजकल के माहौल को देखते हुए आखिरी सीमा बारह वर्ष। पाँच से बारह वर्ष तक की जो एज ग्रुप है, इस उम्र के बच्चों को गलती करने पर पहले प्रेम से समझाएं कि, “ये गलत काम है, मत करो। ये ठीक काम है ये करो।” दो बार, चार बार, प्रेम से कहिए। जब नहीं मानते, तो फिर डाँट लगाइए, फिर डाँट से भी नहीं मानते, तो फिर थप्पड़ लगाइए, एक, दो, ज्यादा नहीं। ऐसा नहीं कि आपको गुस्सा आ गया, तो आप पीटते रहें, पीटते रहें। गुस्सा उतारने के लिए नहीं पीटना बच्चे को, उसकी गलती को सुधारने के लिए उसको थोड़ा सा दण्ड देना, ताकि उसके दिमाग में यह डर बना रहे “यदि मैं गलती करूंगा, तो मुझे दुःख भोगना पड़ेगा, दण्ड मिलेगा।” बस दण्ड का प्रयोजन इतना ही है, कि सुधार करना।

अगर वो दो थप्पड़ खा के सुधर जाता है, तो दो ही मारो। और दो से नहीं सुधरता है, तीन—चार खाने पड़ते हैं, तब सुधरता है, तो उतने हिसाब से उसको थोड़ा सा दण्ड अधिक दिया जा सकता है। पर दण्ड देते समय ये ध्यान रखें, उसके शरीर का नुकसान न हो जाए। आपने थप्पड़ मारा, उसका कान बिगड़ गया, उसकी आँख खराब हो गई, आँख में उंगली लग गई, ऐसा न हो। सावधानी से दण्ड दें, उसका नुकसान न हो, उसका सुधार हो जाए, बस इतना ही प्रयोजन है। और फिर उसको इस तरह से बताएं कि “तुम्हारा टी.वी. देखना बंद कर देंगे, तुम्हारा कार्टून देखना बंद कर देंगे।” इस—इस तरह से उनको दण्ड दिए जा सकते हैं। और कभी—कभी धमकी भी लगाई जा सकती है। किसी भी तरह से न मानें तो फिर उसको धमकी लगाएं— “तुम

हमारी बात नहीं मानोगे तो हम तुम्हें घर से निकाल देंगे। तुम्हें घर में नहीं रखेंगे। जाओ, अपना कमाओ और खाओ। हम तुमको न तो स्कूल की फीस देंगे, न खाना देंगे, न यूनीफॉर्म, कुछ नहीं देंगे। जाओ, निकल जाओ यहाँ से।” ऐसी धमकी भी दे सकते हैं। पर वो जरा सावधानी से देनी पड़ेगी। ये जरा ऑपरेशन वाला काम है, सर्जरी वाला काम है, दस-बारह साल के बच्चे तक को आप धमकी दे सकते हैं, इससे बड़ा हो जाए, यदि पन्द्रह-अठारह का हो जाए, फिर धमकी नहीं देना। फिर तो वो भाग भी जाएगा और क्या कुछ उल्टा-सीधा भी कर लेगा। तो बड़े बच्चों के साथ इस तरह का व्यवहार न करें।

जब आपके बच्चे 15, 16, 18, 20 के हो जाएं, तब वो जो गलती करें, तब आप उनको सुझाव दें उनको समझाएं कि “बेटा ये काम करोगे तो इसमें ये नुकसान है और ये काम करोगे तो इसमें फायदा है।” अब वो बुद्धिमान हो गए, बुद्धि भी चलने लग गई। उम्र भी पन्द्रह-अठारह हो गई। शरीर में ताकत भी आ गई बच्चों के। अब वो बुद्धि से हर बात को समझना चाहते हैं तो फिर अब आपकी उनसे बुद्धि से लड़ाई चलेगी। अब ताकत की लड़ाई नहीं चलेगी। अब ताकत की लड़ाई बंद।

आठ साल के, दस साल के, बारह साल के बच्चे। उनके शरीर में शक्ति कम है, आपके शरीर में शक्ति ज्यादा। छोटे बच्चों से ताकत की लड़ाई चलेगी। आप उनको थप्पड़ मार सकते हैं, थप्पड़ लगा सकते हैं, और जो करवाना है, करवा सकते हैं। जब तक उनकी बुद्धि कम है, जब तक उनके शरीर में शक्ति कम है, तब तक वो आपकी मार खा लेंगे, आपकी बात मान लेंगे, सह लेंगे, उनके पास और कोई दूसरा विकल्प नहीं है। अब जब 15-18 के हो गए, उनकी बुद्धि भी चलने लग गई, और शरीर में ताकत भी आ गई। अब अगर आप मारपीट करेंगे, तो वो भी हाथ उठाएगा। बेटा भी हाथ उठाएगा। इसलिए 15 के बाद फिर मारपीट नहीं करना और धाक-धमकी नहीं करना। अब शरीर से ताकत की लड़ाई बंद और दिमाग की लड़ाई शुरू। अब दिमाग से लड़िए। बड़ा बच्चा/युवक आपके सामने तर्क उठाएगा, बहस करेगा, ये काम क्यों करें, हमको अच्छा नहीं लगता है, हम नहीं करना चाहते।

आपको ये समझाना होगा, कि “ये काम इसलिए करना है, क्योंकि इसमें ये फायदा है। और ये काम इसलिए नहीं करना है क्योंकि इसमें ये नुकसान है।”

अगर आप बड़े बच्चे को नियंत्रित करना चाहते हैं, तो आपको हानि और लाभ समझाने पड़ेंगे। जिस काम को आप बच्चों से करवाना चाहते हैं, उस काम के लाभ उनको समझाएं। एक कागज पर लिस्ट बनाएं, कि इस काम को करने से क्या-क्या लाभ है, वो लिस्ट उनको पकड़ा दें। और उनको कह दें, इसको रोज पढ़ो। एक-दो महीना पढ़ने से दिमाग में बैठ जाएगा, कि इस काम के करने से ये फायदा है। अगर उसको फायदा समझ में आ गया, तो वो काम करेगा। और जिस गलत काम से इसको रोकना चाहते हैं, उसकी एक लिस्ट बनाएं और उसमें टाईटल लिखें कि इस गलत काम को करने से ये-ये हानि है। वो सारी हानियां लिखकर के उसके हाथ में दे दीजिए और कहिए, उसको एक-महीना दो महीना रोज पढ़ो। बस और कुछ नहीं करना, हानि और लाभ समझाना है। अगर आपका बच्चा पढ़ा-लिखा है, बुद्धिमान है, और यदि वो दो महीना उस लिस्ट को पढ़ लेगा तो जिस काम के लाभ वो पढ़ लेगा, उसको समझ में आ जाएगा। वो बच्चा उस काम को करेगा। और जिस काम की हानियां बतायी जाएंगी और दो महीना पढ़ने से उसके दिमाग में वो हानियां बैठ जाएंगी, तो उस काम को वह नहीं करेगा। इस प्रकार से बड़े बच्चों को नियंत्रित करने का ये उपाय है, इस तरह से करना चाहिए।

बच्चों के बारे में रखें पक्की जानकारी

एक व्यक्ति से मैंने पूछा कि आपका बेटा कौन सी क्लास में पढ़ता है? बोला, जी मुझे पता नहीं है कि सातवीं में है या आठवीं में है। अब बताओ, पिता को यही पता नहीं, उसका बेटा कौन सी क्लास में पढ़ता है, ऐसे में वो क्या उसका पालन करेगा, क्या उसकी समस्याएं देखेगा और क्या सुझाएगा? लोगों को ये भ्रम है, कि हमने बच्चे की स्कूल की फीस, ट्यूशन फीस भर दी, आने-जाने का रिक्शा भाड़ा भी दे दिया है, स्कूल ड्रेस भी बनवा दी है, खाना भी ठीक खिला रहे हैं, नौकर-चाकर भी हैं, बस हमारी ड्यूटी पूरी हुई। वस्तुतः ये उनका भ्रम है। बच्चे के लिए आपने इतना सब कर दिया, अच्छा है, पर अभी आपकी ड्यूटी पूरी नहीं हुई।

ठीक है कि, इतना सब कर देने से बच्चा पढ़ जाएगा-लिख जाएगा, विद्वान तो बन जाएगा, पर वो धार्मिक नहीं बनेगा, चरित्रवान नहीं बनेगा। इसलिए अभी बहुत सारी ड्यूटी पूरी करनी बाकी है। आपको इसका पता नहीं

कि आपका बेटा दिन में किसके पास बैठता है, कितनी देर बैठता है, क्या खाता है, वो कहाँ जाता है। अपने मित्र के यहाँ पढ़ने के लिए जाता है, वहाँ बैठ के अण्डे—मांस खाता है, उल्टा—सीधा खान—पान करता है। आप कभी उससे पूछते ही नहीं कि, भाई तुम दिन में कहाँ जाते हो, किससे बात करते हो, क्या बातें करते हो, क्या खाते—पीते हो?

कई बच्चे घर से स्कूल का कह कर जाते हैं लेकिन स्कूल नहीं जाते। वो फिल्म देखने जाते हैं, क्रिकेट खेलने जाते हैं और पता नहीं क्या—क्या करने जाते हैं। माता—पिता को पता ही नहीं, कि वो मोबाइल पर क्या—क्या मैसेज करते हैं, फेसबुक में कैसी—कैसी बातें करते हैं, किससे क्या सम्पर्क बनाते हैं। जब दो—तीन साल में कोई मामला बिगड़ता है, तब पोल खुलती है। तब पता चलता है। इससे माता—पिता को फिर झटका लगता है, ये क्या हुआ? हमने तो ऐसा सोचा ही नहीं था कि हमारा बच्चा ऐसा करेगा। यहां गलती माता—पिता की है, उनको नजर रखनी चाहिए थी। आपने संतान घर में बुलाई है, तो आपकी ही जिम्मेदारी है, उसकी देखभाल करना। उसकी जाँच—पड़ताल करना, उसको गलतियों से बचाना। जब आप जाँच ही नहीं करते कि वे गलती क्या कर रहे हैं तो बचाएंगे क्या?

अगर आप दस घंटे—बारह घंटे व्यापार में लगे रहते हैं, अगर आपके पास बच्चे को चेक करने की फुर्सत ही नहीं है, तो वो बिगड़ जाएगा। इसलिए मेरा आपसे निवेदन है कि, व्यापार में दो घंटा कम करें, दो रूपया कम कमाएं, धीरे—धीरे कमाएं, बहुत जल्दी पैसे न कमाएं। एक घण्टा—दो घण्टा समय बचाएं, समय निकालकर अपने बच्चों पर, पत्नी पर ध्यान दें, उनकी समस्याएं सुनें, उनकी समस्याएं सुलझाए। वो पूछता है:— हवन क्यों करना? संध्या क्यों करना? उसको समझाइए कि किसलिए करना चाहिए। दान क्यों देना चाहिए? दान इसलिए देना चाहिए, क्योंकि सब लोग धनवान, समर्थ नहीं हैं। भगवान ने हमको बहुत पैसे दिए हैं, ताकि जिसके पास पैसे नहीं हैं, उसकी सहायता करें।

अच्छी संतान गृहस्थ का मुख्य फल.....

गृहस्थ जीवन का जो सबसे मुख्य फल है, वो है—अच्छी संतान। अगर आपने गृहस्थ आश्रम में प्रवेश किया और आपकी संतान अच्छी है, उत्तम है, धार्मिक है, परोपकारी है, स्वावलम्बी है, देशभक्त है, चरित्रवान है, ईमानदार है,

तो आपका गृहस्थ जीवन सफल है। संतान झूठ बोलती है, छल—कपट करती है, धोखा देती है, बेईमानी करती है, और उल्टे—सीधे काम करती है। इस तरह अगर संतान अच्छी नहीं बनी, तो फिर गृहस्थ जीवन सफल नहीं माना जाएगा। आप भले ही कितने भी पैसे कमाएं, कितने ही खर्च करें, कितनी भी मेहनत करें, अगर संतान अच्छी नहीं बना पाए, तो गृहस्थ जीवन सफल नहीं माना जाएगा। और जो बच्चे बिगाड़ दिए, उसका आगे दण्ड भी भोगना पड़ेगा।

तो जैसा मैंने निवेदन किया था, कि ये ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास, इन चारों ही आश्रम में खूब श्रम करना है। मेहनत करने की इच्छा बनाएं, तैयारी करें, कि मुझे खूब मेहनत करनी है, अपने कर्तव्य का पालन करना है, तो आपका गृहस्थ अच्छा बनेगा।

बच्चों के प्रति पूरे सावधान रहें, उनको हवन में बैठाएं, संध्या में बैठाएं तब उनको खाना—पीना आदि दें। स्कूल की पढ़ाई बाद में, पहले उनको धार्मिक बनाएं। अगर एक व्यक्ति धार्मिक है, और स्कूल में कॉलेज में कम पढ़ा—लिखा है, वो बस दाल, रोटी कमा के खा लेगा, अपना जीवन चला लेगा। ऐसा व्यक्ति ज्यादा अच्छा है अथवा एक व्यक्ति ने पढ़ाई बहुत अच्छी की, डिग्री बहुत ली, एम. टेक. हो गया, एम.एस.सी. हो गया, एम.बी.ए. हो गया और खूब पैसे कमाता है, झूठ—छल—कपट चोरी से पैसे कमाता है और धार्मिक नहीं है, वो अच्छा है? दो में से कौन सा अच्छा है? पहला या दूसरा? पहला। बस तो अपने बच्चों को पहले जैसा बनाएं। दो रुपये कम कमाएं, कोई चिंता नहीं, कोई भूखा नहीं मरेगा। मेहनत से, ईमानदारी से काम करेंगे, भगवान रोटी सबको देता है। पशु—पक्षियों के पास कोई खास बुद्धि नहीं है, बहुत थोड़ी सी बुद्धि है, वो स्कूल—कॉलेज नहीं जाते हैं, कोई डिग्री प्राप्त नहीं करते हैं, वो भी खा—पी के जी लेते हैं। इन्सानों के पास तो पशुओं से कितनी अधिक लगभग हजार गुना अधिक बुद्धि है, तो क्या वो दो रोटी नहीं कमा सकते? खूब कमा सकते हैं।

प्रश्न : भारत देश वैदिक और सांस्कृतिक होते हुए भी आज की पीढ़ी पश्चिमी देशों की ओर ज्यादा भाग रही है। उसकी क्या वजह है और उसे कैसे रोका जाए?

उत्तर : जो हमारे भारत देश की स्थिति है, हम ऐसा मानते हैं, कि हमारा देश धार्मिक है, अध्यात्मवादी है, परोपकारी है, आदि—आदि जो भी हम मानते

हैं, ऐसा कभी किसी जमाने में था। अध्यात्म में भी और भौतिक विज्ञान में भी, सब प्रकार की उन्नति में देश सबसे आगे था, पर आज वैसी स्थिति नहीं है।

आज तो, प्रायः सबके दिमाग में पैसा घूमता है। आज हमारे जीवन का केन्द्र-बिन्दु सिर्फ पैसा हो गया है। पैसा कमाओ, भोग के साधन खरीदो और खाओ-पिओ, मजा करो। लड़का-लड़की पढ़-लिख करके ग्रैज्यूएट हो गए, पोस्ट-ग्रैज्यूएट हो गए, शादी कर ली। शादी करते ही प्रायः माँ-बाप को भूल जाते हैं, कोई इंग्लैण्ड चला जाता है, तो कोई ऑस्ट्रेलिया चला जाता है। और वो वहाँ खाता-पीता है, मजा करता है, माता-पिता की सेवा ही नहीं करता, उनको पूछता ही नहीं। माता-पिता भारत में, बेटा विदेश में।

तो मैं आपको हाथ जोड़कर निवेदन करता हूँ, अपने बच्चों को विदेश न भेजें। भारत में भी रोटटी मिलती है। इसलिए रोजी-रोटी कमाने को विदेश मत भेजिए। अगर आपका बेटा विदेश गया, तो समझो आपका बेटा हाथ से गया। आपने अपने बेटे को पाला-पोसा जवान किया। 25-30 साल तक खिलाया-पढ़ाया, लाखों रूपया खर्च किया और वो खा-पीकर विदेश चला गया। आपने तो अपने सारे पैसे भी खो दिए, बेटा भी खो दिया। अब बताइए, आपके हाथ में क्या आया? यदि वैदिक ढंग से चलते, वानप्रस्थी बनते, तो आदमी घर छोड़ देता है, पर वो अपनी स्वेच्छा से छोड़ता है। वो एक अलग बात है, यहाँ तो वो छोड़ना नहीं चाहता है। बेटा घर से विदेश में चला जाता है, तो आपके तो लाखों रूपए खर्चा हो गए। बीस-तीस साल की तपस्या भी गई और मेहनत भी गई। आप बुढ़ापे में ऐसे ही खाली। अपने हाथ से रोटटी बनाओ और बर्तन भी धोओ-मांजो अपने हाथ से सारा काम करो, बीमार हो गए तो हॉस्पिटल ले जाने वाला भी कोई नहीं है।

अपने बच्चों को विदेश मत भेजिए। उनके दिमाग में बचपन से भारतीय संस्कार, वैदिक संस्कार, धार्मिकता, अध्यात्म और देश-भक्ति, ईमानदारी, चरित्र, ये सब बातें डालिए। उनको ऐसे कोर्सेस (विषय) मत करवाइए कि पढ़-लिख करके भले ही इंजीनियर बनें, परन्तु विदेश जा करके पैसे कमाएं। उनको ऐसे विषय पढ़ाइए, जिससे कि वो भारत में रहें, भारतीय परम्परा से जिएं। उनको जीवन का उद्देश्य बताइए, कि हमारे जीवन का उद्देश्य मोक्ष प्राप्ति है, ईश्वर प्राप्ति है। और परोपकार करना, देश-भक्ति करना, ये उसके

साधन हैं, उसके सहयोगी हैं। इस तरह से उनको स्वदेश — भक्ति सिखाएं, भारतीय परंपरा सिखाएं, उनको वैदिक संस्कार दें, तो इस समस्या से आप बच सकते हैं।

प्रश्न : क्या बच्चों को सिर्फ शिक्षा के लिए विदेश भेज सकते हैं?

उत्तर : अगर आपके बच्चों की गारण्टी हो, कि ये विदेश जाकर वापस आ जाएंगे। अगर इस बात की गारण्टी हो, शिक्षा प्राप्त करके, चार साल वहाँ पढ़ के, डिग्री लेकर वापस यहाँ आएंगे और भारत में ही आकर रहेंगे, यहीं स्थिर होंगे, आगे यहीं नौकरी—व्यापार करेंगे, यहीं कमाएंगे, यहीं खाएंगे, यहीं सारा जीवन जीएंगे, तब तो बच्चों को विदेश में भेज सकते हैं।

अगर इसकी गारण्टी नहीं है, यदि आपको लगता है कि बेटा चार साल विदेश में रह गया, फिर तो भारत में नहीं आएगा। फिर वहीं ग्रीन—कार्ड ले लेगा और वहीं का नागरिक हो जाएगा। तो फिर बच्चों को विदेश मत भेजिए। नहीं तो आपने बेटा भी खोया, पैसा भी खोया और सारी मेहनत भी गई। विदेश में रहने वाला आपका बेटा, बुढ़ापे में आपकी सेवा नहीं करने वाला। ऐसी स्थिति में विदेश भेजना ठीक नहीं है।

प्रश्न : बेटा—बेटी के विकास में पक्षपात करना चाहिए या एक जैसा करना चाहिए?

उत्तर : प्रश्न है कि, बच्चों के विकास में पक्षपात करना चाहिए या एक जैसा व्यवहार करना चाहिए? परवरिश में भेदभाव करना चाहिए कि नहीं? तो इस प्रश्न का उत्तर है कि इसमें भेदभाव नहीं करना चाहिए, दोनों को खाना मिलना चाहिए, एक जैसा मिलना चाहिए, एक जैसी सुविधा मिलनी चाहिए। दोनों ही आपके घर—परिवार के सदस्य हैं। दोनों आपके शरीर से पैदा हुए हैं, बेटा भी और बेटी भी। इनमें कोई भेदभाव नहीं करना चाहिए। उनके विकास में, पढ़ाई—लिखाई में सुविधाओं में कोई अन्तर नहीं करना चाहिए।

हां, कुछ नियम पुरुषों के लिए अलग होते हैं, स्त्रियों के लिए कुछ अलग होते हैं। उतना तो ध्यान रखना पड़ेगा। स्त्रियों को सुरक्षा चाहिए। इसलिए उनकी सुरक्षा के लिए कुछ विशेष नियम बनाए जाते हैं। वो नियम लागू करने होंगे। बाकी विकास के लिए जो सुविधाएं देनी हैं, उसमें कोई आपत्ति नहीं है, वे दोनों की बराबर होनी चाहिए।

प्रश्न— हमारे बेटे—बहू अब हमारे निर्देश के अनुसार व्यवहार नहीं करते, हमारे नियम—अनुशासन में नहीं चलते। इस स्थिति में हमें क्या करना चाहिए?

उत्तर : जब बेटा 20—22—25 वर्ष का हो जाए, शादी हो जाए, बहू घर में आ जाए तो अब आप उस पर जबरदस्ती अपना कोई नियम—आदेश लागू नहीं कर सकते। हां, उसको प्रेम से सुझाव दे सकते हैं, बता सकते हैं, समझा सकते हैं। अगर वो आपकी बात मान लेता है, तो ठीक है। यदि नहीं मानता है तो उसको प्रेम से ही बार—बार समझाना चाहिए।

प्रेम से समझाएं कि 'बेटा ऐसा करने से ये लाभ है, इसलिए ऐसा करना चाहिए और ऐसा करने से ये हानि है, इसलिए ऐसा नहीं करना चाहिए।' विवाह के बाद बेटे को बस प्रेम से समझा ही सकते हैं। अब उसके साथ जबरदस्ती नहीं कर सकते। जबरदस्ती तो छोटे बच्चों के साथ होती है। 12, 13, 14 साल की उम्र तक होती है, उससे आगे फिर प्रेम से, मित्रों के समान सुझाव देना ही ठीक रहता है।

प्रश्न : प्राचीन काल में लड़के और लड़कियां अलग—अलग गुरुकुल में पढ़ते थे? आज तो प्रायः आधुनिक स्कूलों में बच्चों को इकट्ठा ही पढ़ाते हैं। बच्चे कुछ गलतियां करते हैं, तो टीचर लोग उनको स्कूल में दंड भी नहीं देते हैं। ऐसी स्थिति में हमें क्या करना चाहिए, जिससे कि बच्चों का चरित्र ठीक—सुरक्षित बना रहे?

उत्तर : बच्चों को गुरुकुल नहीं भेज पा रहे, ब्रह्मचर्य का उतना पालन नहीं हो पा रहा, ऐसी स्थिति में माता—पिता को बच्चों पर पूरी नजर रखनी चाहिए, पूरी सावधानी से उनकी देखभाल करनी चाहिए। उनको अच्छाई—बुराई सब समझानी चाहिए।

पहले तो कोशिश करें कि सहशिक्षा यानी कोएजुकेशन स्कूल में न पढ़ाएं। लड़के—लड़कियों के अलग—अलग स्कूल भी होते हैं। फिर भी यदि कभी, ऐसी सुविधा उपलब्ध न हो पाए और सहशिक्षा स्कूल में ही पढ़ाना पड़े, तो फिर बहुत सावधानी रखनी होगी। बच्चों के जो भी दैनंदिन क्रियाकलाप होते हैं, उन पर पूरी नजर रखें।

बच्चों का 24 घण्टे का टाइम—टेबल कागज पर लिखकर उनके कमरे में दीवार पर चिपकाएं। बच्चे उस टाइम—टेबल का पालन करें। जैसे रात को 10 बजे तक सो जाएं। सुबह 5 बजे तक उठ जाएं। पढ़ाई—लिखाई सब काम दिन में करें, रात को देर तक नहीं। उनसे घर में रोज संध्या—हवन करवाएं। 10—20 बार गायत्री मंत्र का पाठ करवाएं, उनको अच्छे संस्कार दें। अच्छाई—बुराई रोज समझाएं। उनकी जांच—पड़ताल करें। दिनभर की दिनचर्या पूछें कि आप आज दिनभर कहां रहे, कहां गए, किसके साथ बैठे, क्या बातें की, क्या खाया—पिया, किस मित्र के यहां गए। इस तरह उसकी खूब पूरी खोजबीन भी रखें। पता करते रहें कि ये पढ़ने जाते हैं या आपस में गप्पें मारते हैं, टेलीविजन—कम्प्यूटर में ही समय तो नष्ट नहीं करते रहते हैं।

जहां—जहां गलती होने की संभावना हो, उससे बचाते रहें। सावधानी सूचना—संकेत देते रहें, तो बहुत कुछ बच्चों पर नियंत्रण किया जा सकता है। उनको गलती करने से और चरित्रहीनता से बचाया जा सकता है।

माता—पिता को इस प्रकार के प्रयास के लिए कुछ समय भी निकालना होगा। अपने काम—धंधे, व्यापार से थोड़ा एकाध घंटा समय निकालें, काम—धंधा, कुछ एकाध घंटा कम करें और रात को सोने से पहले घंटा, आधा घंटा बच्चों के साथ बैठें और उनकी पूरी दिनचर्या पूछें, उनकी जो समस्याएं हैं उन समस्याओं को सुलझाएं, उनका मार्गदर्शन करें। इस प्रकार से हम बच्चों की बहुत कुछ सुरक्षा कर पाएंगे। अपने अभिभावक होने की जिम्मेदारी ईमानदारी से पूरी कर पाएंगे।

प्रश्न : चार आश्रमों की बात, बच्चों को गुरुकुल में भेजने की बात, ये सब बातें आदर्श हैं, प्राचीन काल के हिसाब से हैं, परंतु आजकल के समय में ये व्यवहारिक नहीं हैं। तो आजकल कोई ऐसी पद्धति बताएं जिससे कि हम बच्चों को अच्छे संस्कार देकर विकसित कर पाएं।

उत्तर : मूल प्रश्न है कि, आजकल गृहस्थ में लोग अपने बच्चों को अपने पास ही रखते हैं, तो ऐसी परिस्थिति में बच्चों को अच्छे संस्कार कैसे दिए जाएं?

भूख लगने पर रोटी तो खानी ही पड़ेगी, रसोई में जाना ही पड़ेगा, भोजन पकाना ही पड़ेगा। यदि आप इतनी मेहनत नहीं करना चाहते, तो फिर भूख भी नहीं मिटा पाएंगे। इस तरह भूख के कष्ट से परेशान दुःखी होते रहेंगे। ठीक

वैसे ही यदि आप अपने बच्चों को अच्छा बनाना चाहते हैं, उनको संस्कारी बनाना चाहते हैं, महर्षि गौतम, कणाद, जैमिनी, पतंजलि, महर्षि दयानंद जैसा बनाना चाहते हैं, तो उसके लिए तपस्या तो करनी ही पड़ेगी। अंतिम उपाय तो वही है, गुरुकुल सिस्टम। बच्चों को अच्छे-अच्छे गुरुकुलों में भेजना होगा। वहां अच्छे वैदिक विद्वान, बच्चों की परीक्षा करें, उनको पढ़ाएं-लिखाएं, तैयार करें। उन पर परिश्रम करें और ब्रह्मचर्य के नियमों का पालन कराते हुए जीवन का अच्छा विकास करा सकते हैं।

दूसरी बात जो आपने कही, कि हमारी बातें आदर्श तो हैं, परंतु व्यवहारिक नहीं हैं। शायद आप व्यवहारिक का अर्थ ये समझते हैं, कि आप जो चाहें, वो मनमानी करें और गृहस्थ के सारे नियम तोड़ दें, गुरुकुल के, ब्रह्मचर्य के सारे नियम तोड़ दें और फिर भी आपका बच्चा अच्छा बनना चाहिए, श्रेष्ठ बनना चाहिए, संस्कारी बनना चाहिए। यानी कि, आपको इसके लिए मेहनत कुछ भी न करनी पड़े और बच्चों को नगरों में ही रखते हुए कोई ऐसा रास्ता ढूंढ़ें, जिससे आपके बच्चे अच्छे विद्वान, संस्कारी, धार्मिक बन जाएं। शायद आप इसी तरीके को व्यवहार समझते हैं।

यदि ऐसा है तो ये आपकी भयंकर भूल है। वस्तुतः व्यावहारिकता का वास्तविक अर्थ ये नहीं होता। इसका आशय तो यह निकला कि आप अपना पुरुषार्थ करना नहीं चाहते, कामचोरी करना चाहते हैं, काम से बचना चाहते हैं और फिर बिना पुरुषार्थ किए मुफ्त का फल लेना चाहते हैं, जो कदापि संभव नहीं है। इसलिए आपका जो शब्द है व्यावहारिक, ये शब्द आपके मनमाने अर्थ में उचित नहीं हैं। इसके विपरीत जो प्राचीन आदर्श की बातें हैं, वो सारी व्यावहारिक हैं। आजकल अधिकांश माता-पिता कामचोर हैं, वो मेहनत करना नहीं चाहते, और बिना मेहनत किए अपने बच्चों को बुराइयों से बचाना चाहते हैं। इसीलिए वे इस व्यावहारिक शब्द का प्रयोग अपने बचाव के लिए आड़ की तरह करते हैं।

वास्तव में ये सारी बातें व्यावहारिक हैं, जो प्राचीन हैं, गुरुकुल पद्धति वाली। आपको ऐसा ही करना होगा, तभी आप अच्छे नागरिक, अच्छी संतान की आशा कर सकते हैं। यदि आप इस गुरुकुल-शिक्षा पद्धति और ब्रह्मचर्य के नियमों का पालन नहीं करेंगे, न बच्चों से करवाएंगे, तो फिर आपको वो परिणाम भी नहीं मिलेगा।

चलो फिर भी एकदम, हम सारी व्यवस्था को बदल नहीं पाएंगे, नहीं बदल सकते, माता-पिता भी नहीं चाहते, बच्चे भी नहीं चाहते, समाज और सरकार भी नहीं चाहते कि गुरुकुल बनाए जाएं, अच्छे विद्वान वहां तैयार हों, अच्छे धार्मिक, ब्रह्मचारी, तपस्वी लोग, बढ़िया लोग तैयार हों। तो ये आदर्श की बातें, व्यावहारिक होते हुए भी, एकदम व्यवहार में नहीं आ पा रहीं। तब तक के लिए आपको बीच का एक रास्ता बता देते हैं, कि पढ़ने के लिए तो बच्चों को स्कूल में भेजें। जितने 6 घंटे, 7 घंटे वो स्कूल में गए और पढ़ आए। और बाकी जो, उनके जीवन के दिनचर्या के 17-18 घंटे बचते हैं, वो आपकी नजर में रहना चाहिए। यदि इस वर्तमान परिवेश में, वर्तमान परिस्थितियों में भी बच्चों को आप धार्मिक और संस्कारी बनाना चाहते हैं, तो उन पर कुछ टाइम-टेबल लगाना होगा। जैसे कि रात को उनको जल्दी सुला दें 9, 9:30, 10 बजे, सुबह जल्दी उठाएं 4 बजे, 4:30 बजे, अधिकतम 5 बजे। फिर उनकी दिनचर्या नहाना-धोना, व्यायाम, स्नान, फिर ईश्वर का ध्यान, उपासना, संध्या, यज्ञ करना। फिर जब स्कूल का समय हो जाए नाश्ता आदि करके, फिर स्कूल जाना। दोपहर बाद शाम को स्कूल से लौटकर पढ़ाई-लिखाई करके, एकाध घंटा खेलकूद भी करें, और टेलीवीजन एकाध घंटा देखना हो तो देखें, पर अच्छे कार्यक्रम देखें, चरित्रहीनता के अश्लील दृश्य आदि न देखें, और शाम को भी उनको संध्या-उपासना करवाएं। आधा घंटा उनको कोई धार्मिक शिक्षा, कुछ इतिहास की कथाएं-कहानियां, महापुरुषों के जीवन की घटनाएं सुनाएं, जिससे कि बच्चों को अच्छे संस्कार मिलें। कम से कम इतनी मेहनत आपको माता-पिता को करनी होगी।

इस प्रकार से माता-पिता को बच्चों के लिए समय निकालना होगा। रात को सोने से पहले उनकी पूरी दिनचर्या पूछें। आपने उनको टाइम-टेबल के हिसाब से जो-जो काम बताए, व्यायाम, ध्यान, हवन, संध्या, स्वाध्याय आदि-आदि, वो उन्होंने पूरा किया या नहीं किया। स्कूल की पढ़ाई, होमवर्क पूरा कम्पलीट किया या नहीं किया। दिन में कहां गए, किससे मिले, क्या बातें हुई, क्या खाया-पिया, किससे कैसी चर्चा हुई और जो भी आवश्यक हो, उनकी वो जांच-पड़ताल पूरी करें।

आप वर्तमान परिस्थितियों में यदि इतनी मेहनत करेंगे, तो कुछ आशा की जा सकती है कि आने वाले समय में बच्चे कुछ संस्कारी बनें, कुछ धार्मिक बनें,

कुछ ईमानदार बनें, देशभक्त बनें और सच्चाई से सुखपूर्वक अपना भी जीवन जिएं, माता-पिता की भी सेवा करें और समाज को भी सुख दे सकें।

इसके अलावा उनकी जो समस्याएं हों उनको सुलझाएं। माता-पिता इस तरह से घण्टा, आधा घण्टा समय रोज निकालें। थोड़ा शांति से बच्चों के साथ बैठें, बच्चों के निर्माण को महत्त्व दें। तो वर्तमान परिस्थितियों में हम आशा कर सकते हैं, कि बच्चों को कुछ-कुछ संस्कारी बनाया जा सकता है, उनको एक अच्छा नागरिक बनाया जा सकता है।

प्रश्न : क्या युवा बेटे को अपने व्यापार आदि की जानकारी देनी चाहिए? क्या उसको सारे रहस्य बताने चाहिए?

उत्तर : जी हां, पिता की ये जिम्मेदारी है कि, वो अपने जवान बेटे को अपने व्यापार की बातें बताए, अपना राजदार बनाए, उसको सारी बातें बताए। उसे यह जानकारी दी जाए कि मैं किससे उधार लेता हूँ, किससे कितना उधार ले रखा है, किसको कितना उधार दे रखा है, कितना वापस लेना है, किससे सामान खरीदना है। ये सब बातें अपने जवान बेटे को जो 15-18 साल का हो जाए और व्यापार आदि को समझने लगे, उसको बतानी चाहिए।

कभी-कभी ऐसा होता है कि, अचानक दुर्घटना होती है, और पिताजी की मृत्यु हो जाती है, उस परिस्थिति में, अगर बेटे को पता होता है कि मेरे पिताजी ने किससे, कितना उधार ले रखा है और किसको उधार दे रखा है, तो दूसरे लोग फिर अनुचित लाभ नहीं उठा सकते। यदि बेटे को इन बातों का पता न हो, तो जिन लोगों से उधार ले रखा था, पिता के मरने के बाद वो तो आ जाते हैं वसूल करने, और जिनको उधार दे रखा था, उनमें से कोई आता नहीं। फिर परिवार की स्थिति बहुत खराब हो जाती है, और बहुत सारा धन दूसरे लोग खा जाते हैं और आर्थिक रूप से बहुत हानि होती है। इसलिए जवान बेटे को अपनी सब रहस्य की बातें जो अपने अनुकूल हों, धीरे-धीरे समझानी चाहिए।

कभी ऐसा भी होता है, पिता के जो, साथी सहयोगी, मैनेजर या मुनीम होते हैं, उनको सब जानकारी होती है। यदि पिता अपने रहस्य की बातें, व्यापार की बातें, अपने बेटे को नहीं बताता है, तो पिता की अनुपस्थिति में वे लोग फिर व्यापार में दुरुपयोग करते हैं। बेटे को पता नहीं होता और नीचे-नीचे हजारों रुपये की हेरा-फेरी वो कर लेते हैं। इससे फिर व्यक्ति को नुकसान

होता है। उस नुकसान से बचने के लिए जवान बेटे को पूरी सम्पत्ति की जानकारी देनी चाहिए।

कभी—कभी ऐसा भी होता है कि परिवार में दो—तीन बेटे होते हैं, तब ये प्रश्न उत्पन्न हो जाता है, किसको जानकारी दें। प्रायः बड़े बेटों को जानकारी दी जाती है, वो उम्र में भी, और बच्चों से बड़ा होता है, समझदार भी होता है, तो उसको भी सारे रहस्य बता दिए जाते हैं कि हमारी सम्पत्ति का क्या—क्या विवरण है। बड़े बेटों को भी ये तब बताना चाहिए, जब वो ईमानदार हो और बाकी भाई—बहनों का भी ख्याल रखता हो। वह सबके साथ न्याय की भावना रखता हो, ऐसी स्थिति में बड़े बेटों को भी ये रहस्य की बातें, बताई जा सकती हैं।

कभी—कभी इससे उल्टा भी देखा जाता है, कि बड़ा बेटा इतना अनुकूल नहीं होता, लापरवाह होता है और वो घर की सम्पत्ति की सुरक्षा की जिम्मेदारी नहीं निभाता, जबकि उसके छोटे भाई इस बारे में ज्यादा गंभीर होते हैं, वो घर की स्थिति को समझते हैं, और जिम्मेदारी को समझते हैं। तो ऐसी स्थिति में फिर छोटे भाईयों को राजदार बनाना चाहिए। पिता की ये जिम्मेदारी है, कि जो गंभीर हों, घर की सम्पत्ति संभाल सकें, उसकी सुरक्षा कर सकें, परिवार को आगे संभाल सकें, उन बच्चों को अपने व्यापार की सम्पत्ति का रहस्य बताए।

कभी—कभी ऐसा भी होता है कि, पिता जो है, अपनी पुत्री से मोह रखता है और स्वाभाविक भी है। तो कभी ऐसा भी हो तो, भले ही उससे भावनात्मक रूप से व्यवहार रखें, उसमें कोई दिक्कत नहीं है। परंतु जो धन—संबंधी बातें हैं, जो व्यापार संबंधी लेने—देने की बातें हैं, वो बेटे को बताना ज्यादा अच्छा रहता है। बेटा तो शादी करके चली जाएगी दूसरे परिवार में और फिर कभी ऐसा देखा जाता है, कि वो बेटा को सारे रहस्य मालूम होते हैं, वो अपने पति को बताती है, और जो पिता का दामाद होता है, वो फिर व्यापार में दखल देने लगता है। चालाकी से वो बहुत सारा धन बटोर लेता है। तब पिता को ये भूल समझ में आती है, कि मैंने अपनी सारी रहस्य की बातें बेटे को नहीं बताई, बेटा को बताई और बेटा तो पराई थी वो तो चली गई, अब धीरे—धीरे दामाद ने उसको धोखा देकर के बहुत सी सम्पत्ति हथिया ली। ऐसी भूल से भी सावधान रहना चाहिए।

बेटा अगर योग्य है, समझदार है, बुद्धिमान है, तो धन संबंधी बातें तो, बेटे

को ही बताना उचित रहता है। वो ही आगे घर—परिवार को संभालेगा, सम्पत्ति की भी सुरक्षा करेगा। इस प्रकार हमको सावधानी का प्रयोग करना चाहिए।

प्रश्न : यदि जवान बेटा रात को देर से घर में आए तो माता—पिता को क्या करना चाहिए?

उत्तर : बेटा जैसे—जैसे जवान हो, यानि पन्द्रह, सोलह, सत्रह की उम्र प्राप्त हो, तब से लेकर बीस, बाइस, पच्चीस, साल तक जब तक उसकी शादी न हो जाए, तब तक माता—पिता को विशेष सावधानी रखनी चाहिए। उसका बाहर जाने के लिए समय निर्धारण करना चाहिए, शाम को, रात को घर लौटने का समय निर्धारित करना चाहिए।

यदि माता—पिता का अपना ही व्यवसाय ऐसा है कि वो देर से लौटते हैं, तो उनको भी अपने टाइम—टेबल में थोड़ा परिवर्तन करना चाहिए। कोशिश करनी चाहिए कि जो बात माता—पिता बच्चों को सिखाना चाहते हैं, पहले वो स्वयं उसका आचरण करें। यदि ऐसा करेंगे तो बच्चा स्वयं ही उनका अनुकरण करेगा। इस तरह बच्चे के भटकने की संभावना कम रहेगी।

फिर भी हम मान लेते हैं कि सौ में से एक दो माता—पिता का व्यवसाय ऐसा हो सकता है, जिसमें कि वो चाहकर भी जल्दी घर नहीं लौट पाते हैं। मजबूरन देर से ही घर आते हैं, दस बजे, ग्यारह बजे। ऐसे माता—पिता को छोटी उम्र से ही बच्चों को ये समझा देना चाहिए कि बेटा हमारी मजबूरी है, हमारा काम—धंधा, व्यवसाय ही ऐसा है, कि रात को देर तक काम चलता है। इसलिए हम घर जल्दी आ नहीं पाते, पर तुम अभी विद्यार्थी हो, तुम्हारा काम पढ़ने—लिखने का है, तुम अपनी दिनचर्या ठीक रखो, अपनी समय—सारणी का ध्यान रखो, रोज समय पर सोना, समय पर उठना, खाना—पीना, पढ़ना—लिखना आदि सारे काम तुम अपने हिसाब से करते रहो। इस प्रकार से बच्चों को बचपन से ही ये समझाने का प्रयास करना चाहिए।

यदि माता—पिता रात को जल्दी लौट सकते हैं, तो उनको स्वयं जल्दी आना चाहिए, क्योंकि गृहस्थ में ये देखा जाता है, कि बच्चे अपने जीवन में जो अच्छी—अच्छी बातें सीखते हैं या बुरी भी सीखते हैं, जो भी सीखते हैं, वो लगभग अपने माता—पिता के जीवन—आचरण से ही सीखते हैं। दस में से लगभग आठ बातें वो अपने माता—पिता के आचरण से सीखते हैं, और दो बातें

माता—पिता के उपदेश से सीखते हैं। ये बहुत ही अच्छी सुविधा है, ईश्वर की ओर से दी हुई कि, माता—पिता अपने बच्चे को जो भी सिखाना चाहते हैं, वो स्वयं पहले आचरण में लाएं, फिर उनकी देखा—देखी बच्चा स्वयं ही सीख जाएगा। दस में से आठ बातें यानि 80 प्रतिशत बातें बच्चा अपने माता—पिता के जीवन में से सीखता है, अपनी आँख से देखकर के सीखता है, दस में से दो बातें माता—पिता से सुनकर। इस तरह से हम बच्चे का निर्माण बहुत अच्छा कर सकते हैं।

जैसे—जैसे उम्र बढ़ती है, बच्चा जवान होता है, पन्द्रह, सोलह, सत्रह का होता है, उस पर विशेष सावधानी से नजर रखनी चाहिए। यही एक उम्र है जो बनने—बिगड़ने की होती है। कोई तेरह—चौदह साल से ले करके और जब तक शादी—विवाह हो पच्चीस तक, ये खास सावधानी की उम्र होती है, इसमें व्यक्ति बिगड़ सकता है। यदि उस पर ध्यान दिया जाए तो, बन भी सकता है। इसलिए माता—पिता को इस बात पर अच्छा ध्यान देना चाहिए कि हमारे बच्चे कहाँ जाते हैं, कब जाते हैं, क्या करते हैं, पूरा ध्यान रखें और सावधान रहें। उनको गलतियों से बचाएँ, सावधानियाँ सिखाएँ—बताएँ।

“जिस काम से बच्चों को रोकना चाहते हैं, उस काम की हानियाँ बताएं और जिस काम में बच्चों को लगाना चाहते हैं, प्रेरित करना चाहते हैं, उस कार्य से क्या फायदे होते हैं ये बताएं।”

उनसे मित्रवत संबंध रखें, ताकि बच्चा अपने मन की बात खुल कर बता सके। अपने मन की समस्याएं खुलकर बता सके। मान लो कि बच्चा बाहर दिन में जाता है, किसी लड़की से बात करता है, कैसी बातें करता है, किस तरह की बातें करता है, वो सारी घर में खुलकर बता सके, इस तरह का दोस्ताना व्यवहार बच्चे के साथ रखना चाहिए, जिससे माता—पिता ये समझ सकें कि बेटा ठीक दिशा में ही जा रहा है, या कहीं भटक रहा है। इस तरह उस बच्चे को समय रहते बचाया जा सकता है।

कुछ समय बच्चे के साथ बैठें, कुछ बातचीत करें, उसका हालचाल पूछें। यदि हो सके तो एकाध घण्टा उसके साथ समय बिताएं, चाहे गेंद या फिर कौरम—बोर्ड ही खेलें, चेस खेलें। इस तरह उससे दोस्ती का व्यवहार रखें ताकि बच्चा आपसे दूरी महसूस न करे। जो माता—पिता बच्चों के साथ खुलकर रहते

हैं, उनके बच्चों के भटकने की संभावना कम ही रहती है। माता-पिता समय रहते सावधान रहकर उस बच्चे को बचा सकते हैं।

अनेक बार ऐसा देखा जाता है, कि जब माता-पिता और बच्चों में दूरी होती है, तो वो अपनी समस्याएँ खुलकर नहीं बताते। जैसे-जैसे उम्र बढ़ती है, जवान हो जाने पर घर के लोग यदि बच्चों पर ध्यान नहीं देते तो बच्चे शराब-खाने में जाने लगते हैं, दोस्तों के साथ कभी-कभी वेश्यावृत्ति के लिए भी चले जाते हैं। कभी-कभी ऐसा भी सुनने में आता है, कि बच्चे तस्करी में लग जाते हैं, कोई आवारागर्दी में समय खराब करके देर से घर आते हैं। इस तरह के बुरे काम अधिकतर रात के अंधेरे में ही होते हैं, दिन के उजाले में तो कम ही होते हैं।

जब बच्चा देर से घर आएगा रात को, तो उस पर नजर रखनी चाहिए। ऐसा माहौल बनाना चाहिए कि वो रात को देर से आए ही नहीं, जल्दी आए, समय पर ही आए। अगर कोई बच्चा व्यवसाय के कारण, घर देर से आता है, तो उसको इस तरह से माता-पिता सिखाएं कि जो भी काम करना है, उसको दिन में करो। सारे काम दिन में जल्दी पाँच-छह बजे तक निपटा लो, छह-सात बजे तक घर आ जाओ ताकि हम अपनी रात की क्रियाएं ठीक कर सकें। ईश्वर का ध्यान उपासना करें, संध्या वंदन करें। और प्रेम से, सब प्रकार से अच्छी तरह मिल-जुलकर रहें। इससे घर में आनंद का वातावरण बनता है।

इस प्रकार से माता-पिता को प्रयास करना चाहिए। इस तरीके को अपनाकर बच्चों को बिगड़ने से रोका जा सकता है, अपने परिवार की रक्षा की जा सकती है।

प्रश्न : क्या बच्चों पर छोटी उम्र में कोई जिम्मेदारी सौंपनी चाहिए या फिर जब बच्चे बड़े हो जाएं, तभी उनको अवसर देना चाहिए?

उत्तर : बच्चों को उनकी उम्र के हिसाब से काम सौंपने चाहिए। जैसे 10, 11, 12, 13, 14 साल के बच्चें हैं, उनको उम्र के हिसाब से छोटे-छोटे काम सौंपने चाहिए। यदि वे छोटा-छोटा काम करेंगे, तो इससे उनका आत्मविश्वास बढ़ेगा। यदि आप अपने बच्चे को एक सफल इंसान बनाना चाहते हैं, उसे बुद्धिमान, धार्मिक, आत्मविश्वासी, स्वयं अपने भरोसे जी सकने वाला देखना

चाहते हैं, तो 10-12 वर्ष की उम्र से ही उनसे छोटे-छोटे काम कराना चाहिए। अगर बच्चे 10 साल से छोटे हों तो घर के काम कराना चाहिए।

प्रेम से कहना चाहिए कि, बेटा ये सामान ले आओ, ये रख आओ और अपने भाई को ये सूचना दे आओ, अपनी बहन को ये वस्तु देकर आओ। ऐसे घर के अंदर ही छोटे-छोटे काम उससे कराना चाहिए। जब बच्चा 10 साल से ऊपर हो जाए, 11, 12 का हो जाए तो उससे छोटे-छोटे काम बाजार के भी शुरू कराने चाहिए। जैसे मान लो कि साबुन लाना है, तेल की शीशी लानी है, नींबू खरीद कर लाना है। 12 साल का बच्चा है, उसे आप बाजार भेज सकते हैं। उसको 100 रुपये दिए और छोटे-छोटे काम उससे करवा लिए। अगर आपका बच्चा इतनी उम्र में ऐसे छोटे-छोटे काम करेगा, तो निःसंदेह उसका आत्मविश्वास बढ़ेगा। जैसे-जैसे उसका आत्मविश्वास बढ़ेगा, वैसे-वैसे उसके व्यक्तित्व का विकास होगा। उसके अंदर से डर निकल जाएगा।

कई माताएं डरती हैं, घबराती हैं, पता नहीं बच्चा छोटा है, क्या करेगा, सामान खो देगा, हमारा 100 रुपये का नोट भी खो देगा। ऐसी व्यर्थ शंका नहीं करनी चाहिए। कभी-कभी तो माता-पिता बच्चों को काम नहीं देते और बच्चों को दब्बू किस्म का, डरपोक किस्म का बना देते हैं। बार-बार कहते रहते हैं कि, इससे ये काम नहीं होगा, इसको ये काम मत दो, इसको बैंक से पैसा लाना है, तो ये पैसे खो देगा, कहीं गिरा देगा, इससे अपना सामान तो संभलता नहीं, पैसे क्या संभालेगा। ऐसे अंजाने में माता-पिता बच्चे के प्रति नकारात्मक-निगेटिव बातें करते हैं। ऐसा कहने से, बच्चे का आत्मविश्वास टूट जाता है। वो डरपोक और असफल व्यक्ति बनता चला जाता है। ये बातें धीरे-धीरे उसके दिमाग में जमा होती रहती हैं। आगे चल करके वो डर हमेशा के लिए उसके दिमाग में बैठ जाता है। वो बड़ा होकर अपनी शॉपिंग तक खुद नहीं कर पाता, कहीं भी वो अकेला नहीं जा पाता, कहीं कुछ काम नहीं कर पाता, हमेशा डर बना रहता है। माता-पिता को चाहिए कि वो इस तरह का व्यवहार बच्चों से न करें बल्कि उनका उत्साह बढ़ाएं, छोटे-छोटे काम दें, इससे उनका आत्मविश्वास बढ़ेगा, जीवन में सफलता प्राप्त होगी।

कभी-कभी ऐसा भी करना चाहिए कि माता-पिता ने 12, 13, 14 साल का बेटा है, 10 साल की उनकी बेटी है, दोनों बच्चों को शाम को 4 से 6, 7 बजे

तक तीन घंटे के लिए अकेला छोड़ दिया। मान लीजिए, अचानक जो 10 साल की छोटी बेटी है, उसको पेट में दर्द हो गया, तो अब बेटा जो है, वो घर में बड़ा है, वो अपनी जिम्मेदारी समझेगा और उसको जितना मालूम है, उसकी चिकित्सा करेगा। बच्चों को ऐसे-ऐसे छोटी-छोटी बातें, व्यवहार की बातें उदाहरण सहित समझाते रहना चाहिए, कि पेट में दर्द हो तो, नींबू पानी बना करके उसमें नमक डाल करके पीना चाहिए, थोड़ी उसमें काली मिर्च, गरम-मसाला डाल कर, तो उससे पेट का दर्द कम हो जाता है, गैस निकल जाती है, पेट ठीक हो जाता है आदि-आदि। अगर आपने बच्चों को इस तरह की छोटी-मोटी बातें सिखा रखी हैं, तो बहन के पेट में दर्द होने पर भाई घबराएगा नहीं, चिंता में नहीं पड़ेगा, बल्कि बहन की सुरक्षा करेगा और नींबू-पानी बनाकर उसमें नमक, जीरा, काली-मिर्च डाल कर उसको पिलाएगा। ऐसा करने से उसका आत्मविश्वास बढ़ेगा, बहन के प्रति जिम्मेदारी भी समझ में आएगी कि मेरी बहन आज रोगी है, तो इसको संभालने की जिम्मेदारी मेरी है। इस प्रकार से बच्चों को ट्रेनिंग देनी चाहिए, बच्चों को सिखाना चाहिए, उनके अंदर आत्मविश्वास लाना चाहिए।

कभी-कभी माता-पिता ये शिकायत करते हैं कि हमारा बेटा तो कुछ काम करता ही नहीं, उसको कितना भी कहो, वो जाता ही नहीं। बिजली का बिल भरना है, पानी का बिल भरना है, कोई और चीज इस तरह की बाजार से लानी है, या कोई काम करना है तो करता ही नहीं, वो करना ही नहीं चाहता है, उसको कितना ही कहते रहो, वो हिलता ही नहीं। इसके पीछे माता-पिता की कमी जाननी चाहिए, उन्होंने बच्चों को ये बात बचपन से सिखाई नहीं, उसको जिम्मेदारी का एहसास दिलाया नहीं।

एक दूसरा परिवार है, वो अपने बच्चे को बचपन से काम सिखाते हैं, उसको बाजार भेजते हैं, सामान ले के आओ, अपनी शॉपिंग खुद करो, जूते लाओ, मोजे लाओ, पैट लाओ, शर्ट लाओ, जो भी तुम्हें खरीदना है, स्वयं खरीदो। जब बच्चा अपनी शॉपिंग खुद करने लगता है, तो हो सकता है एक-दो बार कुछ पैसे ज्यादा भी खर्च कर दे, उसको पता नहीं चलता शॉपिंग में। पर एक बार-दो बार करेगा, उसके बाद वो सीख जाएगा। फिर माता-पिता उसको बताएं कि तुमने यहां पर शॉपिंग में भूल की, यहां पर भाव इतना नहीं होना चाहिए। इस भाव में ये वस्तु खरीदनी चाहिए।

ऐसे यदि माता—पिता अपने बच्चों को सिखाएं, तो उनके बच्चे बहुत ही अच्छे सफल व्यक्ति बन सकते हैं। अपने जीवन को सुरक्षित बना सकते हैं, एक सफल नागरिक बन सकते हैं, आत्मविश्वासी, आत्मनिर्भर होकर जी सकते हैं, अपने परिवार को भी सुख दे सकते हैं, समाज के लिए भी उपयोगी हो सकते हैं। तो इस प्रकार से गृहस्थ जीवन में बच्चों को ट्रेनिंग देनी चाहिए।

प्रश्न : जो बच्चे युवा हो रहे हैं, मतलब उनकी उम्र 12, 13, 14, 15, 16 साल हो रही है, तो ऐसे युवा होने वाले बच्चों के साथ, माता—पिता को किस तरह का व्यवहार करना चाहिए?

उत्तर : जो बच्चे युवावस्था में आ रहे हैं, किशोर अवस्था से पार हो रहे हैं, उनके साथ माता—पिता को बहुत सावधानी से व्यवहार करना चाहिए। बच्चे कभी घर में कुछ गलतियां भी करते हैं, तो माता—पिता जब बच्चों को उनकी गलतियां समझाएं तो बहुत सावधानी से समझाना चाहिए। माता—पिता बच्चों को हमेशा ऐसे डांटते न रहें कि, “तुम्हें कुछ नहीं आता, तुम्हारी बुद्धि बेकार है, तुम कुछ काम नहीं कर सकते, अभी तुम छोटे हो, अभी तुम बच्चे हो, तुम बाप बनने की कोशिश मत करो।” ऐसे हर बात पर उनको निरुत्साहित करना, बुद्धिमत्ता नहीं है।

जैसे—जैसे बच्चों की उम्र बढ़ती है, वैसे—वैसे उनकी बुद्धि भी बढ़ती है, उनकी इच्छाएं भी बढ़ती हैं। बच्चों की इच्छाओं का भी ध्यान रखें। उनको जमाने के साथ चलने की इच्छा होती है। जब आप अपने बच्चे को स्कूल भेजते हैं, अच्छे—अच्छे इंग्लिश स्कूलों में भेजते हैं, तो आप ये सोचते हैं कि इनको अच्छी—अच्छी बातें दुनिया—भर का सब अनुभव सीखने को मिले। उस वातावरण में रहकर उनकी अपनी इच्छाएं भी कुछ उठती हैं। इसलिए माता—पिता को उनकी इच्छाओं का भी ध्यान रखना चाहिए। जैसे कि, बच्चे अपने मित्रों को देखते हैं, वो अच्छे कपड़े पहनते हैं, कुछ अच्छे ढंग से पहनते हैं, कुछ थोड़े उनमें सुंदर—आकर्षक भी होते हैं। ऐसे आपके बच्चों की भी इच्छा हो सकती है, कि वो भी अपने मित्रों के समान अच्छे कपड़े पहनें और सुंदर दिखें, जिससे वे भी समाज में एक अपना स्थान बना सकें। ऐसी स्थिति में बच्चों को हर बात पर डाँटते रहना, कि ‘तुम्हें कुछ नहीं आता, तुम अभी छोटे बच्चे हो। ऐसा करने से उनका उत्साह टूट जाता है। बच्चों के अंदर, मन में

हीन—भावना घर कर जाती है, एक गांठ बनती जाती है। इसलिए उनको सावधानी से बातें बतानी चाहिए।

उनकी कुछ इच्छाएं पूरी भी करनी चाहिए। अपने परिवार की मर्यादा—परम्परा को ध्यान में रखते हुए बच्चों को कम से कम इतनी छूट देनी ही चाहिए, कि वो अपने समाज में मित्र—मंडल में, अपने को हीन न समझे। बच्चों के साथ ज्यादा जोर—जबरदस्ती करेंगे तो, काम बिगड़ भी सकता है, इसलिए उनको कुछ—कुछ सावधानी से समझाना—बताना उचित है।

जैसे आजकल फिल्में चलती हैं, फिल्मों का भी बहुत प्रभाव पड़ता है, बच्चे घर में भी टेलीविजन में देखते हैं, मित्रों के यहां देखते हैं, कभी सिनेमा—घर भी जाते हैं, तो उनका प्रभाव भी पड़ता है। उससे भी बचाने की जिम्मेदारी माता—पिता की होती है। बच्चों को फिल्मों के प्रभाव से भी बचाने का प्रयास करें। उन्हें अच्छाई—बुराई सब समझाएं, कि “देखो ये अच्छी बात है, ये बुरी बात है। आपको अच्छी बात सीखनी है, बुरी बात नहीं सीखनी है।”

जब आप उनको इस तरह से सिखाएं, तो इस बात का भी ध्यान रखें की उनके आस—पास कौन लोग हैं। कभी—कभी उनके मित्र आपके घर में आए हुए हैं और बच्चे अपने मित्र के साथ बैठे हैं, कुछ बातचीत कर रहे हैं और उस समय अगर कोई छोटी—मोटी गलती कर दें, तो आप अपने बच्चों को उसी समय उनके मित्रों के सामने न डांटे। उनका इस तरह से अपमान करना उचित नहीं है। आपने देख लिया कि बच्चे ने भूल कर दी, कोई बात नहीं। उस समय थोड़ा धैर्य रखें और जब उसका मित्र—मंडल चला जाए, तब एकांत में उस बच्चे को प्रेम से समझाएं, कि “बेटा आपने उस समय जो क्रिया की वो अच्छी नहीं थी, वो ठीक नहीं थी।” इस तरह से व्यवहार करना चाहिए। बच्चों से प्रेम से संवाद करेंगे, उनको प्यार से समझाएंगे, तो बच्चे आपके साथ जुड़े रहेंगे और आपकी बात को समझने की कोशिश करेंगे।

कई बार बच्चे प्रश्न उठाएंगे, “हम ऐसा क्यों करें, ऐसा क्यों न करें?” तो उनके प्रश्नों का पूरा उत्तर देना चाहिए, अच्छी तरह उनको, लॉजिक से, तर्क से उन्हें समझाना चाहिए, कि इस काम को करने से क्या लाभ है, और इस काम को करने से क्या हानि है। जिस काम को करने से हानियाँ हैं, वो उनको हानियाँ समझाएं, तब आप उनको गलत कामों से रोक पाएंगे। जो काम आप

बच्चों से करवाना चाहते हैं, 'उस काम को करने से क्या लाभ है,' वो उनको समझाएं। जब आप हानि-लाभ समझाएंगे, तो उनको अपने रास्ते पर लाना बहुत आसान होगा।

बहुत बार ऐसा देखा जाता है, कि माता-पिता बच्चों के प्रश्नों के उत्तर नहीं दे पाते। क्योंकि वो स्वयं भी ठीक तरह से जानते नहीं। जब वो उत्तर ठीक तरह से जानते नहीं अथवा जानते हुए भी उसको प्रस्तुत नहीं कर पाते, तो फिर वो बहानेबाजी करते हैं और बच्चों को डांट-फांट करते हैं कि "तुम नालायक हो, तुम चुप रहो, तुम्हे शर्म नहीं आती, तुम बाप से जबान लड़ाते हो," इस तरह से उन पर अपनी बात को थोपना लाभकारी नहीं होता। उसके परिणाम फिर आगे भविष्य में अच्छे नहीं निकलते।

बच्चे के कोमल मन में वो प्रश्न घूमता रहता है, जब तक उसको उत्तर नहीं मिलेगा, तब तक वो कहीं न कहीं इधर से उधर से उस प्रश्न का उत्तर खोजने की कोशिश करेगा। अगर आप उसको ठीक तरह से नहीं बताएंगे, नहीं समझाएंगे, तो वो गलत तरीकों से उसका उत्तर ढूँढ़ेगा, गलत लोगों की संगत में पड़ जाएगा। वहां से फिर वो बहुत सी गलत चीजें भी सीखेगा। इसलिए बच्चों पर नियंत्रण तो रखें, उनकी शिकायत भी सुनें, उनका प्रश्न भी सुनें, उनके प्रश्नों का उत्तर भी दें। यदि आप उत्तर नहीं दे पा रहे तो कोई बात नहीं, किसी और व्यक्ति से, जो उत्तर दे सकता हो, उससे बच्चों का संपर्क करवाएं। उनसे कहें "अच्छा बेटा तुम्हें बताएंगे, फिर बताएंगे, सोच-समझकर बताएंगे, विचार करके बताएंगे।"

कोई आपके संपर्क में विद्वान हो, तो उस विद्वान को अपने घर पर लाएं और बच्चे से उसका संपर्क करवाएं और फिर उससे कहें— "बेटा ये गुरुजी आए हैं, आप इनसे पूछो, जो आपके प्रश्न हैं, ये आपको उत्तर देंगे।" इस तरह या तो स्वयं उतनी जानकारी करके बच्चे के प्रश्नों का उत्तर दें, या फिर किसी विद्वान के द्वारा उसको उत्तर दिलवाएं। इस तरह से यदि हम बच्चों के प्रश्नों का उत्तर देंगे, तो मैं समझता हूँ कि हम उनको ज्यादा अच्छा विकसित कर पाएंगे और उनको भटकने से बचा पाएंगे।

कभी-कभी बच्चे बहुत सी ऐसी फरमाइशें भी कर लेते हैं, जो माता-पिता के आर्थिक-सामर्थ्य से बाहर की होती हैं। उनका सामर्थ्य इतना नहीं होता,

कि वो सारी फरमाइशों को पूरा कर सकें। ऐसी स्थिति में भी बच्चों को प्रेम से समझाना चाहिए, ढंग से उसको बताना चाहिए। उसको ऐसा महसूस न हो, कि हम कंगले माता-पिता की संतान हैं, हम तो गरीब हैं, हम तो कुछ कर नहीं सकते, हम कोई इच्छा पूरी कर नहीं सकते, हम कोई अच्छी ऊँची वस्तु खरीद नहीं सकते। उनको बुद्धिमत्ता से, प्रेम से, अपनी आर्थिक स्थिति भी बताते रहें।

बच्चों के साथ रोज ही बैठना चाहिए, कुछ समय तो बैठना ही चाहिए। कभी-कभी उनके साथ टेबिल टेनिस खेलना, कैरम बोर्ड, चेस आदि गेम्स भी खेलना चाहिए। ऐसा इसलिए, क्योंकि खेल-खेल में आप अपनी परिस्थिति उनको अच्छी तरह से बता सकते हैं, समझा सकते हैं। अपनी आर्थिक स्थिति का परिचय भी करा सकते हैं कि हमारी आर्थिक स्थिति इस तरह से है, हमारे व्यापार में इस समय थोड़ा लाभ हो रहा है या हानि हो रही है। जैसी भी परिस्थिति है, आप बच्चे को उसका पूरा परिचय दे सकते हैं। जब बच्चे के दिमाग में ये बात होती है कि हमारी आर्थिक स्थिति इस तरह की है, तो फिर उसके मन पर इस प्रकार से प्रभाव पड़ता है, वो ज्यादा ऊँची वस्तु खरीदने की बात सोचता भी नहीं। वो अपने माता-पिता की आर्थिक स्थिति को ध्यान में रखकर ही अपनी इच्छाएं उत्पन्न करता है। वो समझने लगता है कि हम ये-ये चीज खरीद सकते हैं, इससे ऊँची नहीं खरीद सकते। बच्चे के दिमाग में इस तरह की सोच बैठा देना, एक बहुत बड़ा अनुशासन है। इससे बच्चे का बहुत अच्छा विकास होता है और उसके बिगड़ने या भटकने की संभावना कम हो जाती है।

इस तरह से माता-पिता को बच्चों के साथ संवाद रखना चाहिए, प्रेम-भाव रखना चाहिए, अपनी बातें, अपनी परिस्थिति उसको समझाते रहना चाहिए, जिससे कि बच्चा अनुचित इच्छाएं न करे, अनुचित डिमांड न करे, कि “मुझे फलानी घड़ी दिलाओ, मुझे पांच हजार की घड़ी दिलाओ, मुझे पचास हजार का फोन दिलाओ,” इस तरह की इच्छाएं वो करेगा ही नहीं। बच्चों की जो आवश्यक इच्छाएं होती हैं, वो पूरी भी करनी चाहिए। छुट्टियों में उनको हिल स्टेशन पर, हरिद्वार, देहरादून, कुल्लू, मनाली, मसूरी जहां भी आस-पास आपको अनुकूलता हो, घुमाने ले गए। इस तरह की बहुत सी इच्छाएं पूरी भी करनी चाहिए। हां, इतना जरूर ध्यान रखें, कि ऐसी इच्छाएं जो फैशन की

सीमा का अतिक्रमण करती हों, उन पर नियंत्रण रखना आवश्यक है। मान लो, आपके बच्चे—बेटा—बेटी, ऐसा कहें, “हम तो इस तरह की ड्रेस पहनेंगे”। और उसमें नंगापन दिखता हो, तो उस तरह का तो नियंत्रण रखना आवश्यक है। उनको ये बताएं, कि “बेटा! इस तरह की ड्रेस नहीं पहननी चाहिए, ये हमारी पारिवारिक परंपरा के अनुकूल नहीं है, हमारी देश की सभ्यता के अनुकूल नहीं हैं। यहां हम इस तरह की ड्रेस नहीं पहनते। जो लोग पहनते हैं उसको हानि भी उठानी पड़ती है और इसलिए हम उनकी नकल, उनका अंधानुकरण नहीं कर सकते।”

प्रश्न : क्या कॉलेज के स्तर पर आ गए बच्चों को पढ़ाई के लिए हजारों किलोमीटर दूर हॉस्टल में भेजना उचित है? यदि उचित है, तो उसमें क्या-क्या सावधानी रखनी चाहिए?

उत्तर : आजकल की परिस्थितियां ऐसी हैं कि उच्च शिक्षा के लिए अथवा अपनी मनपसंद शिक्षा प्राप्ति के लिए बच्चों को अनेक बार हॉस्टल में भेजना पड़ता है। पहले कोशिश तो ये की जाए, कि उनको अपने घर पर रखकर ही पढ़ाएं। अपने घर के आसपास ही कहीं कॉलेज में एडमिशन मिल जाए, तो बहुत अच्छा है। बेटा—बेटी आपकी नजर में रहेंगे, आपकी देखरेख में रहेंगे, अनुशासन में रहेंगे। ऐसा होने पर आप उनकी सुरक्षा भी ठीक तरह से कर पाएंगे। इसके विपरीत अनेक बार ऐसा नहीं हो पाता, कि पास में कहीं स्कूल—कॉलेज में या उच्च कॉलेज में एडमिशन मिले। इसी तरह कभी मेडीकल या इंजीनियरिंग में जाना हो, तो दूर स्थानों पर ही एडमिशन मिलता है।

उत्तम भविष्य बनाने के लिए, शैक्षणिक उच्च योग्यता प्राप्त करने के लिए हॉस्टल में भेजना पड़ता है। लेकिन हॉस्टल में भेज देना, किसी घर से दूर वाले कॉलेजों में एडमिशन दिला देना, माता—पिता का केवल इतना ही कर्तव्य नहीं है। ध्यान यह भी रखा जाए, कि कॉलेज और हॉस्टल का वातावरण अच्छा हो, बच्चों की सुरक्षा भी रहे, देखरेख भी ठीक रहे और उनकी पढ़ाई भी अच्छी हो और वास्तविक उन्नति हो, योग्यता बढ़े, इसके लिए माता—पिता को और भी बहुत से प्रबंध करने चाहिए। बहुत सी सावधानियां भी बरतनी चाहिए। उदाहरण के लिए हॉस्टल में अनेक बार नए विद्यार्थी आते हैं, तो पुराने विद्यार्थी उनकी रैगिंग करते हैं। रैगिंग की गलत परंपरा बहुत वर्षों से चली आ रही है।

पिछले वर्षों में इस पर नियंत्रण करने की भी कोशिश की गई और उसमें काफी कुछ सफलता भी मिली है, फिर भी, कभी-कभार ऐसी घटनाएं होती रहती हैं, जिनका नियंत्रण और भी अधिक आवश्यक है। इसलिए माता-पिता जब अपने बच्चों को हॉस्टल भेजें तो पहले से उनको मानसिक स्तर पर तैयार करें, बेटा ये संसार है, यहां पर बहुत ऊँचा-नीचा भी चलता है, पर घबराने की बात नहीं है, हमें इसी संसार में रहना है, इसी में हमको अपनी उन्नति करनी है, पढ़ाई-लिखाई करनी है, अच्छा ऊँचा स्तर बनाना है, योग्यता बनानी है, अपनी सुरक्षा भी रखनी है। इस तरह से उनको मानसिक रूप से तैयार करें कि कॉलेज में, हॉस्टल में जब आप जाओगे, तो कुछ सीनियर विद्यार्थी आपके साथ रैगिंग जैसा भी कुछ करेंगे, तो उसको मजाक के तौर पर लेना चाहिए, खेल-खेल में उन बातों को निपटा देना चाहिए, उसमें अपना अपमान आदि नहीं समझना चाहिए, उससे दुःखी नहीं होना चाहिए, यद्यपि ये गलत परंपरा है, फिर भी हम इसके निवारण के लिए, प्रयास कर रहे हैं और भी आगे प्रयास करेंगे, कॉलेज प्रशासन से और हॉस्टल प्रशासन से भी कहेंगे कि भई इसको रोका जाए, पुलिस प्रशासन से भी कहेंगे वो इसके लिए कड़े कदम उठाएं, परंतु जो वर्तमान में परिस्थिति है, रहना तो इसी में है। इस प्रकार से उसकी मानसिक तैयारी कराके फिर उसको हॉस्टल भेजें। ऐसे जो आपके बेटा-बेटी मानसिक स्तर से, तैयार होंगे तो जब रैगिंग वाली परिस्थिति सामने आएगी, तो इतना घबराएंगे नहीं, और वो आसानी से उसको पार कर जाएंगे।

दूसरी-बात ये है कि, जब बेटा-बेटी को आप हॉस्टल छोड़ के आएँ, उनकी सारी आवश्यक व्यवस्था कराके आएँ, माता-पिता यह देखकर आएँ कि खाना-पीना-रहना आदि सब कैसा है, और वहां की व्यवस्था-प्रबंध कैसा है। फिर भी बच्चों को ऐसा लगता है, कि हम अब घर से दूर हैं, अकेले हैं, यहां कोई हमारा साथी नहीं है, तो कुछ उनको अकेलापन जैसा लग सकता है। इस स्थिति के निवारण के लिए, माता-पिता और उसके मित्र, दोस्त, चाचा, मामा, ताऊ, रिश्तेदार आदि जो भी उससे प्रेम रखते हैं, संबंधी-रिश्तेदार उसको बार-बार पत्र लिखें और पत्र से उसका उत्साह बढ़ाएं, एस.एम.एस. करें, फोन करें, बार-बार उसकी हिम्मत बढ़ाएं कि घबराओ मत हम आपके साथ हैं। बीच-बीच में अच्छा लंबा पत्र लिखें अथवा उससे अच्छी-अच्छी बातचीत करें, टेलीफोन से बात करें, एस.एम.एस. भी बीच-बीच में उत्साह बढ़ाने के

लिए भेजते रहें। इससे उसे लगेगा कि यहां मैं अकेला नहीं हूं, मेरे साथ और लोग भी हैं, सब मेरा ध्यान रख रहे हैं। इससे उसको अकेलापन नहीं खलेगा और उसका मन पढ़ाई में लगेगा। वो ठीक तरह से अपनी उन्नति कर पाएगा।

एक उपाय ये भी करना चाहिए कि जिस इलाके के हॉस्टल में बच्चा पढ़ने के लिए गया है, उसके आसपास उसका कोई अभिभावक—गार्जियन हो। कोई लोकल—गार्जियन भी आजकल हॉस्टल में होना आवश्यक है। मतलब, उसके आसपास चाचा, मामा, कोई दोस्त, मित्र संबंधी जो अच्छी तरह बच्चे से परिचित हो, बच्चा उससे अच्छी तरह परिचित हो। वो यदि हॉस्टल के आसपास रहता हो, तो और अधिक अच्छा है। ऐसी स्थिति में इतवार को, जब छुट्टी होती है, तो सप्ताह में एक दिन आपका बेटा—बेटी उस स्थानीय—अभिभावक अर्थात् लोकल—गार्जियन के घर चला जाए, वहां जाके कुछ दो—चार घंटा बिताए, कुछ गपशप मारे, कुछ खाना—पीना भी करे और उस गार्जियन के अपने बच्चे भी उसकी उम्र के हों, कॉलेज के स्तर के हों, तो और भी अच्छा है। वो आपस में घुलमिल कर बात करें, तो बच्चे का मन ठीक—प्रसन्न रहेगा, उत्साहित रहेगा और वो अकेलापन भी महसूस नहीं करेगा। इस तरह उसकी पढ़ाई आदि भी सब अच्छी चलेगी। माता—पिता को इस—इस तरीके से प्रयत्न करना चाहिए और उत्साह बढ़ाते रहना चाहिए।

जब बेटे को आप हॉस्टल भेजें तो ऐसा भी करें कि उसका पहले से मानसिक स्तर ऐसा बनाएं कि वो दूसरे लोगों में, अपने से सीनियर लोगों में, धनवान विद्यार्थियों में अपने को छोटा महसूस न करे, अर्थात् उसमें हीन—भावना न आए। इस तरह की भी तैयारी बच्चे की करवाकर भेजें। बेटे को, बेटी को हमेशा ऐसा समझाएं, ऐसी उसको प्रेरणा दें, कि धन से कोई बड़ा नहीं होता, जो प्रतिभाशाली लोग होते हैं, वे कुछ ही दिनों में धन प्राप्त कर लेते हैं। जो प्रतिभाहीन व्यक्ति होते हैं, उनके पास धन अधिक समय तक टिकता नहीं, और जो प्रतिभाशाली होते हैं, वो अधिक समय तक धन से हीन नहीं रहते। उनसे ये भी कहें कि यदि तुम्हारे हॉस्टल में, कॉलेज में कोई ऐसे विद्यार्थी हों, जो धनवान परिवारों से आए हों, तो उनके सामने कोई हीनभावना से ग्रस्त होने की आवश्यकता नहीं है। आप उनकी चिंता न करें, अपनी प्रतिभा पर विश्वास रखें, अपनी योग्यता को बढ़ाएं, कुछ ही दिनों में जब आपकी योग्यता निखर कर आएगी, तो आप भी धनवान हो जाएंगे, खूब धन कमा लेंगे, उसकी कोई चिंता नहीं है।

इतिहास बताता है, वर्तमान में भी हम देखते हैं कि जो-जो लोग ऊँचे पदों पर पहुँचे उनमें अधिकांश लोग सामान्य परिवारों से रहे हैं। उनमें से ही कोई राष्ट्रपति बन गया, कोई कलेक्टर बन गया, कोई डी.एस.पी. बन गया, कोई उच्च अधिकारी बन गया, कोई प्रधानमंत्री बन गया। लाल बहादुर शास्त्री, अब्राहम लिंकन आदि जैसे बहुत से उदाहरण मिलते हैं। ये प्रतिभाशाली लोग थे, ये भले ही कम धनवान परिवारों से थे, निर्धन परिवारों से थे, परंतु अपनी विशेष योग्यता के कारण, प्रतिभा के कारण ये उच्च स्तरों को प्राप्त हुए। तो ऐसे-ऐसे उदाहरण देकर बच्चे का उत्साह बढ़ाना चाहिए और उसको मानसिक रूप से तैयार करके भेजना चाहिए।

फिर जीवन में संघर्ष तो आते ही हैं। जब आपका बेटा-बेटी इन वास्तविकताओं से कॉलेज में, हॉस्टल में, परिचित होगा तो स्वयं देखेगा कि मेरे सामने एक तरफ इतनी सारी पुस्तकें हैं, चार्ट हैं, आंकड़ें हैं, सिद्धांत है, नियम है और दूसरी तरफ ये नया हॉस्टल है, नया कॉलेज है, नई आजादी है, नये दोस्त हैं, नई जगह है। तो इन सब बातों में उसको तालमेल बैठाना होगा। वो स्वयं इतना समर्थ हो, इतना आत्मविश्वासी हो, कि इन सब चीजों में तालमेल बैठाकर अपनी अच्छी योग्यता विकसित कर सके, एक अच्छी विशेषज्ञता प्राप्त कर सके। इस तरह उसका उत्साह बढ़ाना माता-पिता के लिए, परिवारजनों के लिए बहुत आवश्यक है।

इस तरह की तैयारी करवाकर बीच-बीच में उससे मिलते रहें, पूछते रहें, आदि-आदि। बीच-बीच में फोन से भी चर्चा करते रहें। ऐसे अगर देखभाल की जाए, तो मैं समझता हूँ कि वो अच्छी योग्यता बना लेगा और वो हॉस्टल की परीक्षा में भी, कॉलेज की परीक्षा में भी बहुत अच्छी तरह से पास हो जाएगा और उसे जीवन की सच्चाई की अच्छी समझ आएगी। वह समझने लगेगा कि जीवन क्या है, इस दुनिया में आजकल क्या चल रहा है, और मुझे कैसे जीना है, संघर्षों से, परेशानियों से मुझे कैसे टकराना है, इनको कैसे पार करना है। इस प्रकार से उनका आत्मविश्वास बढ़ेगा और वह एक अच्छा योग्य नागरिक बनकर तैयार होगा। इन बातों को माता-पिता को खासतौर पर ध्यान रखना चाहिए।

प्रश्न : गृहस्थ में कभी-कभी पिता-पुत्र में ठन जाती है, आपस में टकराव होता है। वह कई वर्षों तक चलता है। आगे भविष्य में इसके परिणाम

अच्छे नहीं होते। परिवार टूट जाता है। पिता पुत्र में स्थायी विरोध हो जाता है। इससे बुढ़ापे में पिता दुःखी होते हैं। इसका क्या समाधान है?

उत्तर : पिता—पुत्र में क्यों ठनती है? इसका एक मुख्य कारण तो यह है कि, दोनों के अंदर अपना—अपना अहम—भाव होता है। ये स्वभाविक भी है। जो भी व्यक्ति मनुष्य है, उसके अंदर कुछ न कुछ तो अपना स्वाभिमान तो होता ही है। जब पिता—पुत्र दोनों अपने अभिमान पर अड़ जाते हैं, तो संबंधों में टकराव होता है, जिससे टूट—फूट की बात आती है, और परिवार का भविष्य बिगड़ता है।

अनेक बार पिता ये समझते हैं, कि बच्चे तो हमारी संपत्ति हैं, हम जैसा चाहें, इनको तो वैसा ही करना चाहिए। वे मन में ऐसी इच्छा रखते हैं लेकिन वे यह भूल जाते हैं कि बच्चे भी अपने अलग—अलग संस्कार लेकर आए हैं। यह तो कोई आवश्यक नहीं कि माता—पिता के और बच्चों के संस्कार एक जैसे हों, उनमें आपस में अनेक बार टकराव भी होता है।

हर व्यक्ति के अपने पूर्व जन्मों के संस्कार होते हैं, जो अलग—अलग होते हैं। संसार में कहीं भी दो व्यक्ति ऐसे नहीं दिखाई देते, जिनके विचार सौ प्रतिशत एक जैसे हों। उनमें कुछ न कुछ 15, 20 प्रतिशत, 30 प्रतिशत कहीं न कहीं अंतर तो होता ही है। अब जब, हरेक व्यक्ति अपने—अपने संस्कार लेकर आया है, तो साफ सी बात है कि, वो अपने संस्कारों से जिएगा। जब बच्चा अपने जन्मजात संस्कारों से जीता है, तब यदि पिता उस पर अपने संस्कार, अपने विचार थोपने लगे, तो निश्चित ही टकराव होगा। ऐसी स्थिति में पिता को सावधान रहना चाहिए कि, जैसे मेरा अपना स्वाभिमान है, ऐसे ही बच्चे का भी अपना स्वाभिमान है। अपने विचारों के पालन की या मेरे विचारों की रक्षा करने की जैसे मुझे चिंता रहती है, वैसे ही मेरे बच्चे के भी अपने विचार हैं, संस्कार हैं। वो भी अपने विचारों की, संस्कारों की रक्षा करना चाहता है, अपनी इच्छा से जीना चाहता है।

इस स्थिति में पिता को बड़प्पन के साथ, सहनशक्ति भी रखनी चाहिए। कभी—कभी ऐसा भी होता है कि, कुछ बच्चे माता—पिता अनाथालय से गोद लेते हैं। तो वहां पर यदि बच्चे के पालन में, विकास में यदि पूरा ध्यान न रखा जाए और उसके विकास के लिए पूरी सावधानी न बरती जाए, तो उन बच्चों

में और उस पिता में भी टकराव हो जाता है। फिर लोग ये समझते हैं कि 'ये देखो किसी और की संतान है, अपने संस्कार ले कर आई है, इसका हमारे साथ तालमेल नहीं बैठता।' वो तो एक अलग बात है। वो भी हो सकता है, कि उस बच्चे के अपने संस्कार इस माता-पिता से भिन्न हों। परंतु ये भी एक बहुत बड़ा कारण रहता है कि, माता-पिता को बालक का विकास करना, उसकी देखभाल करना, ठीक प्रकार से नहीं आता। वो जाने-अनजाने बहुत सी गलतियां कर जाते हैं, जिसके कारण फिर उनमें आपस में टकराव होता है। इसलिए माता-पिता को बहुत सावधान रहना चाहिए, बच्चों के विकास में, जो-जो सावधानियां रखनी चाहिए, वो पूरी सावधानी रखें।

पिता यदि ये समझता हो कि ये मेरा बेटा, मेरी संपत्ति है, तो ऐसा सोचना ठीक नहीं है। क्योंकि वो कोई जड़-निर्जीव वस्तु नहीं है, आपके सौ प्रतिशत विचार वो स्वीकार नहीं करेगा। इसीलिए उसमें टकराव की स्थिति पैदा न हो, बच्चे की भी इच्छाओं का ध्यान रखना चाहिए और जब आपस में ऐसा ध्यान नहीं रखा जाता, तब अनेक बार ऐसा भी देखा जाता है कि, जब बच्चे के कोई मित्र उसके घर पर आते हैं, अथवा उसके माता-पिता के कोई रिश्तेदार आते हैं, बच्चे का चाचा, मामा, भतीजा आते हैं, तो कभी-कभी माता-पिता ये भूल करते हैं, उन रिश्तेदारों के सामने ही बच्चे का खंडन करते हैं, बच्चे की बातों का विरोध करते हैं, बच्चे को डांट-फटकार भी करते हैं, और उसको ठीक प्रकार से प्रस्तुत नहीं करते। इससे बच्चे को अपमान महसूस होता है, और इसके कारण भी फिर बच्चे की माता-पिता से ठन जाती है, उनमें टकराव पैदा होता है। माता-पिता को यहां पर यह सावधानी रखनी चाहिए कि जब कभी मान लो कि बच्चा उनकी इच्छा के विपरीत कोई कार्य कर रहा है और घर में कोई अतिथि आए हुए हैं, अथवा बच्चे के दोस्त आए हुए हैं, तो उस समय वो बच्चे को न डांटे, उस समय उसको प्रताड़ित न करें, अपमानित न करें। अपमान करने से आगे हानि होती है, संबंध बिगड़ते हैं, और फिर आगे टकराव बढ़ता है। उस समय तो थोड़ी देर जैसे-तैसे उसको चुपचाप निपटा दें, उस घटना को टाल दें। जब अतिथि लोग चले जाएं, बच्चे के मित्र भी चले जाएं, बाद में उसको समझाएं, जिससे कि बच्चा गलत रास्ता न अपनाए, उसको ये भ्रांति भी न हो, कि मैंने जो किया, ठीक किया। अगर उसकी गलती थी, तो बाद में उसको माता-पिता समझाएं, प्रेम से बताएं। अगर कभी माता-पिता के

व्यवहार में कोई कमी है, जिसके कारण बच्चे में कुंठा उत्पन्न होती है, द्वेष उत्पन्न होता है, अपने माता-पिता के प्रति, या खासतौर से पिता के प्रति, तो कभी-कभी वो अपने विचार व्यक्त भी करता है। पिता के सामने, जब वह अपने विचार व्यक्त करता है, तो पिता उसको कभी-कभी डांट देते हैं, और उसको चुप करा देते हैं और कहते हैं तेरा दिमाग खराब है, तू चुप रह, फालतू जबान लड़ाता है। तो ऐसी स्थिति में फिर बच्चे के अंदर उद्वेग उत्पन्न होता है, विरोध उत्पन्न होता है। ऐसा नहीं करना चाहिए।

बच्चे के मन में जो कुछ है, उसको बाहर आने दीजिए, उसको खोलने दीजिए। अपने घर में पिता से, माता से या पारिवारिक परिस्थितियों से उसको क्या शिकायत है, उसकी क्या समस्या है, उसको अच्छी तरह खुल कर बोलने दें। उसको इतना हल्का न समझें। यदि पिता वहां सावधानी से काम करें और बच्चे की उस बात पर ध्यान दें, उसको सुनें, उस पर विचार करें और उसकी बात उचित हो, तो उसको स्वीकार करें और उस गलती को दूर करें, जो परिवार में चल रही है।

चाहे पिता की ओर से हो, माता की ओर से या किसी रिश्तेदार की ओर से हो या बच्चे की अपनी ओर से कोई समस्या हो, यदि उसका समाधान उचित प्रकार से माता-पिता कर दें, तो बच्चों में ये जो टकराव की स्थिति है, ये पैदा नहीं होगी। माता-पिता को ये समझना चाहिए कि बच्चा जड़ वस्तु नहीं है, चेतन है, अपने पारिवारिक भविष्य का आधार तो बच्चा ही है, बेटा-बेटी ही है, तो उनसे टकराव करना ठीक नहीं है। इसलिए एक अच्छे माता-पिता, परिपक्व माता-पिता होने के नाते उनको इस बात का पूरा ध्यान देना चाहिए, बच्चों की भावनाओं का आदर करना चाहिए, उनकी उचित बातें माननी चाहिए। हां, अनुचित बातें नहीं माननी चाहिए। उनको समझा देना चाहिए कि “ये आपका व्यवहार ठीक नहीं, आपकी ये इच्छा उचित नहीं है, इसमें ये कमी है, अथवा ये दोष है इसलिए हम आपकी ये इच्छा पूरी नहीं कर सकते।” इस प्रकार से माता-पिता को सावधानी से काम करना चाहिए।

कभी-कभी माता-पिता, बच्चों को एक साधन बनाकर उपयोग करते हैं, अर्थात् मान लीजिए घर में कोई दूसरा व्यक्ति-व्यापारी आ रहा है पैसे लेने और पिताजी के पास पैसे हैं नहीं। और वो दे नहीं पा रहे या दे नहीं सकते आज। तो कभी-कभी वो अपने बच्चों को झूठ बोलने के लिए मजबूर करते हैं,

कि बाहर जो व्यक्ति आया है, उसको जाकर बोल आओ, कि “पिताजी घर पर नहीं है,” इस प्रकार भी कभी-कभी देखा जाता है।

इस तरह से बच्चे के अंदर एक विचित्र भावना उत्पन्न होती है कि मेरा शोषण किया जा रहा है, मुझे दबाया जा रहा है, झूठ बोलने को मजबूर किया जा रहा है और ये स्थिति उसको स्वीकार्य नहीं होती। पिता को ऐसा भी नहीं करना चाहिए कि वो बच्चे से झूठ बुलवाएं। कभी बच्चे की तुलना अपने पड़ोसी लोगों से करें, या पड़ोसियों के बच्चों से करें या मित्रों के बच्चों से करें और उसको बार-बार डांटते रहें कि “देखो वो फलाने का बेटा तो कितना अच्छा है, और तुम कुछ भी नहीं करते। वो कितना विकास कर गया और तुम इतने फिसड़डी हो, इतने पीछे रह गए।” तो इस तरह की बातें कहकर बच्चे के मन पर कोई अपराध की भावना या कोई लघुता ग्रंथी की भावना उत्पन्न नहीं करनी चाहिए।

बच्चे का अपना शक्ति-सामर्थ्य है, अपनी क्षमता है, उसको उसके हिसाब से चलने देना चाहिए। हर व्यक्ति अपनी क्षमता से ही चल रहा है। इसलिए उसका जैसा सामर्थ्य है, उसको उसके अनुसार प्रोत्साहन देना चाहिए। बार-बार डांटना, झिड़कना अच्छा नहीं है, इससे उसके मन में लघुता ग्रंथी उत्पन्न हो सकती है और वो पिता के विरुद्ध हो सकता है। उसके मन में ये गांठ हो सकती है कि ये हमेशा डांटते ही रहते हैं और कुछ नहीं करते। इस प्रकार से सावधानी से चलना चाहिए।

परिवार में सभी लोगों का अपना-अपना अस्तित्व है, सभी लोग एक-दूसरे के पूरक हैं। आज यदि हम बुद्धिमत्ता से बच्चे का विकास करेंगे, तो कल यही बच्चा बड़ा होकर अपने माता-पिता को संभालेगा, उनके बुढ़ापे का सहारा बनेगा। आपस में टकराव न हो, इस सावधानी का प्रयोग करें, तो हम बहुत कुछ टकराव से बच सकते हैं, समस्याओं को टाल सकते हैं।

प्रश्न : कभी-कभी 15 से 18 साल तक के युवा, किशोर प्रेम प्रसंग में फंस जाते हैं। ऐसी स्थिति में उनको कैसे बचाया जाए, जिससे वो कोई गलत कदम न उठाएं, अपना भविष्य न बिगाड़ लें?

उत्तर : वास्तव में यह प्रश्न बहुत महत्वपूर्ण है। आज की परिस्थितियों में तो यह और भी अधिक विकट प्रश्न है। प्राचीन काल में बच्चे माता-पिता के

पास घर पर ही नहीं रहते थे। वे शिक्षार्जन के लिए गुरुकुलों में रहते थे। गुरुकुलों में सहशिक्षा थी नहीं। लड़कों के गुरुकुल अलग होते थे, लड़कियों के गुरुकुल अलग होते थे। उनमें आपस में लगभग 10 किलोमीटर की दूरी होती थी। इसलिए इस तरह की कोई समस्याएं पैदा ही नहीं होती थीं। न लड़के, लड़कियों के गुरुकुल में जाते थे। न लड़कियां, लड़कों के गुरुकुल में जाती थीं। अतएव वे परस्पर आकर्षण जैसी समस्या से बचे रहते थे। आज बदले परिवेश में ऐसी स्थिति नहीं है। आज तो सब बच्चे गुरुकुलों में नहीं जाते, बल्कि माता-पिता के पास ही घरों में रहते हैं, स्कूलों में पढ़ते हैं, कॉलेजों में पढ़ते हैं। प्रायः बहुत से स्कूल, कॉलेजों में सहशिक्षा, कोएजुकेशन चलती है, जो इस समस्या का बहुत बड़ा कारण है।

दरअसल, यह उम्र होती ही ऐसी है, कि युवकों में किशोरों में लड़का-लड़की के प्रति आकर्षण की भावनाएं उभरती हैं, प्रेम की तरंगें जागती हैं, और उस उम्र में उन्हें ज्ञान ठीक से होता नहीं, कि प्रेम क्या है, विवाह क्या है, उसकी जिम्मेदारियां क्या हैं। इस अज्ञान की स्थिति में वे प्रेम-प्रसंग में फंस जाते हैं।

प्रश्न है कि वर्तमान स्थिति में माता-पिता को क्या करना चाहिए। ऐसी समस्याओं से बच्चों को बचाने के लिए, कुछ अच्छे संस्कार देने चाहिए। बच्चों को अपने भारतीय वैदिक संस्कार दिए जाएं। उनका 24 घंटे का टाइम-टेबल बनाया जाए। रात को 9 बजे, 10 बजे सो जाएं, सुबह 4 बजे, 5 बजे उठ जाएं। फिर अपना नहाना-धोना करें, व्यायाम करें, स्नान करें, फिर ईश्वर का ध्यान करें, गायत्री मंत्र का पाठ करें, फिर हवन करें। कुछ अच्छी पुस्तकों का, धार्मिक पुस्तकों का स्वाध्याय करें, देश-भक्ति की पुस्तकों का स्वाध्याय करें, महापुरुषों-वीरों के जीवन-चरित्र, इतिहास को पढ़ें। नियमित स्कूल भी जाएं, पढ़ाई भी करें, खाना-पीना भी करें। अपनी-अपनी अनुकूलता के हिसाब से माता-पिता को देख लेना चाहिए कि बच्चे के स्कूल का टाइम क्या है, कितने बजे स्कूल जाता है, कितने बजे लौटकर आता है, कितने बजे उसके पास खाली समय होता है, कितने बजे द्यूशन जाता है आदि-आदि। आजकल माता-पिता द्यूशन पर बहुत जोर लगाते हैं, पढ़ाई पर बहुत जोर लगाते हैं। आठ-आठ घंटे, दस-दस घंटे बच्चे को पढ़ने के लिए कहते हैं। बच्चे भी कैरियर बनाने के चक्कर में ठीक प्रकार से खेल-कूद भी नहीं पाते। वे खेल-कूद के अलावा दूसरी एक्टिविटीस भी नहीं कर पाते। बस पढ़ाई में ही

लगे रहते हैं। इससे एक तो उनका शारीरिक विकास ठीक से नहीं होता, दूसरे मानसिक—बौद्धिक विकास भी संतुलित नहीं होता। इससे चारित्रिक—विकास भी बाधित होता है। जिसकी वजह से समस्या उत्पन्न होती है।

अच्छे लोगों के साथ बैठना, अच्छे दोस्तों से संगति रखना, खान—पान शुद्ध रखना, सात्विक भोजन खाना, अण्डे—मांस नहीं खाना, कोई गुटका, पान मसाला, तंबाकू, शराब, भांग आदि—आदि नशीली चीजों से बचकर रहना, गंदे उपन्यास से बच कर रहना, गंदी फिल्मों से बचकर रहना आदि—आदि उपायों को माता—पिता को अपनाने चाहिए। उनकी ये जिम्मेदारी बनती है, कि वो बच्चों का विकास अच्छी तरह से करें, उनकी देखरेख करें, उनके लिए समय निकालें। पुराने समय में बच्चे गुरुकुल चले जाते थे, तो उनकी जिम्मेदारी गुरुजनों पर होती थी, अब तो माता—पिता बच्चों को गुरुकुल भेजते नहीं, इसलिए बच्चों की सुरक्षा, भविष्य, चरित्र आदि के विकास की सारी जिम्मेदारी अब माता—पिता पर आती है।

माता—पिता बच्चों से अच्छा तालमेल रखें, उनसे खुलकर बातचीत करें, उनके साथ किन्हीं समसामयिक प्रासंगिक विषयों पर चर्चा भी करें। देश की वर्तमान समस्याएं क्या हैं, क्या वो भविष्य में डॉक्टर बनना चाहते हैं, इंजीनियर बनना चाहते हैं या कोई राजनीतिक समस्याएं हैं, उस पर भी थोड़ी बहुत चर्चा करें।

समय—समय पर उनके विचार जानें और उनकी देखभाल भी करें, कि हमारे बच्चे कहां जाते हैं, कब जाते हैं, किसके साथ बैठते हैं, क्या खाते हैं, कैसी बातें करते हैं, वो पढ़ते हैं या कम्प्यूटर पर बैठे रहते हैं, इंटरनेट पर समय नष्ट करते हैं, वो अच्छी चीज देखते हैं, या खराब चीज देखते हैं। ये सारी जाँच—पड़ताल माता—पिता को करनी चाहिए।

बच्चों के साथ दोस्ती जैसा व्यवहार रखना चाहिए ताकि बच्चे अपने मन की बात खुलकर बता सकें। किसी पंद्रह—सोलह, अठारह साल के बच्चे के मन में किसी लड़की के प्रति आकर्षण होता है या किसी लड़की के मन में लड़के के प्रति आकर्षण होता है, तो वो अपनी माँ से, अपने पिता से खुलकर बात कर सकें, मन में न रखें। ऐसा इसलिए, क्योंकि उस समय उनको प्रेम का पूरा पता नहीं होता है। केवल शारीरिक आकर्षण, सुंदरता का आकर्षण या किसी के धन का आकर्षण देखकर प्रायः ऐसे किशोर अवस्था के लोग, ये मान

लेते हैं, कि मुझे उससे प्रेम हो गया है, या मैं उसके प्यार में हूँ। तो ये उनकी भ्रांति है, प्रेम ऐसा नहीं होता है। प्रेम होता है, व्यक्ति के विशेष गुणों के कारण। और वो विशेष गुणों के कारण जो प्रेम करने वाली बात है, वो अपनी पढ़ाई पूरी हो जाए, उसके बाद करनी चाहिए, उससे पहले नहीं। इसीलिए हमारे शास्त्रों में ये विधान था कि, पहले पढ़ाई पूरी हो जाए, उसके बाद शादी की सोचेंगे।

खैर, आज की परिस्थितियों में हम अधिकतम ये कर सकते हैं, कि बच्चों पर सावधानी से दृष्टि रखें, उन्हें ऐसी बातें बीच-बीच में बताते रहें, रोज संस्कार देते रहें कि “बेटा ऐसा कोई काम मत कर देना, जिससे हमें सर नीचा करना पड़े, समाज के सामने, हमारी आंखें झुक जाएं, हम किसी से नजर न मिला सकें। और बाद में ऐसा भी न हो कि तुम्हें भी पछताना पड़े कि तुमने कोई जल्दबाजी में कोई गलत निर्णय ले लिया। ऐसा कोई काम मत कर देना।” ऐसे उनसे खुलकर बात करें, उनको बीच-बीच में बताते रहें, समझाते रहें कि लड़कियों से बच कर रहना चाहिए। तात्कालिक सुंदरता का आकर्षण, कोई प्रेम नहीं है। ये उम्र के हिसाब से आकर्षण होता है, इस पर अधिक ध्यान नहीं देना चाहिए। अपनी पढ़ाई पर ध्यान दो। अपने महापुरुषों के जीवन के आचरण का अनुकरण करो, श्रीराम, श्रीकृष्ण और श्रीलक्ष्मण आदि ने कैसे-कैसे अच्छे-अच्छे आचरण किए, उनका अनुकरण करना चाहिए।

अब वो कहेंगे कि “जमाना तो कहां जा रहा है, और आप कैसी बातें करते हैं।” उनको उनके इस तरह के प्रश्नों का उत्तर दें, समझा करके तर्क से, बुद्धि से, प्रमाण से, कि “बेटा जमाना श्रीराम और श्री कृष्ण के जीवन से विरुद्ध आचरण कर रहा है, तो उसके परिणाम भी तो भोग रहा है।” विदेशों की स्थिति देखिए, कितनी खराब है, वहां पर चरित्र का कोई नाम ही नहीं है। दस-बारह साल के बच्चे भी भ्रष्टाचार करते हैं, माता-पिता उनको रोकते नहीं, रोक भी नहीं सकते, सरकार के कानून भी ऐसे हैं। वो भी छूट दे देती है भाई, तुम जो मर्जी करो। तो ये जो जमाना चल रहा है, जो अधाधुंध भोगवाद की तरफ बढ़ रहा है, ये सुखदायक नहीं है, इसके परिणाम अच्छे नहीं हैं।

विदेशों में शादियां बहुत होती हैं, और कुछ ही दिनों में तलाक होता है। एक-एक व्यक्ति 8-8, 10-10 शादी करता है, तो बच्चों को पता ही नहीं रहता, कि हमारे असली माता-पिता कौन हैं। आज हम किसके साथ रह रहे हैं। इस तरह विदेशों में पारिवारिक जीवन बिखर जाता है, सामाजिक जीवन

बिखर जाता है। बहुत सारी समस्याएं पैदा होती हैं, चरित्र का कोई ठिकाना नहीं रहता।

पशु-पक्षियों की तरह उनका जीवन है। चाहे जिसके साथ किसी दिन, कुछ दिन रह लिए, चाहे किसी के साथ फिर कुछ दिन रह लिए, तो ये पाश्चात्य परंपराएं सुखदायक नहीं हैं। इसीलिए भारतीय परंपरा जो है, वो अच्छी है, वो वैदिक परंपरा है। वेदों के आधार पर वो हमारे सुख के लिए हमें बताई गई।

इस तरह से, बच्चों को धीरे-धीरे रोज, थोड़ा-थोड़ा, परिस्थिति के अनुसार माता-पिता समझाएं, थोड़ी-थोड़ी मात्रा-डोज रोज देते रहने से, लंबे समय में बच्चे सावधान हो जाएंगे। वे इतने समर्थ हो जाएंगे कि इस तरह से कोई भी हरकत वो नहीं करेंगे और ऐसी दुर्घटनाओं से बचे रहेंगे। अन्यथा बच्चे लापरवाही करते हैं, और माता-पिता उनसे खुल कर बात नहीं करते, वो माता-पिता से डरते हैं, छुपाते हैं और ये छुपे हुए प्रेम की बाते फिर कभी-कभी बड़ा रूप धारण कर लेती हैं, विस्फोटक हो जाती हैं और फिर बच्चे गलती कर बैठते हैं, चरित्रहीनता कर लेते हैं। कभी-कभी लड़का किसी लड़की को लेकर भाग जाता है, कहीं और चला जाता है, पांच दिन, बीस दिन, कहीं होटल में इधर-उधर रहकर के, खर्चा-वर्चा करके जब पैसे खत्म हो जाते हैं, फिर लौट के घर आता है। फिर दोनों परिवारों में टकराव होता है, लड़ाई-झगड़ा होता है, आदि-आदि बहुत सारे दोष आते हैं। इससे अनेक व्यक्तियों का जीवन अस्थिर हो जाता है, बहुत सारी हानियां होती हैं। इन सब हानियों से बचने के लिए हम ये कर सकते हैं कि बच्चों को सावधान रखें। स्वयं सावधानी से उनकी देखरेख करें और उनकी दिनचर्या बनाएं, उन पर धार्मिक संस्कार लागू करें, धार्मिक कर्मकाण्ड, अनुष्ठान उन पर लागू करें जैसे कि यज्ञ करना, संध्या करना, स्वाध्याय करना आदि-आदि। तो हम इस समस्या से काफी हद तक बच सकते हैं।

प्रश्न : कभी-कभी परिवार में 10, 12 साल के बच्चों को चोरी करने की आदत हो जाती है। उन्हें इस आदत से कैसे बचाया जाए?

उत्तर : पहली बात तो यह है कि, माता-पिता को बच्चों पर नियंत्रण रखना चाहिए। नियंत्रण का मतलब है कि उनकी प्रत्येक क्रिया पर माता-पिता

की नजर होनी चाहिए। उनकी देखभाल पूरी होनी चाहिए। अतः कुछ समय माता-पिता को बच्चे के साथ गुजरना चाहिए।

यहां दूसरी बात यह है कि दिन में उसके साथ बैठें, उससे बातचीत करें, उसकी जरूरतें पूछें। उनकी कितनी आवश्यक जरूरी चीजें हैं, जो उसको मिलनी चाहिए। ऐसी कितनी उसकी फरमाइशें हैं, जो आवश्यक नहीं हैं, केवल दूसरे बच्चों की देखा-देखी या कुछ अमीर बच्चों की देखा-देखी उसके मन में इच्छाएं उठती हैं, कि मेरे पास भी हो तो अच्छा है। बच्चों के साथ बैठें, उनसे बातचीत करें। ऐसा करने से आपको पता चल जाएगा कि, बच्चों के मन में क्या है, वो क्या चाहते हैं।

यदि उनकी उचित आवश्यकताएं आप पूरी करते हैं, तो ठीक है, सारी ऊँची-ऊँची लगजरी फरमाइशें पूरी नहीं करनी, उससे तो फिर बच्चे को फिजूल-खर्ची की आदत भी पड़ती है उससे भी बचाना है। जो उसके लिए बिल्कुल आवश्यक है, उपयोगी वस्तु है, उसको दिलानी चाहिए, उसको जेब-खर्च देना चाहिए। साथ ही ये भी ध्यान रखना चाहिए, कि वो उस पैसे को कहां खर्च करता है। इधर से, उधर से, मित्रों से, साथियों से जानकारी करते रहना चाहिए। आप कुछ समय बच्चों के साथ बिताएंगे तो उनसे बातचीत में, चर्चा में, ऐसे कोई न कोई बात से, उसकी सारी बात बाहर निकल आएगी, कि वो कहां जाता है, कितना खर्च करता है, पैसे किस काम में खर्च करता है। इस तरह से बच्चों पर नियंत्रण रखना चाहिए। उनकी हर गतिविधि पर आपकी दृष्टि रहे, तो आपको पता चल जाएगा कि, बच्चे उस पैसे का क्या करते हैं, जो आप जेब खर्च के तौर पर उनको देते हैं। इससे उनकी फिजूल-खर्ची की भी आदत नहीं बनेगी और जो आवश्यक वस्तु है, जो उन्हें चाहिए, वो आप दिलाते रहेंगे, तो उनकी चोरी करने की आदत भी नहीं बनेगी।

अनेक बार माता-पिता बच्चों की आवश्यकताओं को पूरा नहीं करते, जो उनकी बहुत आवश्यक चीजें होती हैं, वो भी नहीं मंगाकर देते। अब बच्चे को वो चीज जरूर चाहिए, उसके बिना उसका काम नहीं चलता, तो फिर उसकी चोरी करने की आदत पड़ती है। ऐसा इसलिए, क्योंकि जो आवश्यक है, वह तो चाहिए ही चाहिए। जैसे कि जब भूख लगती है तो खाना तो चाहिए, अगर उसको सीधे तरह से खाना नहीं मिलेगा, तो वो चोरी, करके खाएगा। इसलिए कहा गया है कि “भूखा व्यक्ति क्या पाप नहीं करेगा, सब करेगा।” इसलिए

व्यक्ति को भूखा न रखें, उसको पेट-भर खाना मिलना चाहिए अर्थात् उसकी आवश्यकता पूरी होनी चाहिए। फिर वो काफी सीमा तक चोरी की आदत से बचेगा। इस प्रकार से बच्चों की प्रत्येक आदत पर ध्यान रखें। उनकी आवश्यकताएं पूरी करें, फिजूल-खर्ची न करें।

यहां अगली बात है कि माता-पिता अपना पैसा, कैश, घर में अनेक स्थानों पर खुल्ला छोड़ देते हैं। जब बच्चे की नजर उस कैश पर पड़ती है तो फिर उसके मन में चोरी करने का विचार उत्पन्न होता है, या हो सकता है। हर बच्चे के पूर्वजन्म के संस्कार इतने अच्छे नहीं होते, कि पैसा देखकर उसकी इच्छा न हो, चोरी करने की। जिन बच्चों के संस्कार अच्छे होते हैं, वो तो ठीक है, पैसा देखकर के भी चोरी नहीं करेंगे, बल्कि उसको उठा कर मां को देंगे और कहेंगे कि, मां इसको संभालकर रखो। इसलिए ये नियम हमेशा बनाकर रखना चाहिए कि आपके घर के अनेक स्थानों पर, घर के कमरों में अलग-अलग जगह पर आप खुल्ले पैसे न छोड़े, मतलब पैसे दिखते न रहें, कैश, नगद जो भी हो, उसको हमेशा पर्स में रखे। पर्स को भी संभाल कर अलमारी में रखें, हो सके तो ताले में रखें।

जब कभी बच्चों को अपने मित्रों के साथ कहीं सैर-सपाटे पर जाना होता है, पान खाने का शौक लग जाता है, घूमने-फिरने का, आवारागर्दी का, शौक लग जाता है, तो वो देखते हैं कि, भई कहां से पैसा मिलेगा और कैसे हम अपने शौक पूरा करेंगे? ऐसे में जहां भी उनको पैसा मिल जाएगा, दिखाई देगा, वो पर्स में से भी चोरी करेंगे और खुल्ले पड़े होंगे तो वहां से भी उठा लेंगे। ऐसी अनेक घटनाएं घरों में देखी जाती हैं।

विदेश की एक घटना है। रात के समय एक व्यक्ति मुंह पर नकाब लगाकर एक परिवार में गया और उसने घर की मालकिन से कहा कि अलमारी की चाबी दो, तो उस मालकिन ने चाबी नहीं दी। मालकिन हिम्मत वाली थी और चोर से गुत्थम-गुत्था हो गई। इस बीच जो चोर आया था, नकाब लगा करके, धीरे-धीरे उसका नकाब उतर गया। जब नकाब उतरा तो उस महिला को बड़ा आश्चर्य हुआ कि जो नकाब लगाकर आया था वो उसका अपना ही बेटा था। अपने ही घर में, अपने ही मां के साथ, वो दादागिरी कर रहा था, चोरी करने के लिए। ऐसी आदतें बच्चों को पड़ जाती हैं, जिनके लिए माता-पिता ही जिम्मेदार होते हैं। इसलिए माता-पिता को पूरी सावधानी रखनी चाहिए।

इसी तरह से, आपके घर के आभूषण भी ताले में सुरक्षित रखें। हो सके तो, कहीं बैंक लॉकर में भी रख सकते हैं, वहां और भी अच्छी तरह सुरक्षा रहती है। अगर बैंक लॉकर में नहीं रखा तो अपने घर में कहीं लॉकर में रखें और उसकी चाबी अपने पास सुरक्षित रहनी चाहिए, बच्चों की नजर वहां तक नहीं पहुंचनी चाहिए। इस तरह से आप बहुत कुछ बच्चे को चोरी करने की आदत से बचा सकते हैं।

फिर आप जो बच्चे को खर्च के लिए, पैसा देते हैं, उस संबंध में आते-जाते या कभी प्रसंग चले तो उससे पूछ भी लें, भई तुम पैसे कहां खर्च करते हो, किस काम में खर्च करते हो? यदि आप रोज उसके साथ एकाध घंटा बैठें और उससे बातचीत करें तो जाने-अनजाने उसके मुंह से निकल ही जाएगा, कि मैं अपने पैसे कहां खर्च करता हूँ। इससे आपको संतोष रहेगा कि हमारा बच्चा चोरी नहीं करता है, और हम जो पैसा देते हैं उसको ठीक काम में खर्च करता है, उचित खर्च करता है। उससे वो अण्डे, मांस नहीं खाता, शराब नहीं पीता और कोई नशीली चीजों का प्रयोग भी नहीं करता। इस तरह से बच्चे के ऊपर पर्याप्त नजर रखें, तो आप उसे चोरी की आदत से बचा सकते हैं।

फिर भी मान लो कभी दोस्तों की प्रेरणा से किसी और पड़ोसी बच्चे की प्रेरणा से आपके बच्चे को चोरी करने की बुरी आदत लग जाती है, तो अपने कैश को हमेशा गिनकर रखें। मैंने कितना रूपया पर्स में रखा और फिर जब अगले दिन या शाम को उसको चेक करेंगे, तो यदि आपको पता चले की इसमें पैसे कम हो गए हैं, तो साफ है कि चोरी हुई है। इस तरह से पता लगने पर फिर बच्चे की जांच करें, उसका व्यवहार चेक करें, उसके व्यवहार में कहीं परिवर्तन तो नहीं आया। जल्दी से उसको चेक करके पता लग जाए, कि हां ये चोरी कर रहा है, तो उसको प्रेम से समझाएं, कि “बेटा चोरी करना अच्छा नहीं है, आपको हमसे बिना पूछे पैसे नहीं लेने चाहिए। 10 साल के, 12 साल के छोटे बच्चे प्रेम से मान जाते हैं, उनको समझाने से अच्छी बात समझ में आ जाती है। इस तरह से बच्चों के साथ प्रेम से व्यवहार करें और उनको धीरे-धीरे बुद्धिमत्ता से ठीक रास्ते पर ले आएँ, तो उनकी चोरी की आदत छूट सकती है। कभी-कभी माता जो है, बच्चों की इस चोरी का समर्थन भी कर देती है, भूल-चूक से मान लो बच्चा स्कूल से कोई छोटा-मोटा, सामान चोरी कर लाए, किसी का पेन चुरा लाया या रबड़ ले आया, या इस तरह का और

कोई सामान ले आया। और मां उसको डांटती नहीं, बताती नहीं, कि “तुम गलत कर रहे हो। ऐसा बिल्कुल भी नहीं करना है।” उसको माँ कहे— कि “तुम दूसरे का सामान वापस देकर आओ।” अगर मां इस तरह से उसको बचपन में सावधान कर दे, तो उस बच्चे की चोरी की आदत नहीं पड़ेगी। अनेक बार लोभ, लालच के कारण माताएं अपना कर्तव्य पूरा नहीं निभाती और वो उस चोरी के सामान को रख लेती हैं, और बच्चे को डांटती नहीं समझाती नहीं, इससे फिर वो छोटी-छोटी चोरी की आदत, आने वाले समय में बहुत विकराल रूप धारण कर लेगी और फिर वो व्यक्ति बड़ा चोर, बड़े ऊंचे स्तर का चोर बनेगा, और भविष्य में उसको फिर जेल जाना पड़ेगा। उसको तरह-तरह के दंड भोगने पड़ेंगे। तो इस प्रकार से बच्चों को सावधानी से संभाल के रखें, उनकी देखभाल करें।

कभी ऐसी गलती हो भी जाए, तो उसको प्रेम से समझाएं, तो उसकी आदत ठीक हो जाएगी। इतना करने पर भी आदत ठीक नहीं होती हो, तो फिर उसे उचित दंड भी देना चाहिए। बच्चों को दंड देंगे, तो दंड के भय से फिर बच्चे सुधरेंगे। “कोई भी व्यक्ति दंड के बिना नहीं सुधरता,” ये अनादिकाल से नियम है, भविष्य में भी ये अनंतकाल तक चलता रहेगा। ये सत्य है, इसको कोई बदल नहीं सकता। इसलिए बच्चे यदि इस तरह की गलती करें, तो यथा उचित उनको मात्रा से दंड भी देना चाहिए, ताकि उनको ये भ्रम न हो जाए, “कि हम चोरी करते हैं किसी को पता ही नहीं चलता, कोई दंड तो देता नहीं।” जब दंड नहीं मिलेगा, तो वो आगे भी चोरी करते रहेंगे। इस प्रकार से बच्चों पर सावधानी रखकर उनको चोरी करने की आदत से बचाया जा सकता है।

प्रश्न : अनेक बार घर में पिता और पुत्र में किसी बात पर आपस में तू-तू, मैं-मैं या बहस हो जाती है, तो उस समय माता का क्या रोल होना चाहिए?

उत्तर : आमतौर पर परिवारों में अनेक घटनाएं ऐसी देखने में आती हैं। जैसे कि बेटा स्कूल गया था, दो बजे उसकी छुट्टी होती है, तीन बजे उसको घर पहुंचना चाहिए पर वो घर नहीं पहुंचा। वह शाम को साढ़े छः बजे आया। इधर घर में माता-पिता परेशान होते रहे। छह बजे घर आया, तो घर में घुसते ही पिता ने उसको टोका, भई तुम कहाँ गए थे? तो बेटा भी घबरा गया। उसको इसकी उम्मीद नहीं थी, कि अचानक ऐसे घुसते ही प्रश्न होगा और पिता जी सामने ही उपस्थित होंगे। पिता ने जब पूछा, तो बेटे ने कहा, कि “जी

ऐसा है, वो मैं दोस्तों के साथ पिकचर देखने चला गया था।" पिता ने उसको टोका, कि साहबजादे तो मौज मना रहे हैं, फिल्म देख रहे हैं और हम यहां पर परेशान हो रहे हैं, चिंता कर रहे हैं, कि बेटा कहां गया। अब जवान बेटा था। बस मां ने बीच में पकड़कर के बेटे की तरफदारी और पति का विरोध करने की अनुचित प्रक्रिया शुरू कर दी। वो कहने लगी, क्या है जी! आप भी बरसने लगे, अभी घर में तो घुसने नहीं दिया उसको, घर में तो घुसने दो, बस आते ही डांटने लगे।" मां ने अपने पति को (बेटे के पिता को) ऐसा बोलना शुरू किया। इस पर पिता ने कहा, कि "तुमने ही तो इसको सर पे चढ़ा रखा है। घर में सूचना भी नहीं देता, टाइम पर आना चाहिए, टाइम पर भी नहीं आता। फिर हम चिंता नहीं करें, तो क्या हो।" इस तरह माता-पिता में आपस में टकराव शुरू हो गया और बेटे ने इसका लाभ उठाया, वो चुपचाप खिसक गया। अपने कमरे में जाकर लेट गया। ऐसी घटनाएं अनेक बार होती हैं, बहुत घरों में होती हैं। कहीं बेटा पिकचर देखने चला गया, कहीं बड़े भाई ने छोटे भाई को किसी कारणवश थप्पड़ मार दिया, पीट दिया। बड़ा भाई पढ़ाई कर रहा था, छोटे भाई ने जोर-जोर से टीवी चलाना शुरू कर दिया। बड़े भाई ने उसको समझाया भी, कि शोर मत करो, आवाज कम रखो। छोटा भाई माना नहीं, और वो गड़बड़ करता रहा। फिर बड़े भाई को गुस्सा आया, उसकी पढ़ाई में नुकसान होता था। वो उठके आया और उसने दो थप्पड़ लगाए। छोटे भाई ने मां को शिकायत की। तो पिताजी ने बड़े भाई को समझाया, कि "बेटा! ऐसा नहीं करना चाहिए" और बस मां ने फिर बड़े भाई को कोसना शुरू किया, छोटे भाई का पक्ष लेना शुरू किया, आदि-आदि ऐसी अनेक घटनाएं घरों में होती रहती हैं, जिनसे आपस में टकराव बढ़ता है।

मान लीजिए, इस दूसरी घटना में पिताजी बड़े भाई को समझा रहे थे, कि बेटा! इस तरह छोटे को पीटना नहीं चाहिए, उसको प्रेम से बताना चाहिए और मां आकर विरोध करे पिताजी का, कि तुम हमेशा इसको डांटते ही रहते हो, प्रेम से समझाना चाहिए, ऐसा करना चाहिए, वैसा करना चाहिए, तो ऐसे पिता-पुत्र के संबंधों में मां बीच-बीच में बाधक बनती है।

कभी-कभी ऐसा भी होता है कि बेटा कुछ बड़ा हुआ, पिता के साथ व्यापार में सहयोग करने लगा, दुकान पर जाने लगा और फिर आपस में पिता-पुत्र में टकराव होने लगा। वो पिताजी को, कहने लगा कि "आप ग्राहक

से कड़क बात करते हो, कठोर भाषा बोलते हो, इससे ग्राहक भाग जाएगा, आपको ठीक ढंग से बात करनी चाहिए।” अब उनकी इस बातचीत में, मां ने बीच में हस्तक्षेप शुरू किया। इस तरह माता-पिता में आपस में टकराव शुरू हो गया। फिर मां ने थोड़ी समझदारी की और प्रेम से पति को समझाया, बताया, कि “बेटा जब बड़ा हो जाए, तो वो फिर बेटा नहीं रहता। फिर उसको दोस्त मान के चलना चाहिए। और वो आपका ही तो बेटा है। उसको समझाना, व्यापार में कुशल बनाना, आपकी ही तो जिम्मेदारी है। उसको अपने ढंग से समझाइए, आप जैसे भी समझाइए, वो आपकी जिम्मेदारी है, आपको इतनी टेक्निक होनी चाहिए।” इस तरह मां ने बड़ी नरमी से, सम्यता से, अपने पति से ये बात कही। तो पति ने विचार किया, कि हां पत्नी की बात ठीक है, भले ही मेरा अनुभव अधिक है व्यापार में, फिर भी मैं जो बात सिखाना चाहता हूँ अपने बेटे को, वह सिखाने की जिम्मेदारी तो मुझ पर ही है। उसको अपनी पत्नी की बात समझ में आ गई। इस तरह से इस घटना में, मां ने बहुत समझदारी से काम लिया, नम्रता से बात कही, तो पिता के अहम को भी चोट नहीं लगी और बात भी स्पष्ट हो गई। अगर मां ये बात पहले वाली पत्नियों की तरह टकराव में कहती, उपदेश में कहती और जरा अकड़ के बोलती, तो फिर यहां भी काम बिगड़ता। ऐसी अनेक घटनाएं देखने में आती हैं। ऐसी स्थितियों में बुद्धिमत्ता की बात ये है, कि जब पिता-पुत्र में टकराव हो, तो जहां तक संभव हो। मां को बीच में पड़ना नहीं चाहिए। वो पिता-पुत्र आपस में निपटा लेंगे। जब कभी पिता-पुत्र में टकराव हो, तो फिर पुत्र की तरफदारी कभी नहीं करनी चाहिए। उस समय बेटे के सामने तो कभी उसके पक्ष में नहीं बोलना चाहिए, क्योंकि ऐसा करने से चाहे बेटे का पक्ष ठीक हो या गलत हो, उसको एक तो प्रोत्साहन मिलता है मां का, और उसकी नजर में पिता की बात का महत्व कम हो जाता है। इस तरह से जाने-अनजाने उसकी पिता के प्रति श्रद्धा कम हो जाती है। ऐसा होने से भविष्य में जो अच्छी बातें, वो पिता से सीख सकता था, नहीं सीख पाएगा। भले ही कभी, बेटे की बात ठीक भी हो, तब भी मां को, पिता के सामने कभी बेटे की तरफदारी नहीं करनी चाहिए। उस समय तो जैसे-तैसे बात को निपटा देना चाहिए। बाद में पति को अलग से सुझाव दें, कि “जी, इस मामले में आप ऐसा करते, तो ज्यादा अच्छा होता।” और फिर जो सुधार करना हो, वो पिता स्वयं सुधार करे। उसने बेटे से जो टकराव किया था, उसको स्वयं ठीक करे। ऐसा करने पर माता-पिता

का टकराव बच्चे के सामने नहीं आएगा और इससे माता-पिता दोनों के प्रति बच्चे की भावना शुद्ध बनी रहेगी, दोनों के प्रति आदर भाव सम्मान की भावना बनी रहेगी। ऐसे परिवार में टकराव नहीं होगा, संगठन नहीं टूटेगा, और परस्पर श्रद्धा बनी रहेगी। पिता की बात का महत्व भी कम नहीं होगा, और पिता अपनी बुद्धिमत्ता से परिस्थिति को देखकर अपनी बात को सुधार लेगा। ये सावधानी सब जगह रखनी चाहिए।

यदि माता-पिता में टकराव है और बेटा उस टकराव को देखता है, उनकी नोकझोंक देखता है, सुनता है, तो बेटे के मन में दो में से एक के प्रति जरूर अश्रद्धा होगी और वो उसके प्रति अपनी श्रद्धा भावना कम हो जाएगी। और परिवार में संगठन टूटेगा, अनुशासन टूटेगा और जो उन्नति होनी चाहिए, वो नहीं हो पाएगी, संगठन नहीं रहेगा। इसलिए माता-पिता इस बात की विशेष सावधानी रखें कि बच्चे के सामने कभी भी टकराव न करें। यदि पिता-पुत्र में टकराव होता है, तो माता को बीच में हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए, बच्चे के सामने तो बिल्कुल भी नहीं करना चाहिए। अलग से पति से बात करे, फिर पति स्वयं बच्चे को समझाए और जैसे-तैसे बुद्धिमत्ता से बातचीत करके, उसको ठीक रास्ते पर लाए। इतनी सावधानी रखेंगे, तो हमारे परिवार में ये समस्या नहीं आएगी, परिवार में संतुलन बना रहेगा और बिगाड़ नहीं होगा।

प्रश्न : सम्पन्न परिवारों के बच्चे कई बार अपराध की प्रवृत्तियों में शामिल हो जाते हैं। ये क्यों होता है और इसे रोकने का क्या उपाय है?

उत्तर : अनेक बार ऐसा देखा जाता है, कि जो संपन्न परिवार के बच्चे होते हैं, उनको घर पर किसी चीज की कमी नहीं होती, सब प्रकार के साधन मिलते हैं। खाना-पीना, पैसा जेब-खर्च, नौकर-चाकर सुविधाएं, मोटर-गाड़ी। इन सब सुविधाओं का भोग करने के कारण वे जीवन की गंभीरता को अधिक नहीं समझते। फिर उनके पास सब तरह की छूट है, माता-पिता की भी छूट है। माता-पिता अपने क्लब में, कंपनियों में व्यापार-व्यवसाय में लगे रहते हैं, वो बच्चों पर इतना ध्यान नहीं देते। उनको समय नहीं मिलता, वो समय नहीं निकालते बच्चों के लिए, उनकी देखभाल के लिए, उनके अच्छे नैतिक प्रशिक्षण के लिए समय नहीं निकालते। इसके अभाव में, जिसको हम सभ्यता के नाम से बोलते हैं, या मैनेर्स के नाम से बोलते हैं, बहुत से माता-पिता उनको ये

मैनर्स नहीं सिखा पाते। इसलिए बच्चे फुर्सत में होने के कारण, फालतू समय होने के कारण, कभी नौकर के पास, कभी आया के पास, कभी थोड़े बड़े हो गए, तो फिर कहीं अपने दोस्तों के साथ घूमते हैं बाहर। कभी वो जासूसी नॉवेल पढ़ते हैं, कभी फिल्म देखते हैं, इस प्रकार के कार्य करते हैं संपन्न परिवारों के बच्चे। उनको फिल्मों से, जासूसी उपन्यासों से गलत गतिविधियां सीखने को मिलती है। उन बच्चों के मन में ये जिज्ञासा उत्पन्न होती है कि देखें दूसरे परिवारों में कैसे काम होता है, कैसे लोग रहते हैं, कैसे क्रिया करते हैं, और थोड़ा सा मनोरंजन हो जाएगा। मनोरंजन के बहाने से किसी ऑफिस में घुस जाएंगे, किसी के घर में घुस जाएंगे, सामान तोड़-फोड़ देंगे। फिर तमाशा देखेंगे, कि देखें परिवार के लोग कैसे प्रतिक्रिया करते हैं, कैसे दुःखी होते हैं। उसका किसी के घर में घुस करके सामान चुरा लेंगे, फिर तमाशा देखेंगे कि वो घर वाले कैसे परेशान होते हैं। किसी की कार का शीशा तोड़ देंगे, किसी की कार में से, स्कूटर में से कोई स्पेयर पार्ट्स उखाड़ के ले जाएंगे, आदि-आदि। यद्यपि इन बच्चों की कोई ऐसी प्रवृत्ति नहीं होती, कि चोरी की जाए या चोरी से उनको बहुत लाभ होने वाला हो। चोरी मुख्य उद्देश्य नहीं होता, केवल मनोरंजन करना, लोगों को परेशान करना, लोगों का तमाशा देखना आदि – आदि इस तरह के कारण रहते हैं, जिसकी वजह से ये आपराधिक प्रवृत्तियां करने लगते हैं।

अक्सर इनको ये लापरवाही घर से ही सीखने को मिलती है। माता-पिता ने इनको पैसे दे, दिए कि जाओ बेटा शॉपिंग कर लाओ। कहीं 380 का बिल हुआ तो 400 रुपये दे दिए, 10 रुपये पूछे ही नहीं, कि भाई वापस भी लाओ। कहीं सब्जी ली 19 रुपये की, तो 20 का नोट दिया, सब्जी वाले ने 1 रुपया दिया नहीं, इन्होंने भी नहीं कहा कि मेरा 1 रुपया वापस दो। इस तरह से कहीं 38 रुपये का बिल हो तो 40 दे देंगे, 95 का हो 100 दे देंगे, 5 रुपये वापस नहीं लेंगे। क्योंकि घर में पैसे की कमी नहीं है, इस कारण से ये लोग पैसे के खर्च पर इतना ध्यान नहीं देते। और जो सभ्यता के नियम हैं, उनका वो पालन नहीं करते। माता-पिता भी इन्हें अच्छी तरह ईमानदारी से नहीं सिखाते, कि “फिजूल-खर्ची नहीं होनी चाहिए। पैसा भले ही भगवान का दिया है हमारे पास, पर इसका अर्थ ये नहीं है, कि हम फिजूल-खर्ची करें।” तो 400 रुपया दिया आपने और 380 का बिल बनता है, तो 20 रुपये वापस लेने

चाहिए। इस तरह का उनको कोई प्रशिक्षण नहीं दिया जाता। माता-पिता उनको जेब-खर्च के लिए भी बहुत सारे पैसे देते हैं और फिर कभी पूछते नहीं, कि “मैंने आपको इतने रुपये दिए थे, आपने कहां खर्च किए? किस काम में खर्च किए? किस तरह से किए?”

पैसे खर्च करना भी एक बहुत बड़ी कला है। वो न सीखने के कारण बच्चे फिर फिजूल-खर्च हो जाते हैं। कोई शराब पीने लगता है, कोई सिगरेट पीने लगता है, कोई अण्डा-मांस खाने लगता है, कोई दोस्तों के साथ फालतू इधर-उधर घूमने में पेट्रोल में उड़ा देता है। इस प्रकार से ये बच्चे अंजाने में ही बिगड़ जाते हैं। इनमें इस तरह की सामाजिक अपराध की प्रवृत्ति बढ़ने लगती है।

माता-पिता पैसा भी दें, तो सोच-समझकर दें, उचित कार्य के लिए खर्च करने के लिए पैसा दें। और फिर उसकी जांच भी करें, “आपने पैसा कहां खर्च किया, ठीक किया, नहीं किया,” इसमें क्या सुधार होना चाहिए, इस प्रकार का प्रशिक्षण बच्चों को माता-पिता की ओर से मिलना चाहिए।

इसके साथ-साथ उनको नैतिक शिक्षा का भी पाठ रोज थोड़ा बहुत मिलना चाहिए। बच्चे पंद्रह-बीस मिनट, आधा घंटा माता-पिता के साथ बैठे, माता-पिता भी समय निकाले, उनकी दिनचर्या पूछें, जानकारी करें, वे कहां जाते हैं, क्या खाते हैं, किसके साथ बैठते हैं, क्या बात करते हैं, टीवी देखते हैं, फिल्में देखते हैं, नाटक देखते हैं या पढ़ाई करते हैं। या कम्प्यूटर पर इंटरनेट पर क्या काम करते हैं, यह सारी जानकारी माता-पिता को होनी चाहिए। इसके साथ ही बच्चों को कुछ अच्छी पुस्तकें, सभ्यता की पुस्तकें, अनुशासन की पुस्तकें भी देनी चाहिए, जिनको पढ़ करके बच्चे सभ्य बनें, बुद्धिमान बनें, चरित्रवान बनें, ईमानदार बनें।

जासूसी नॉवेल से बचना चाहिए। इससे बुद्धि में यद्यपि थोड़ा बहुत विकास होता है, खोजबीन करने का, लेकिन उसका साइड-इफेक्ट भी बहुत अधिक होता है। सीखने को व्यक्ति वहां से अच्छी चीज भी सीख सकता है, लेकिन ऐसा प्रायः देखा नहीं जाता। व्यक्ति फिल्म देखने जाता है उसमें से जो खराब चीज है वो ज्यादा सीखता है, और जो अच्छी चीज सिखाई गई, वो नहीं सीखता है। उसके लिए माता-पिता को सावधान रहना चाहिए, वो हमेशा ये बताएं, कि देखो

ये फिल्म देख रहे हो, इसमें जो खराब अंश है, वो मत सीखना। जो अच्छा अंश है, वो सीखो। फिल्म में विलेन ने 2 घंटे तक दूसरों को परेशान किया, निर्दोष व्यक्तियों को सताया और अंतिम आधे घंटे में पुलिस उसके पीछे पड़ गई और जैसे-तैसे खूब संघर्ष करके पुलिस ने उसको पकड़ लिया, फिर उसको जेल में डाल दिया। तो अब सारी फिल्म में सार ये निकला, कि अगर आप दूसरों को परेशान करेंगे, समाज को तंग करेंगे, अन्याय करेंगे, तो आपको अंत में परिणाम अच्छा नहीं आएगा और आपको जेल जाना पड़ेगा, दंड भोगना पड़ेगा। फिल्म बनाने वाले का उद्देश्य भी यही था कि लोग बुराई और अच्छाई दोनों को देखें। बुराई से बचें और अच्छाई सीखें। यही उद्देश्य सभी नाटकों में, सीरियलों में, सभी कहानियों में होता है। परंतु लोग उससे अच्छी बात कम सीखते हैं और खराब बात ज्यादा सीखते हैं, इस पर नियंत्रण होना चाहिए।

माता-पिता, गुरुजन-शिक्षक और हमारा पाठ्य पुस्तक, सिलेबस भी इस तरह का हो कि जिसमें अच्छी प्रेरणा अधिक दी जाए और बुरा अंश सिर्फ जानकारी के लिए बताया जाए कि ये बुराई है, इसको नहीं करना चाहिए। और ये अच्छाई है, इसको करना चाहिए। सीरियल हो, नाटक हो, फिल्म हो, मान लिया ढाई घंटे की फिल्म है, तो उसमें बुराई का अंश आधा घंटा दिखाएं और अच्छाई का अंश दो घंटा दिखाएं। जिस चीज को अधिक देर तक दिखाएं, उसका प्रभाव अधिक होगा। इसलिए जो अपने फिल्मकार हैं, जो नाटक बनाने वाले हैं, उनसे भी मेरा निवेदन है, कि वे लोग भी इस तरह की फिल्में और सीरियल नाटक बनाएं जिसमें बुराई का अंश थोड़ा दिखाएं और अच्छाई का अंश अधिक देर तक दिखाएं। अच्छे काम करने वालों को प्रोत्साहन और इनाम मिलता हुआ दिखाएं और दुष्टों को दंड मिलता हुआ दिखाएं। दंड की बात अधिक दिखाएं, जिससे कि व्यक्ति अपराध करने से बचे, क्योंकि ये वेदों का सिद्धांत है, “दंड के बिना कोई सुधरता नहीं है।” इस प्रकार से यदि करें और बच्चों को प्रशिक्षण दिया जाये, तो मैं समझता हूँ कि संपन्न परिवारों के बहुत से बच्चों को बिगड़ने से रोका जा सकता है।

वर्तमान में भौतिक संसाधनों का सदुपयोग कम, दुरुपयोग अधिक

आज तो विद्यार्थी जिस ढंग से जी रहे हैं, जो उद्दण्ड नागरिक जीवन जी रहे हैं, वो आप सब अच्छी तरह से जानते हैं। कम्प्यूटर, मोबाइल फोन,

टेलीविजन, इन्टरनेट आदि ये चीजें खराब नहीं हैं। भौतिक-विज्ञान के ये साधन अच्छे हैं, पर इनका उपयोग ठीक नहीं हो रहा है। इनका सदुपयोग बहुत थोड़ा सा हो रहा है। पाँच-दस परसेन्ट लोग होंगे, जो इनका ठीक उपयोग करते हैं। अधिकतर तो इनका दुरुपयोग ही करते हैं। इसलिए ये साधन अच्छे होते हुए भी, आज हमारे लिए हानिकारक परिणाम उत्पन्न कर रहे हैं। आज विद्यार्थियों में जो अनुशासनहीनता, चरित्रहीनता, सिगरेट, शराब और नशीली दवाओं का सेवन आदि समस्याएं उत्पन्न हो गई हैं, उनको उस प्राचीन पद्धति से, जो ईश्वर ने वेदों में बताई है, दूर किया जा सकता है।

प्रश्न : प्राचीन गुरुकुल में पढ़ने से डॉक्टर, इंजीनियर जैसी डिग्री मिल सकती है क्या? वेद की पढ़ाई के साथ-साथ व्यक्तिगत विकास ऐसे क्षेत्र में करना हो तो गुरुकुल की पढ़ाई करने से क्या ये संभव है? और आजकल इंग्लिश मीडियम में पढ़ना जरूरी हो गया है, तो क्या करेंगे? और गुजराती और हिंदी तो घर में सीख ही जाते हैं, पर इंग्लिश नहीं बोल पाते तो क्या करें?

उत्तर : रोज़ड़ में जो हमारा गुरुकुल चलता है, उसका उद्देश्य इस तरह का नहीं है कि हम यहाँ डॉक्टर बनाएं, इंजीनियर बनाएं, पॉयलट बनाएं, सांइटिस्ट बनाएं। हमारे गुरुकुल का उद्देश्य ये है कि यहां पर अच्छे विद्वान बनें, धार्मिक बनें, परोपकारी बनें, ब्रह्मचारी बनें, तपस्वी बनें, संन्यासी बनें, योगी बनें तथा देश और विदेश का कल्याण करें। हमारे गुरुकुल का ये इतना सा यानि सीमित लक्ष्य बनाया है।

प्राचीन काल में जो गुरुकुल होते थे, वहां पर पूरी व्यवस्थाएं होती थीं। समाज और राजा की ओर से भी वहां पर खूब सहयोग मिलता था और तरह-तरह की फ़ैक्लटीस (विद्या-विभाग) होती थी। वहां धार्मिक शिक्षा भी होती थी और साथ में ये आधुनिक शिक्षा भी होती थी। मतलब, शैक्षणिक योग्यता (एकेडमिक क्वालीफिकेशन) भी वहां चलती थी।

ऐसे गुरुकुल अभी तो हैं नहीं। अगर लोग सोचेंगे, विचार करेंगे और सरकार भी सहयोग करे, प्रजा भी चाहे, तो फिर ऐसे गुरुकुल भी भविष्य में बनाए जा सकते हैं, कि वहां पर डॉक्टर भी बनें, इंजीनियर भी बनें, विद्वान भी बनें और धार्मिक भी बनें। वो तो जब समय आएगा, तब की बात है। फिलहाल क्या कर सकते हैं हम? फिलहाल ये कर सकते हैं कि स्कूल, कॉलेज में, जो

आपके बच्चे पढ़ते हैं, जब तक प्राचीन गुरुकुलीय व्यवस्था न बने, तब-तक उनको यहां स्कूलों में, कॉलेजों में पढ़ाएं। पर जो उनकी दिनचर्या है, वो गुरुकुल जैसी अपने घर में रखें। मतलब, रोज घर में हवन करें, रोज घर में संध्या करें और अपने स्कूल कॉलेज की पढ़ाई भी करें। अगर किसी को इंग्लिश में जाना है तो इंग्लिश मीडियम भी पढ़ लें। इंग्लिश मीडियम वैसे ज्यादा अच्छा नहीं है, मीडियम तो अपना हिंदी, गुजराती रखें। सिर्फ बोलने के लिए अंग्रेजी सीखना है, तो वो व्यक्ति साल-दो साल में सीख सकता है। अंग्रेजी में कुशल होने के लिए तो, एकाध साल का कोर्स बहुत है। मीडियम अपने देश की भाषा रखें। तो इस तरह से वो पढ़ कर के अपनी आधुनिक योग्यता भी बनाए और अपनी धार्मिक योग्यता भी बनाएं। हमारे यहां रोजड़ में शिविर चलते रहते हैं, साल में दो बार, तीन बार, बच्चों के शिविर भी होते हैं, बड़ों के भी होते हैं, अभी मई के महीने में वहां रोजड़ में तेरह साल से अठारह साल की उम्र तक के जो बच्चे हैं, उनका एक शिविर चलेगा। तो आपके बच्चे जो इस आयु समूह (एज ग्रुप) में हैं, उनको वहां शिविर में भेजे, वहां उनको अच्छी ट्रेनिंग देंगे, स्कूल-कॉलेज की पढ़ाई तो वो यहां कर ही लेते हैं। पर व्यायाम की शिक्षा, धार्मिक शिक्षा, देश-भक्ति की शिक्षा वो हम उनको आठ दिन में वहां पर कुछ सिखा देंगे। आप तेरह से अठारह एज ग्रुप के अपने बच्चों को रोजड़ में भेजिए तो वो पूर्ति वहां से हो जाएगी।

स्वामी विवेकानन्द जी परिव्राजक की अन्य पुस्तकें

1. तत्त्व ज्ञान।
2. दुःख, स्वरूप, कारण और निवारण।
3. उत्कृष्ट शंका-समाधान।
4. संतान-निर्माण।
5. जीवनोपयोगी संदेश।
6. क्रोध को कैसे दूर करें (पत्रक)।
7. आज का सुविचार (कलेन्डर)।
8. अपने भाग्य निर्माता आप।

दर्शन योग धर्मार्थ ट्रस्ट की गतिविधियां

1. दर्शनाचार्य निर्माण

वेद, मनुस्मृति, उपनिषद, योग, सांख्य, न्याय आदि दर्शनों और ऋषिकृत प्राचीन ग्रन्थों का अध्ययन-अध्यापन, शंका-समाधान, संस्कृत भाषा शिक्षण, शारीरिक-शिक्षण। इनके माध्यम से इस वैदिक विद्या के प्रचार-प्रसार हेतु वैराग्यवान-योगाभ्यासी दर्शनाचार्यों-धर्माचार्यों का निर्माण करना, जो देश-विदेश में प्रचलित मिथ्या योग के स्थान पर सच्चे योग का प्रशिक्षण दे सकें। ट्रस्ट के द्वारा यह कार्य दर्शन योग महाविद्यालय के संचालन के माध्यम से पूरा किया जाता है।

2. ब्रह्मवेत्ता निर्माण

निष्काम भावना से युक्त मनसा, वाचा, कर्मणा एक होकर तन-मन-धन से सम्पूर्ण जीवन की आहुति देने वाले व्यक्तियों का निर्माण करना, जो अपनी और संसार की अविद्या-दुःख-अधर्म का विनाश कर, उसके स्थान पर विद्या-आनन्द-धर्म की स्थापना कर मोक्ष को सिद्ध कर सकें। इसके लिए प्रतिदिन क्रियात्मक योग प्रशिक्षण में विवेक, वैराग्य, ईश्वर-प्रणिधान, मनोनियन्त्रण, ध्यान, समाधि तथा ममत्व (स्व-स्वामी संबंध) को हटाने का अभ्यास इत्यादि आध्यत्मिक सूक्ष्म विषयों पर विस्तार से विवेचन किया जाता है। साथ ही, यम-नियम, मौन, आत्म निरीक्षण (Self Analysis), ध्यान आदि का सूक्ष्मता से आचरण कराया जाता है।

3. साधन साधना शिविर

साधना में विशेष गति-उपलब्धि प्राप्त करने और आध्यात्मिक विद्या की रक्षा व वृद्धि करने के उद्देश्य से साधना में विशेष रुचि रखने वाले योगाभ्यासियों के लिए एक वर्ष के विशेष साधना शिविर का आयोजन। इस प्रकार, महाविद्यालय वैदिक दर्शन अध्यापन और ध्यान योग प्रशिक्षण के आदर्श संस्थान के रूप में कार्यरत है।

4. प्रशिक्षण -

विद्यालय या बाह्य स्थानों में निम्नानुसार प्रशिक्षण :-

- (1) सरल आध्यात्मिक शिविर
- (2) वैदिक ध्यान व क्रियात्मक योग प्रशिक्षण शिविर
- (3) आर्य महिला प्रशिक्षण शिविर

- (4) व्यक्तित्व विकास एवं चरित्र निर्माण शिविर
- (5) किशोर चरित्र निर्माण शिविर
- (6) क्रियात्मक यज्ञ प्रशिक्षण शिविर
- (7) पारिवारिक सत्संग।

उपरोक्त अवैतनिक सेवाओं के अन्तर्गत वैदिक योग व वेद-दर्शन-उपनिषद् आदि वैदिक ग्रन्थों का अध्ययन-अभ्यास व इनसे संबंधित प्रवचन माला तथा आगंतुक महानुभावों का मार्गदर्शन व जिज्ञासुओं की शंकाओं का समाधान करना आदि आध्यात्मिक लाभ प्रदान किया जाता है।

5. साहित्य प्रकाशन -

मानव मात्र के कल्याण के लिए उपयोगी साहित्य (पुस्तक, पत्रक, सीडी, कलेंडर आदि) का लेखन-प्रकाशन-वितरण निःशुल्क या लागत व्यय पर होता है।

6. वैदिक विद्या के प्रचार-प्रसार में समर्पित विद्वानों और अन्य गुस्कुलों में अध्ययनरत विद्यार्थियों को आर्थिक सहयोग।
7. संन्यास, वानप्रस्थ, उपनयन, वेदारम्भ दीक्षा आदि वैदिक संस्कारों का आयोजन। वैदिक अंत्येष्टि संस्कार करना तथा उसमें प्रयुक्त सामग्री का सहयोग।
8. गौ वंश संवर्धन हेतु प्रचार तथा धनादि का सहयोग। निर्धन विकलांग रोगियों को आर्थिक सहायता। देश के विभिन्न प्रान्तों में प्राकृतिक प्रकोपों में सहायता प्रदान करना।
9. महाविद्यालय में यज्ञ शाला का संचालन और देश के विभिन्न प्रान्तों में यज्ञ प्रशिक्षण शिविर का आयोजन। पर्यावरण शुद्धि के निमित्त वैज्ञानिक स्तर पर यज्ञ-हवन का क्रियान्वयन, प्रशिक्षण। औषधि व वनस्पति वृक्षारोपण करना व अन्यो को प्रेरित करना।
10. इन्टरनेट व वेबसाइट आदि के माध्यम से विभिन्न प्रकार से प्रेरणा तथा आध्यात्मिक व व्यावहारिक शंकाओं का समाधान किया जाता है।

दर्शन योग महाविद्यालय की एक अभिनव परियोजना “सफलता विज्ञान”

भारत को विश्वगुरु बनाने वाली हमारी महान गौरवशाली संस्कृति की सफलता प्रदायक विचारधारा सर्वश्रेष्ठ है। मानवमात्र की भलाई के लिए इस विचारधारा को जन साधारण तक पहुँचाना अनिवार्य है। इसी दृष्टिकोण से दर्शन योग महाविद्यालय के द्वारा इस कल्याणकारी विचारधारा को सरल-सुबोध भाषा और नवीनतम-आधुनिक मनोरंजक शैली में प्रस्तुत करने के लिए अभिनव परियोजना ‘सफलता विज्ञान’ का संचालन किया जा रहा है। इस आशा के साथ कि, ज्ञान को सहज-सुलभ बना कर, उसे घर-घर पहुँचाने वाली यह हमारी पारम्परिक पद्धति, आमजन के अन्दर जीवन का उद्धार करने वाले गुणों का विकास करने में सहायक सिद्ध होगी।

अतः महाविद्यालय के निदेशक और आचार्य की प्रेरणा, मार्गदर्शन व निर्देशन में महाविद्यालय के सेवा एवं साहित्य प्रचार विभाग द्वारा पढ़ाई-नौकरी, व्यापार-साधना आदि जीवन के सभी महत्वपूर्ण क्षेत्रों में सफल बनाने वाले वास्तविक-व्यावहारिक विधि-विधानों का पथ-प्रदर्शन करने वाली इस वैचारिक परियोजना का क्रियान्वयन किया जा रहा है। इस वृहत् परियोजना में अनेक विभाग हैं, यथा :-

1. सफलता विज्ञान पुस्तक शृंखला (Series) – जनसामान्य के बौद्धिक स्तर के दृष्टिगत रची गई ‘सफलता विज्ञान पुस्तक शृंखला’ की 20 से अधिक बहुरंगी आकर्षक पुस्तकों के प्रकाशन की योजना है। जिसके तहत प्रथम पुस्तक ‘सफलता का संसार’ प्रकाशित हो चुकी है, शेष पुस्तकें क्रमशः प्रकाशित होना बाकी हैं।

2. सफलता विज्ञान सुविचार पुस्तक (Motivational Quotation Book) शृंखला – निःसंदेह, हृदयंगम किए गए सुविचार ही, कामना-कर्म-कामयाबी के रूप में बदल कर स्वयं का उद्धार करा दिया करते हैं। इसी वास्तविकता के दृष्टिगत ‘सफलता विज्ञान पुस्तक शृंखला’ की प्रथम पुस्तक ‘सफलता का संसार’ आधारित, प्रथम बहुरंगी सुविचार पुस्तिका ‘सफलता सुविचार’ प्रकाशित हो चुकी है। शृंखला की शेष सुविचार पुस्तिकाएं प्रकाशित होना बाकी हैं।

3. सफलता विज्ञान चित्र प्रदर्शनी (Poster Exhibition) शृंखला – पुस्तक शृंखला के प्रेरक तथ्यों को छोटे व बड़े लगभग 2000 की संख्या में ‘पोस्टर’ के रूप में प्रकाशित करना प्रस्तावित है। फलतः सेवाभावी जन अपने घर व ऑफिस में इन प्रेरक छोटे और स्कूल-कॉलेज-कोचिंग आदि संस्थाओं में बड़े पोस्टर की प्रदर्शनी स्वयं आयोजित कर सकेंगे। प्रदर्शनी के आयोजन के फलस्वरूप, लोग सफलता के मार्ग को

जानकर, न केवल स्वयं सफलता की दिशा में आगे बढ़ सकेंगे बल्कि अन्यो को भी बढ़ा सकने में सहयोगी बन सकेंगे। इसके अतिरिक्त, आमजन की सुविधा हेतु पोस्टर लागत व्यय पर उपलब्ध कराना भी प्रस्तावित है। वर्तमान में सफलता विज्ञान प्रदर्शनी शृंखला के पहले भाग के 55 पोस्टर का निर्माण हो चुका है।

4 सफलता विज्ञान शुभकामना संदेश (Greeting Card) शृंखला - मानवीय संबंधों को निभाने और उनसे लाभ पाने के लिए अपनों को यह अहसास कराते रहना जरूरी होता है कि, हाँ, कोई है, जो करता है... आपसे प्रेम, आपकी परवाह, और रखता है आपके मुख पर मुस्कान देखने की इच्छा। और मित्रो, यह अहसास कराया जा सकता है, शुभकामना-संदेशों के जरिए। अपनत्व की डोर में बंधे हृदय से सृजित हुआ शुभकामना संदेश यह दर्शा देता है कि, संदेश पाने वाला, संदेश देने वाले की नज़रों में कितना विशिष्ट है और संदेश देने वाले के मन में, पाने वाले के लिए कौन सी हार्दिक शुभकामनाएं सदा विद्यमान रहती हैं।

शुभकामना संदेशों के निर्माण के यही उद्देश्य हैं कि, ये संदेश औपचारिकता मात्र न होकर साज-सज्जा, प्रस्तुति व भाषा की दृष्टि से विशिष्ट हों, इनके जरिए न केवल सीधे तौर पर व्यक्ति का व्यक्ति से जुड़ाव और परस्पर प्रेम-मित्रता, अपनत्व-आत्मीयता, बंधुत्व-सहानुभूति आदि भावनाओं की अभिव्यक्ति व प्रसार हो वरन् उन्हें प्रसन्नता, उत्साह व जीवन निर्माण की प्रेरणा और मार्गदर्शन भी साथ में प्राप्त हो। इस क्रम में 'सफलता-शुभकामना संदेश', 'जन्मदिवस शुभकामना संदेश', 'विवाह वर्षगांठ शुभकामना संदेश' एवं 'नववर्ष शुभकामना संदेश' की आकर्षक-मनमोहक प्रारंभिक रूपरेखा और नमूना तैयार किया जा चुका है, अब केवल प्रकाशन होना शेष है।

5 सफलता विज्ञान दैनिक सुविचार कलेंडर (Table Calendar) शृंखला - 'सफलता विज्ञान पुस्तक शृंखला' की बहुरंगी आकर्षक पुस्तकों के आधार पर, वर्ष के 365 दिनों के लिए उपयोगी सुविचार युक्त वाक्यों को 'सफलता का संसार सुविचार' शीर्षक से वार्षिक टेबल कलेंडर के रूप में प्रकाशित किया जाना प्रस्तावित है। कलेंडर के हर पृष्ठ पर एक तिथी व एक सुविचार अंकित होगा। भविष्य में शृंखलाबद्ध रूप से नए कलेंडरों के प्रकाशन की भी योजना है।

6 सफलता विज्ञान ऑडियो-वीडियो प्रवचन शृंखला - इसके पश्चात, योजना के अगले चरण के रूप में पुस्तकों के आधार पर ही तद् विषयक रुचिकर, सुनने व देखने योग्य 'ऑडियो-वीडियो प्रवचनों' को तैयार करने की योजना है।

7 सफलता विज्ञान मंच प्रस्तुति (Stage Programme) शृंखला – आमजन में ज्ञान को प्रेषित करने के लिए विषय को और अधिक सरल, आकर्षक ढंग से प्रस्तुत करने की आवश्यकता होती है। इसी के दृष्टिगत उद्घोषक, गायक, वादक, लघु नाटिका, चलचित्र आदि साधनों के सामूहिक प्रयोग के माध्यम से सफलताप्रदायक विषय की प्रभावकारी, मनोरंजक मंच प्रस्तुति धारावाहिक रूप से देने की योजना है।

8 सफलता विज्ञान व्यावहारिक प्रशिक्षण (Practical Training) शृंखला – इसके अन्तर्गत विधिवत कक्षाओं के माध्यम से सफलताजन्य सिद्धांतों को जीवन-व्यवहार में उतारने का अभ्यास कराया जाना प्रस्तावित है।

‘सफलता विज्ञान पुस्तक शृंखला’ की पुस्तकों और उन पर आधारित सुविचार पुस्तिकाओं, सफलता विज्ञान चित्र प्रदर्शनियों (Exhibition), सफलता विज्ञान ऑडियो-वीडियो प्रवचनों, सफलता विज्ञान मंच प्रस्तुतियों (Stage Programme) के आधार पर और महाविद्यालय से मूलभूत अनिवार्य ज्ञान को प्राप्त कर, जिज्ञासु, पुरोहित, व्यायाम शिक्षक आदि सेवाभावी जन खुद, निजी स्तर पर अपने-अपने निवास स्थान से, दर्शन योग महाविद्यालय के बाह्य प्रशिक्षक के रूप में व्यक्तिगत व सामूहिक रूप से इस विषय में देश में ही नहीं अपितु विदेश में प्रशिक्षण कार्य कर विद्वान प्रचारकों की कमी पूरी करने में सहयोग कर सकेंगे, ऐसी आशा है।

9 सफलता विज्ञान सामाजिक मीडिया संदेश सेवा – इसके तहत, भारतीय संस्कृति के प्रति लोगों को जागरूक करने और इसके आधार पर अपने जीवन का निर्माण करने में प्रवृत्त करने वाले विचार और जानकारी, भौगोलिक सीमाओं को लांघते हुए विश्व भर में बांटने, साझा करने और उनसे जुड़े रहने के लिए विभिन्न साइट्स आदि साधनों के माध्यम से, जैसे फेसबुक, लिंकड इन, ट्विटर, स्काइप, ई-मेल, व्हाट्स एप, सर्च इंजन साइट्स आदि का प्रयोग करते हुए सेवाएं प्रदान करना सम्मिलित है। इसमें इन्टरनेट के माध्यम से ऑनलाइन प्रदर्शनी (online exhibition), अध्ययन गोष्ठी, (online seminar), कार्यशाला (online workshops), वीडियो सम्मेलन (online video conferences), सलाह (online consultancy), प्रशिक्षण (online training) आदि भी सम्मिलित हैं।

इस बहु-आयामी प्रकल्प के क्रियान्वयन में 1 करोड़ की राशि का अनुमानित प्रारंभिक व्यय होना है। विद्यालय की अपनी सामर्थ्य व अनुकूलता के अनुरूप ही इस योजना को लागू किया जाना संभव हो सकेगा।

अतः मानव मात्र के कल्याण में रत सभी व्यक्तियों और संस्थाओं से, विनम्र अनुरोध है कि वे परस्पर आगे बढ़ने-बढ़ाने वाली इस कल्याणकारी वैचारिक परियोजना को सफल बनाने हेतु इसमें तन-मन-धन से सम्मिलित होकर सर्व कल्याण में सहयोगी बनकर, पुण्यार्जन का सुअवसर-सौभाग्य प्राप्त करें। इस परियोजना के लिए खोले गए खाते का विवरण इस प्रकार है:- खाते का नाम:- सफलता विज्ञान (SAFALTA VIGYAN), बैंक का नाम:- बैंक आफ बड़ोदा, बचत खाता क्र:- 01790100018163, आई एफ एस सी कोड:- BARB0DHANSU, MICR Code: 383012503

व्यावसायिक संस्थानों व कंपनियों से विशेष अनुरोध

कंपनी कानून में प्रावधान है कि कंपनियों को अपने लाभ का 2 प्रतिशत हिस्सा निगमित सामाजिक उत्तरदायित्व यानी कॉर्पोरेट सोशल रिस्पॉन्सिविलिटी (CSR) पर खर्च करना होगा।

सफलता विज्ञान परियोजना सभी व्यावसायिक कौशलों को बढ़ाने के मूलभूत नियमों का परिज्ञान कराने वाली और समाज उत्थान के लिए प्रेरित करने वाली परियोजना होने से सी एस आर के दायरे में आती है। अतः इस परियोजना को लागू कर आप न केवल अपनी सामाजिक वैधानिक जिम्मेदारी का निर्वहन कर समाज का उपकार करेंगे बल्कि भारतीय संस्कृति की रक्षा व विकास कर पुण्यार्जन भी करेंगे। साथ ही, इस परियोजना के प्रभाव से आमजन के मध्य अपनी संस्था व उत्पाद के प्रति विश्वास, सम्मान और साख को भी बढ़ाकर अपने व्यापार की वृद्धि और प्रतिकूल परिस्थितियों से जूझने में समर्थ बनने में सहयोग भी प्राप्त कर सकेंगे। अतः इसे सीएसआर के तहत लागू करने का अनुरोध है।

इसी से 'संगच्छध्वं' यानी सबके साथ मिलकर आगे बढ़ने के, ईश्वरीय आदेश का पालन होना भी सुनिश्चित हो सकेगा।